

मैथिली लोककला आ संस्कृतिक ग्लोबल चौमासा

# मैलोरंग

अंक 02 मई-अगस्त, 2008 आ
अंक 03 सितम्बर-दिसम्बर, 2008

मूल्य : 20 रुपया

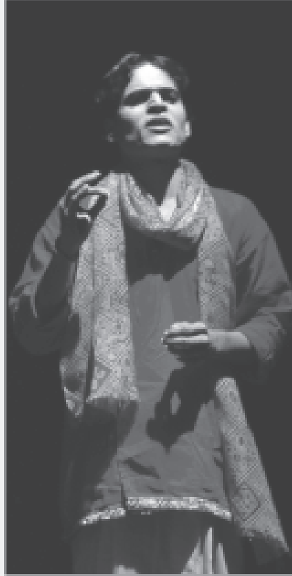






# बधाइ

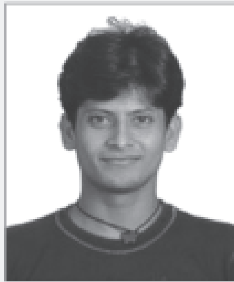
## मैलोरंगक सक्रिय रंगकर्मी केँ राष्ट्रीय नाट्य विद्यालयमे चयनित होमाक लेल सम्पूर्ण मैलोरंग परिवार दिससँ हार्दिक बधाइ।



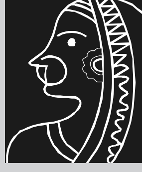
दुर्गेश
कुमार
चौधरी
( विभिन्न रूप )



आ



कुंदन कुमार



एहि संयुक्तांकक मूल्य : बीस रुपया


**संपादकीय कार्यालय**
मैलोरंग
एम. बी.-01 डी, मधुबन रोड,
शकरपुर एक्सटेंशन, दिल्ली-92
फोन : 22446622
**सम्पर्क**
09811774106, 09835096116
**ई-मेल**
mailorang@gmail.com
**वेबसाइट**
www.mailorang.com





**MAILORANG:**
A Journal of Maithili Theatre
& Related Arts

**MAILORANG**
M.B.-01D, Madhuban Road,
Shakarpur Ext., Delhi-92

श्री महेंद्र मलंगिया, अध्यक्ष,
मैथिली लोक रंग द्वारा प्रकाशित
तथा विकास कम्प्यूटर एण्ड प्रिंटर्स,
नवीन शाहदरा, दिल्ली-10032 में मुद्रित।


# मैलोरंग


**मैथिली लोककला आओर सांस्कृतिक ग्लोवल चौमासा।**
**अंक : 2 (मई-अगस्त, 2008) आ**
**अंक : 3 (सितम्बर-दिसम्बर, 2008)**





**प्रकाशक : मैथिली लोक रंग, दिल्ली**



# मै
# लो
# रं
# ग

अंक 2
मई-अगस्त
आ
अंक 3
सितम्बर-दिसम्बर
2008

*आवरण : **काठक लोक, पारिजात हरणक** चित्र*
*चित्र : त्यागराजन (रानावि)*
*लोगो : राजीव कुमार 9891458950*

## अनुक्रम

**पत्र पन्ना :** आयोजकक प्रोत्साहन हेबाक चाही / 5

**मैथिली सांस्कृतिक पत्रकारिताक वर्तमान परिदृश्य / 7**
प्रस्तुति : महाकाल
**सुनील मल्लिक** : जेना दुनू दू ठाम भ' गेल छै / 8
**कमलानंद विभूति** : पत्रकारिताक मुहिम चलब' पड़त / 12
**देवेन्द्र कुमार देवेश** : कोनो प्रकाशक उतरतसे मुश्किल जानि पड़ैछ / 15
**देवशंकर नवीन** : मैथिली मैलोरंगक लेल तस्करीक भाषा नहि अछि / 17
**महेन्द्र मलंगिया** : अपन बौआके अपने दुलार करी / 21
**गौरीनाथ** : साहित्यिक पत्रिकास' सांस्कृतिक पत्रकारिताक अपेक्षा नहि होबाक चाही / 23
**कुमार शैलेन्द्र** : स्मारिकेमे मैथिली सांस्कृतिक पत्रकारिता केंद्रित अछि / 24
**अजीत कुमार 'आजाद'** : तैयो हुनके लोकनिके मंचस्थ करैत रहलहुँ अछि / 26
**सुबोध नाथ झा** : समाजक सूर्य बनू / 28
**संजीव मिश्र** : समीक्षा पढ़बाक आदति होमाक चाही / 30
**काश्यप कमल** : खेमाबाजी सँ बचबाक चाही / 31
**गंगेश गुंजन** : केन्द्रीय सूचनाक केन्द्र बनै **मैलोरंग** / 33

**रंगमंच**
**नित्यानंद गोकुल** : फर्क छैक सरकारी आ गैर सरकारी रंगमंचमे / 36
**ऋषि बशिष्ठ** : गमैया नाटकक पलायन / 39



मै
लो
रं
ग

अंक 2
मई-अगस्त
आ
अंक 3
सितम्बर-दिसम्बर
2008


**वर्णरत्नाकर**

**महेन्द्र मलंगिया** : ज्योतिरीश्वरक सखी वर्ण्णना / 43

**अखियास (संगीत)**

**ओमप्रकाश भारती** : माँगनक ठाठ / 53

**मिथिला पेंटिंग**

**तारानंद वियोगी** : एखनहु प्राकृतिके रंगसँ चित्र
बनबैत छी : गोदावरी देवी / 58

**जनसत्ता स'** : लोककलामे मधुबनी पेंटिंगक स्थान सर्वोपरि / 61

**चिन्तन**

**प्रशांत कुमार मिश्र** : बाढ़ि आ विस्थापन / 63
मैथिली अनुवाद : काश्यप कमल

**ओजहा लेखे गाम बताह**

**प्रेमराज** : मैथिली सेवी के? / 67
: इन्द्रक थरथरी / 69

**प्रशिक्षण संस्थान**

**मैलोरंग डेस्क** : राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय : चयन प्रक्रिया / 72

**समीक्षा**

**कमलानंद विभूति** : **तोरा सन एक तोहीं माधव,** सन छल **सतरूपा** / 75
: विद्यापति मंचनक बहाने किछु वैचारिक बात / 77

**प्रकाश झा** : तीन संख्यामे ओझरायल महोत्सव / 80



**अतुल कुमार ठाकुर** : सार्वभौमिक अछि **काठक लोक** / 83

## रिपोर्ट

**मुकेश झा** : बरहामे **गोरखधंधा** / 86
**यदुवीर भारती** : बाल मेलाक आयोजन / 87
**कमलानंद विभूति** : दलित शौर्यगाथा **सलहेस**क मंचन / 88
**मैलोरंग डेस्क** : मैथिलीए सँ शुरू होइत अछि हिन्दीक इतिहास : नामवर सिंह / 89
**महाकाल** : बाल पुस्तक लोकार्पण / 91
**मुकेश झा** : नाटककार विजय तेंडुलकर नहि रहलाह / 93
**मैलोरंग डेस्क** : रंगकर्मी प्रमीला झा नाट्यवृत्ति, 2008 / 93
: मैथिली काव्य साँझक आयोजन / 94
: मैथिली उत्सव / 95

## चिट्ठीक अंश

**विभा रानी** : तीन भाषाक संगम / 96

## छपैत-छपैत

मैथिली लोक रंग (मैलोरंग)क घोषणा पत्र / 98

**मैलोरंग**

**अंक 2**
**मई-अगस्त**
**आ**
**अंक 3**
**सितम्बर-दिसम्बर**
**2008**



*पत्र पन्ना*

# आयोजकक प्रोत्साहन हेबाक चाही

भाषा आ संस्कृतिक विकासक लेल अति आवश्यक अछि बेसी सँ बेसी आयोजन के भेनाइ। जाहि समाजमे जतेक बेसी आयोजन होइत अछि ओ समाज ओतेक सुगठित आ संस्कृति निष्ठ विकसित अछि। एकर ठीक विपरित मिथिला समाजमे आयोजनक प्रति घोर निराशा देखल जाइछ। जँ आयोजन होइतो अछि त'पूजा पाठ आ ओही सँ संबंधित मेला-ठेला वा कि पारिवारिक संस्कार उत्सव। अहूमे ततेक ने नियम निष्ठा होइत छैक जे लोक ओहीमे ओझरायल रहैत छथि, आपसी विचार विमर्शक लेल फुर्सत ककरा। खैर...

मिथिलामे वा कि मिथिलासँ बाहर मैथिल संस्कृतिक बेसी सँ बेसी आयोजन हुए ताहि लेल प्रयास होबाक चाही। आयोजन बेसी हुए ताहि लेल आयोजक तैयार करबाक चाही। आयोजन सँ बेसी आयोजकके प्रत्साहन देबाक आवश्यक अछि। जाहिसँ आयोजन रुकै नै बढ़ै।

मुदा, देखल गेल अछि जे एक त' किछो तथाकथित स्वनामधन्य व्यक्ति लोकनि कोनो तरहक आयोजन करताह नै, मुदा आयोजनमे हरदम हुनके आमंत्रित कयल जाय ताहि लेल सब तरहक तिकरम करताह। आ जँ कोनोमे संयोगवश छुटि गेलाह त' लगता ओहि आयोजन केँ भाँड़'। पिछला किछु दिन पहिने कतेको ठामसँ एहने खबड़ि आयल छल। आयोजने-आयोजने आमंत्रित तथाकथित विद्वान सभसँ सादर निवेदन होबाक चाही जे कम स' कम सालमे एकटा आयोजन ओहो करथि। तखने सही मायनेमे संस्कृतिक विकास होयत। कोनो आयोजन करबाक लेल आयोजकके कोन-कोन पापड़ बेल' पड़ैत छनि से एकटा आयोजन केलाक बादे स्वयं जानल जा सकैत अछि।

सभ आयोजनक एकटा सीमा होइत छैक। मिथिलामे बहुतरास काबिल व्यक्ति छथि। आयोजक सँ किछो ने



मै
लो
रं
ग
अंक 2
मई-अगस्त
आ
अंक 3
सितम्बर-दिसम्बर
2008

कियो त' छुटबे करथिन। हेबाक त' ई चाही जे जँ कोनो आयोजन सँ संतुष्टि नहि भ' सकै त' जवाबमे किएक ने अपना हिसाबे एकटा आर नीक आयोजन क' दी।

● मिथिलाक साहित्य जगतमे प्रायः लोक उमरक संग काबिल होइत छथि। (अपना सँ बेसी उमरक व्यक्तिक प्रति हमर ई व्यक्तिगत भाव नहि अछि, हम हुनकर हृदय सँ सम्मान करैत छियनि) जे जतेक उमरगर से ततेक काबिल, ततेक नीक साहित्यकार आदि। आ ई सभ साहित्यकार अपनो सँ बेसी उमर बलाकेँ केंद्रमे राखिक' गप्प करताह वा लिखताह। (सेहो जँ कोनो जन्म शताब्दी वा ओहने कोनो समारोहमे आमंत्रिक कयल जेतनि प्रायः तखने) अपना सँ छोट दिस (उमरमे) ओकर लेखन वा कोनो तरहक सामाजिक सरोकारक चर्चे नहि करताह। अपना सँ छोटक प्रायः सभ काजमे हुनका सभकेँ अनुशासनहीनते देखाइत रहैत छनि। ई एकटा दुःखद स्थिति अछि। किछु विद्वान अपवाद छथि। मुदा, अपनासँ कम उमरक कयल गेल कार्य कलाप के सेहो रेखांकित केनाइ आवश्यक अछि।

● मिथिलामे सांस्कृतिक पत्रिकाक वर्तमान स्थित की अछि ताहि पर भेल विमर्श एहि अंकक महत्वपूर्ण उपलब्धि अछि। संगहि आदि पुस्तक **वर्णरत्नाकर** पर महेन्द्र मलंगियाजीक शोध परक शब्दार्थ सेहो नव रूपमे राखल गेल अछि। मिथिलाक संगीत परम्परापर ओमप्रकाश भारती जीक विशेष संस्मरण आ मैथिला पेंटिंगक महत्वपूर्ण हस्ताक्षर गोदावरी देवी संग तारानंद वियोगीजीक बातचीत अछि। कमलानंद विभूति सभबेर जेना अहू अंकक लेल रंग गतिविधि पर लिखलथि अछि। आरो बहुत रास आलेखक संग ई महत्वपूर्ण अंक अहाँक मोनमे कतेको प्रश्नके उचारत आ कतेकोक समाधान करत से आशा अछि।

शुभकामनाक संग

अहाँक प्रिय
**प्रकाश**



# मैथिली सांस्कृतिक पत्रकारिताक वर्तमान परिदृश्य

**प्रस्तुति : महाकाल**

*[प्रथम मैथिली लोकरंग महोत्सव, 06 मे **मैलोरंग**द्वारा दिल्ली स्थिति साहित्य अकादेमीक सभागारमे दिनांक 12 सितम्बर, 06 क' संगोष्ठी आयोजित कयल गेल छल। जकर विषय छलै **मैथिली रंगमंच : स्वरूप और संभावना।** एकरे दोसर कड़ी छल **मैलोरंगक** दोसर मैथिली लोकरंग महोत्सव, 07 मे आयोजित परिचर्चा जाहिमे विषय निर्धारित कयल गेल रहै **मैथिली सांस्कृतिक पत्रकारिताक वर्तमान परिदृश्य।** ई आयोजन एक बेर फेर साहित्य अकादेमी, नई दिल्लीक सभागारमे **भारतीय भाषा संस्थान आ साहित्य अकादेमीक** सहयोगसँ आयोजित भेल, दिनांक 02 सितम्बर, 07 क'। एहि परिचर्चामे उठाओल गेल महत्वपूर्ण तथ्यक प्रस्तुति कयलनि अछि **महाकाल जी**। ई मैथिली सांस्कृतिक एकटा महत्वपूर्ण धरोहर होयत।संपादक ]*

**प्रकाश :** आजुक एहि परिचर्चामे **मैलोरंग** परिवार दिससँ हम एक बेर फेर अहाँ सभहक स्वागत करैत छी। एहि बेर ई **द्वितीय मैथिली लोकरंग महोत्सव** अछि। पछिला बेरक अनुभव ई छल जे किछु व्यक्ति ततेक ने मोटगर पोथी ल' क' पढ़लथिन जे बाँकी आमंत्रित विद्वतजनकेँ अपन विचार रखबाक समये नहि भेटलनि। तेँ एहि बेर परिचर्चाक एकटा विषय आ अपने सभहक विचार।

एहि परिचर्चाक लेल **मैलोरंग** प्रायः मिथिलाक सभ क्षेत्रसँ विशेषज्ञकें आमंत्रण पठेने छल। जाहिमे अधिकांश व्यक्ति एहि सभागारमे बैसल छी से आह्लादकारी अछि। हमर बहुत रास संस्कृतिककर्मी एहन बाढ़ि-पानिक विषम परिस्थितिमे नेपालसँ अयलाह अछि हुनका सभकेँ विशेष रूपे स्वागत। महोत्सवक एहि सत्रमे परिचर्चाक संग दूटा आरो छोट-छोट आयोजन जोड़ल गेल अछि। इहो सूचना अहाँक लेल प्रशन्नताक होयत। **मैलोरंग** अपन प्रकाशनक

मै लो रं ग
अंक 2
मई-अगस्त
आ
अंक 3
सितम्बर-दिसम्बर
2008

कार्य सेहो शुरु कयलक अछि। जकर पहिल पुस्तक अनिलचन्द्र ठाकुर द्वारा लिखित उपन्यास **आब मानि जाउ**, प्रकाशित कयल गेल अछि। एहि पहिल पुस्तकक एहि सत्रमे लोकार्पणक संगहि **मैलोरंग** एहि महोत्सवक संग मैथिली लोककला आओर संस्कृतिक ग्लोबल चौमासा **मैलोरंग**क रूपमे अहाँ सभहक समक्ष अनलक अछिपरिचय अंकक रूपमे। एहि परिचय अंकक लोकार्पण सेहो आजुक एहि सत्रमे राखल गेल अछि।

कार्यक्रमक शुरुआत हम क' रहल छी-मंच पर सुबोध नाथ झाक आमंत्रणसँ। एहि आयोजनक अध्यक्षताक लेल हम सुबोध जीकेँ आग्रह करबनि...। आब हमर आग्रह अछि जनकपुरसँ आयल सुनील मल्लिक जीसँ जे ओ मंच पर आबथि...। आब आग्रह अछि वरिष्ठ साहित्यकार गंगेश गुंजन जीसँ जे मंचपर आसन ग्रहण करथि। आब मंचासीन सुनिल मल्लिक जीसँ आग्रह जे हमर सभक पत्रिकाक परिचय अंक **मैलोरंग**क विमोचन करथि। (विमोचनक बाद)

# जेना दुनू दू ठाम भ' गेल छै

## सुनील मल्लिक

परम आदरणीय मंचासीन मैथिलीक महत्वपूर्ण व्यक्तित्वलोकनि आ एहि सभामे उपस्थित अग्रज आ अहाँसभ भाइ-बहीन लोकनि! सभक बंदन मैथिलीमे नव पत्र-पत्रिका देखिक' लगैत अछि जे चलू एकटा आर शुरुआत भेल। मुदा, कंटीन्यूटीक अभाव रहैछ। गौरीनाथ जी एहिपर किछु प्रयास कयलनि अछि **अंतिका**क माध्यमे। एक-सँ-एक विद्वान साहित्यकार छथि मैथिलीमे। जखन ओ लोकनि हिन्दीमे अबै छथि त' सिरमौर्य बनि जाइत छथि। सभ गोटेकेँ बुझले अछि धूमकेतु जी एकटा सिरमौर्य बनि ठाढ़ भ' गेलथिन। मैथिलीमे जावतधरि ओ रहथि तावतधरि हेरायल भुतियायल सन छलाह। एकर कारण यैह अछि जे अहाँ लग अपन मिडिया नहि अछि। जँ मिडिया रहैत त' कतहुसँ हमर भाषा कमजोर नहि रहैत। साहित्य, संगीत, लोकसंगीत कोनोटा स्तर पर नहि। एहि दिशामे **मैलोरंग** दिल्लीमे प्रयास क' रहल अछि। हम ई कहि सकैत छी जे **मैलोरंग** बहुत थोर समयमे बहुत सक्रियतासँ एतए काज क' रहल अछि। एहि सक्रियतामे एहिठामक दिल्लीवासी मैथिलक बहुत महत्वपूर्ण योगदान छनि। जे कियो मैथिल कतहु दूर बैसल छथि सेहो मैथिलीमे दिल्लीमे काज भ' रहल छै ताहि दृष्टिकोणे **मैलोरंग**सँ जुड़लेटा छथि। आइ एहि पत्रिकाक विमोचन करबाक सुअवसर

हमरा भेटल। हम आभारी छी। बीच-बीचमे सेहो **मैलोरंग**द्वारा प्रकाशित मुखपत्र, ब्रोश्यर आदि सभ देखैत रहैत छी। आ कंटीन्यूटीक जे अभाव छलै तकरा **मैलोरंग** दूर क' रहल अछि। **मैलोरंग** एहि राजधानी दिल्लीमे जे डिगडिगिया पीट रहल अछि-इट्स नॉट ए जोक। हिनका सभक इ डिगडिगिया बनल रहै, ई गरमाहटि, उर्जा बनल रहै तकरालेल अपनेलोकनिक मार्गदर्शन बहुत महत्वपूर्ण हेतैक।

चूँकि हम नेपालसँ छी तें हम नेपालक पत्रकारिता संबंधमे किछु कह' चाहब। नेपालमे किछु महत्वपूर्ण नाम अछि, जेना धीरेन्द्र प्रेमर्षि, महेन्द्र मलंगिया आदि। हिनका सभक प्रयास नेपालमे अति महत्वपूर्ण छनि। प्रिंट मिडियामे नेपालमे बहुत रास काज नहि भ' पओलक अछि। मुदा, इलेक्ट्रॉनिक मिडियामे नेपाल आगू अछि। एखन एक मात्र जनकपुरमे सात-सात टा एफ. एम. खूजि गेल छै। आ एकर सभहक मूल स्वर मैथिली छैक। मुदा, ओहि ठाम अभाव छै त' लेखनक, नीक बजनाहरक, सही संप्रेषित करै बलाक। देखा-देखी त' सात-सातटा खूजि गेलै आब एकर Challange छै सातो के नीक स' चलेबाक। एकटा खुशीक बात छै जे नेपालसँ सटल क्षेत्र दरभंगा, मधुबनीसँ बेसी विज्ञापन भेटैत छै, जाहि कारण ओ सभ बाँचि आ बाजि रहल छै। विज्ञापन दाता अरबैधक' मैथिलीमे विज्ञापन बजेबाक अनुरोध करैत अछि। ई सभ नीक संकेत अछि। रेडियो पर बजने एतेक त' होइत छै जे अनपढ़ सेहो सूनि आ बुझि लतै छैक।

आब जरूरी छैक ओत' अहाँ सभ एहन व्यक्तिक सहयोगके। अहाँ सभ आब लेख / रचना आदि दियौ जकरा रेडियो माध्यमसँ बजाओल जा सकै। एहन कोऑर्डिनेशन होइ तकर प्रयोजन छैक। एहि प्रकारक सामर्थ हमरा सभकेँ माँ मैथिली दैथि जे हम सभ अहाँ लोकनिकेँ ओत' बजाक' कार्यक्रमक' सकी।

मैथिली पत्रकारिताके स्थिति नेपालमे बढ़िया नहि छै। किछु पत्रिका जेना **गाम-घर** निकलै छै। राज विराजस' एकटा **मिथिला सप्ताहिक** निकलैया आ ओहो साहित्यिक पत्रिका नहि भ'क' न्यूज प्रधान अछि। ओइमे औपचारिक समाचार रहै छै अनौपचारिक समाचार बेसी नै रहै छै। कोनो सभा-सोसाइटी भेल त' ओकर खबरि छापि देलक। तकर बाद **सीमांचल** निकलैया जनकपुरे स' ओहो साप्ताहिके अछि। त' मैथिलीमे एतेक रुझान भेलै त' FM के कारण स'। जखन लोक देखलकै जे एतेक संभावना छै त' सोचलक जे प्रिंट मिडिया सेहो निकालल जाय। एकर प्रयास चलि रहल छै आ एकटा बात सेहो कहै छी जे टेलीवीजन सेहो बहुत जल्दी आबि जायत मैथिलीमे, **जनकपुर टेलीवीजन**। लोकतान्त्रिक अभ्यासके चरणमे जे परिवर्तन नेपालमे भेलैया ओइ चरणमे ई भेलै जे एकटा Federal State के कल्पना कयल जा रहल छै। आ ओइमे मिथिला राज्य बनतै इहो खुशी हमरा सबके अछि। जीवनक अहि मोड़ पर बहुत रास इतिहास हम सब देखलौंए आ भोगलौंए। बहुत

रास परिवर्तननिरंकुश शासनसँ ल' क' लोकतान्त्रिक शासनके परिवर्तन तक हम सब देखलौएं। आ ई सब परिवर्तन अहिना नहि भेलैए। ओइमे मिथिलाकें, मिथिला क्षेत्रक लगानी बहुत अधिक छै। तैं ल' क' आब छै प्रयोजन जे प्रिंट मिडियामे दैनिक पत्रिका आबय, टेलीविजन आबय ओइ क्षेत्रमे हम सब काजक' रहल छी।

ई सब गड़बड़ा कत' गेल छै त' साहित्यिक स्तर पर। एत' जेना देखैत छी, एतेक प्रतिबद्ध साहित्यकार सब ओत' नहि छथि। एत' जे किताब सब देखैत छी, पढ़ैत छी अइ प्रकारक स्थिति देखबामे ओत नहि आबै अछि। ओत' मुँहस' बेसी बजै छै, डाकुमेन्टसन के ओत' अभाव छै। बुझाइत छै जेना दुनू दू ठाम भ' गेल छै। हमरा लगैए जे इ सबटा ओई ठाम रहितै। कखनो गंगेश गुंजन के त' कखनो देवशंकर नवीन के हम सब बजा सकितौं त' कतेक नीक रहितै।

आब अंतमे हम मैथिली संगीतके बारेमे सेहो बात कर' चाहब, जे हम ओत' तीस वर्षस' काजक' रहल छी आ मौलिक संगीतके रचना करैत छी। हम पैरोडी संगीत नहि करैत छी। हम ओई मैथिली धुनपर काज करैत छी जे मूल अछि सम्पूर्ण आ समग्र अछि। एकदम खांटी मैथिलीके आभास देत। हम बहुत बेसी जनैत छी एहन बात नहि अछि मुदा जखन हमरा अंदरस' Feeling अबैया त' हम रचना करैत छी। एखन धरि हजारो स' बेसी धुन बना चुकल छी आ हमर दर्जनस' बेसी कैसेट आबि चुकल अछि। मुदा, हम जे देखैत छी बिहारमे हिन्दीके बेसी प्रभाव छै मैथिली संगीत पर। हमरा ध्यान अबैया एक बेर हम बेगूसरायमे प्रोग्राम करैत रही आई स' 26 वर्ष पहिने, देवशंकर नवीन जी सेहो छलथि। हम गीत गबैत रही, **कुर्ती सलवार वाली नयना कटार वाली चलबैछे किए तलवार गै पतझड़ मे आयल बहारगे'** ...ओत' देवशंकर नवीनजी हमरा कहने रहथि ''बौआ बड्ड नीक गीत गबै छी अहाँ, मुदा पैरोडी नै गाउ।'' आ तखन स' हम पैरोडी नै गेलहुँ तेँ हम नवीनजी के धन्यवाद दै छियैन्ह। धिरेन्द्र प्रेमर्षि सेहो यैह कहै छथिन्ह। नेपालमे एकटा ई धर्म चललै जे मैथिलीमे मौलिक रचना होमाक चाही।

आरो अंतमे यैह कहैत हम समाप्त करैत छी आ वापस आबै छी **मैलोरंग** पर, जे प्रत्येक वर्ष नियत समय पर **मैलोरंग** अपन काजके नवीन रूपमे नजरि आबैत अछि आ उत्तरोत्तर बढ़ि रहल अछि। **प्रकाश** हमर छोट भाय छथि, बहुत नीक काज क' रहल छथि एतेक दूरमे हमसब रहैत छी तैयो सब बेर हमरा लोकनिकें बजा लैत छथि आ हमसब अबैत छी। हम यैह आशिष दैत छियैन जे अहिना काज करैत रहथि आ मैथिलीके परचम आओर फहराबथि।

**प्रकाश :** धन्यवाद सुनील भाई। पत्रिकाके मादे हम किछु कहि दी। ई बहुत नीक बात छै जे हमसब मैथिलीमे काज करी मैथिलीके लेल काज करी। दिल्लीमे जे हम सब युवा रंगकर्मी आओर एत' जे मैथिल साहित्यकार सब छथि आओर

लोकसब जे मैथिलीमे काजक' रहल छथि हमरा लगैत अछि जे हुनका बहुत तरहक समस्या छनि आ सबस' पैध समस्या छनि भाषाई। ई निश्चित छै मिथिलामे कलकत्ता, दिल्ली वा मुम्बई जकाँ शहर नहि अछि। एकटा बंगला अछि त' ओकरा लग कलकत्ता एहन शहर छै। मराठीके लेल मुम्बई एहन जगह छै जत' ओकरा अपना भाषामे काज करबाक हेतु मौका छै 'एड' भेटै छै। अगर एकटा बंगाली चाहि लेत जे ओ जीवन पर्यन्त बंगालस' बाहर नहि निकलत त' ओकर ई बात रहि जेतै, मुदा एकटा मैथिल छात्रके अपन कैरियर बनबै के छै त' ओकरा कलकत्ता, दिल्ली देखैए पड़तै। हमरा सभकेँ एहि ठाम आन भाषास' जुड़' पड़त। हमरा लगैए हम सभ हिन्दीके बादक' क' नहि चलि सकैत छी। अपन बात, अपन Documentation बेसी स बेसी लोक लग जँ हम पहुँचाब' चाहैत छी त' हमरा मैथिली आ हिन्दी के जोड़ि क' चल' पड़त। ई हमर मजबूरी बुझी तैं वा राष्ट्रभाषा अछि तैं। सुनील भाई एहन व्यक्ति जे अपन पूरा जिनगी मैथिलीके द' देलखिन मुदा आई हुनकर पहिचान कएक हिन्दी व अन्य भाषा-भाषी करैए? एकर बड्ड पैघ कारण छै जे आई तक सुनील भाईकेँ मैथिलीकेँ अलावे कोनो आन भाषामे प्रोजेक्टे ने कयल गेलनि।

पैंतालिस दिन तक हमर कलाकार पूर्वाभ्यास करै छथि मुदा समस्त मेहनतके बाद ओ कलाकार कतौ पाछू रहि जाइत छथि आ मंच पर आसीन होइ छथि केयो आर लोक। साहित्यकार लोकनि एक कलम नै लिखैत छथिन ओकरा विषयमे। ई आश्चर्यजनक सफलता अछि मैथिलीकें लेल जे 2006 मे 78टा नाटक मंचित भेल। कोनो भाषामे 78टा नाटक मंचित होइछै मुदा प्रोजेक्सन कत' छै? कतौ नइ! एतय सब साहित्यकार आ पत्रकारितास' जुड़ल लोक सब बैसल छी, केओ कहू जे कोन पत्रिका कोनो नाटक पर फोकस कय क' लिखलक अछि। बंगाली या मराठीके सौंसे चर्च होई छै मुदा मैथिली के? प्रोजेक्सने नै छै तें हमरा सबके ओकरा पाछा ठाढ़ होम' पड़ैत अछि। हम ओकर नाटक नइ देखने रहै छियै मुदा ओकरा बारेमे ततेक पढ़ि लै छियै जे होइए कोन अद्वितीय चीज क' देलकै मुदा जखन एक वर्षक बाद देखै छियै त' होइए धू ई की केलकै? तेँ हम सब ई सोचलौएं जे मैथिली लोक कला, साहित्य, संस्कृति सब पर फोकस हिन्दीमे करब। अहाँ लोकनि अपन लेख जै भाषामे दी, ओकरा अनुवाद कय क' हम हिन्दीमे छापब। किए त' मैथिलीमे बहुत नीक-नीक पत्रिका छै जे ओइ लोकक लेखकें स्थान दै छथिन मुदा हिन्दीमे ई काज नइ भ' पबै छै।

अहाँ जत' बैसल छी ओकर नीचामे साहित्य अकादेमीके बड्ड पैध Library छै ओत' जाउ, मैथिली भाषाक कएक टा किताब भेटत? अगर भेटबो करत त' नाटक नहि भेटत। उपलब्धे नै छै तें किएक ने अपन प्रोजेक्सन हमसब हिन्दीमे पत्रिका छापिक' अपने करी।

आब हम आमंत्रित करबनि दरभंगास' आयल कमलानंद विभूति जी केँ। विभूति भैयासँ लगातार हमरा सभके सहयोग भेटैत रहल अछि। संगहि विभूति भैया नाटक पर नीक लिख रहलाह अछि। ●

# पत्रकारिताक मुहिम चलब' पड़त

**कमलानंद विभूति**

सबस' पहिने त' हम **मैलोरंग** के Salute करै छी, जे विगत तीन साल स' अपना पैर पर ठाढ भ' क' बहुत नीक कोशिश कैलथि अछि। हम धन्यवाद दैत छियैन जे हमरा एहन साधारण लोकके दरिभंगास' बजौलनि आ प्रणाम करैत छियैन वरिष्ठ मंचस्थ आ मंच सम्मुख दुनू लोकनि कें।

जे ल' क' हम आयल छलहुँ बाज' लेल से त' आधा बात हमर पूरा भ' गेल **मैलोरंग** पत्रिका स'। त' दू बेर त' हम आयब नै तें किछु बात हम कहबजे ई सांस्कृतिक पत्रिका, जे चिन्ता छै **मैलोरंग** के, प्रकाश केई ज्वलंत अछि। मात्र मैथिलीएटा के नहि छै ई सबहक चिन्ता छै। बहुत समृद्ध हिन्दी पत्रकारितामे सेहो बहुत घनघोर रूपस' सांस्कृतिक समस्या हम देखै छियै। गौरीनाथ **हंस**मे छलथि त' एक-दू टा प्रकाश वत्स के नाम स' रंगकर्म के समीक्षा हम पढ़लौं मुदा राजेन्द्र जीके त' आरो बहुत समस्या छनि। **कथादेश** एकटा उम्मीद जगबैए जे एकटा कॉलम ओइमे रंगकर्म पर हृषिकेश सुलभ जी के आबै छनि। जे रंगकर्मके सबस' पैध पत्रिकाजै स' प्रकाश जुड़ल छथि। एतेक नीक पत्रिका, एतेक सुन्दर गेटअप जै पर सौंसे देशके अधिकार छै लेकिन ओहो पत्रिका राष्ट्रीय रंगमंचके नहि प्रस्तुत क' पबैत अछि। आई तुलनामे **नटरंग** के हम बहुत बेसी महत्त्वपूर्ण मानै छियै, जे बहुत छोटा पत्रिका अछि आ सीमित साधनमे निकलै अछि ओकर प्रयास रंगकर्मके राष्ट्रीय छवि प्रस्तुत करै अछि। एखन टटका अंकमे मधुबनीमे एकटा नाट्य समारोह भेल रहै तकर विस्तृत समीक्षा अछि।

हमर जे चिन्ता अछि तकर विस्तार करबाक चाही हम नाटक स' जुड़ल छी तैं' नाटक कें बात करै छी। कि सांस्कृतिकमे मात्र नाटकेटा, खेल नहि आओत? जतेक मैथिली पत्रिका निकलैए ते मे स', अधिकांशमे मैथिली जातीय चिन्ता, मैथिली स्मिता के चिन्ता रहत। ओई मे ई खबरि रहत जे कोनो खिलाड़ी कोनो अभिनेत्रीके चुम्मा लेलक, अमेरिकाके सिनेटमे वेद मंत्रके द्वारा किछु कयल गेलै मुदा ई खबरि कोनो माने नहि छै जे झंझारपुर कें तिलिया देवी वा अमरिका देवी; हिनका नोवेल प्राइज लेल

भारत स' Nouninate कयल गेलै। मैथिली पत्रकारिताके चिन्ता नै छै जे मनीष झाक **मातृभूमि** कन्या भ्रूण हत्या पर पहिल फिल्म बनौलनि, जे भले विशेष परिपक्व नै रहै, उम्र कम छनि, मुदा दोसर फिल्म **अनवर** बनौलनितै पर कोनो प्रतिक्रिया नै छै। यैइ लड़का अगर बंगाली रहिते त' बंगाली देख-देखक, 'हिट क' दैत' मुदा मैथिलके ओकर कोनो चिन्ता नहि छनि। झारखंड एहन छोट राज्य धोनी पैदाक' देलक की हमरा मिथिलांचलमे खिलाड़ी नहि छथि। एत' जेंकी बच्चा बैट-बॉल निकाललक आकि माय-बाप ओकरा बिगड़' लागल। नाटक खेललक आकि गेल घर स'। ई बात समाजमे के फैलाओतत' पत्रकारिता ई काज क' सकैत अछि। हमसब अपना घरमे विद्यापति आ कोन-कोन आचार्य मुनिके गीत गायब मुदा एखन जे मिथिलांचलमे प्रतिभा अछि तै स'; हमसब परिचित नहि छी। गाजी खाँ बहेड़ी प्रखण्ड; छ' वर्षक अवस्थामे विकलांगकिछु फैक्ट्स हम देव; चेन्नई राष्ट्रीय तलवारबाजी प्रतियोगिता भेलै तै मे कांस्य पदक हुनका भेटलैंह। बैंगलोरमे एथेलेटिक्समे हुनका स्वर्णपदक भेटलनि। हुनका तुर्की मुक्केबाजी प्रतियोगितामे कांस्य भेटलनि मुदा ई चिन्ता नै छै मैथिली पत्रकारिताके। मिथिला मे दूटा विश्वविद्यालय कामेश्वरसिंह संस्कृत विश्वविद्यालय आ ललित नारायण विश्वविद्यालय। अइ दुनू मे नाटकके स्नातकोत्तरके पढ़ाई होइ छल मुदा आठ-वर्ष भ' गेल बन्न क' देल गेल। मुदा कोनो मैथिली पत्रकारिताके एकर चिन्ता नहि। NCERT के सातवाँ कक्षामे अँग्रेजी आ हिन्दी दुनू किताबमे मधुबनी पेंटिंग भरल अछि। पूरा देशके बच्चा मधुबनी पेंटिंग देख रहल अछि मुदा अइ पर फोकस मैथिली पत्रकारिताके नहि अछि।

हमर ई कहब अछि जे मैथिली भाषाटा नहि, नाटकटा नहि सम्पूर्ण मिथिलांचल आ मैथिल अस्मिता के पड़ताल होमाक चाही। बेगुसरायके संतोष राना भारत रंग महोत्सवमे नाटक कयलनि। मैथिलीमे काज केनहार बहुतो लोक, संस्था अछि एकरा फोकस नहि कयल गेल। **मैलोरंग** पत्रिकास' हमरा उम्मीद अछि जे ओ केन्द्रित राखत नाटक मुदा सम्पूर्ण मिथिलांचल झांकत; ई हमरा आस अछि आ आग्रह। जहाँ तक नाटकक समीक्षा नहि आबैके बात छै त' सब प्रकाश नहि देख पबै हेता। दरभंगा स' एकटा पत्रिका छपैए **रचना** विश्वनाथ झा सम्पादित। अहाँ के आश्चर्य होयत बेगुसरायमे जे अंतरराष्ट्रीय मैथिली नाट्य समारोह भेल छल ओकर विस्तृत रिपोर्ट छपल छल। मधुबनीमे जे नाट्य समारोह भेल छल तकर रिपोर्ट छल। मात्र मैथिली पत्रकारिताके दोष देला स' काज नहि चलत। हुनका लग साधन नहि छनि, संवाददाता नहि छनि, तखन हमसब जे विधि करैत छी तकर (इन्ट्रप्ट-**मुकेश** : दिल्लीमे जे कार्यक्रम होइ छै तै लेल त' दिल्ली सँ प्रकाशित होइ वल्प पत्रिकाक लेल संवाददाताके प्रयोजन नहि छनि)

हमहूँ सैह कहैत छी जे छपबैक चाही मुदा से नहि भ’ पबै छै। गौरीनाथजी केँ पेज कम रहैत छैन्ह लेकिन हमरा नीक लागल छल जे ओ नाटकपर एकटा स्पेशल पेज शुरू केने रहथि, भले ही ओ नाटक छपै छलाह। आ **अंतिका** बहुत रास उम्मीद जगबैत छल आ एखनहुँ जगा रहल अछि। पन्द्रह-बीस दिनक बाद ओ दरभंगाके बुकस्टॉल पर नहि भेटत लेकिन हिन्दी पत्रकारिता तरफ गेलाह अछि आ बहुत नीक पत्रिका निकालथि अछि **वयाँ** लेकिन हुनकासँ आग्रहजे **अंतिका**के अलख जे ओ जगौलथिए ओकरा बरकरार रखथि। भूमि समस्या पर हिनकर बहुत नीक अंक आयल छलनि। एखनो टटका अंक बहुत नीक आयलनि अछि। लेकिन नाट्य गतिविधिके सेहो किछु स्पेस दैत रहथि। कम स कम पूरा देशके लोक बुझत।

अंतमे हम एतबे कहब पत्रिकाके संग-संग आन्दोलनकेँ आवश्यकता अछि। किए आई मिथिलांचलमे एकोटा स्पोर्ट्स स्कूल नहि अछि आ आई जखन थोक टीचरके आवश्यकता पड़लै अछि त’ सब जेना-तेना डिग्री आ सर्टिफिकेटक इन्तजाममे लागि गेल। ओहि लेल सड़क पर उतर’ पड़त, एकटा मुहीम चलाब’ पड़त। एहिठाम सरकारी महत्व प्राप्त करबाक लेल आन्दोलन चलैत अछि, मैथिलीके अष्टम अनुसूचीमे स्थान भेटल, तै के लेल आन्दोलन चलल, मिथिला राज्य बनय, तै लेल आन्दोलन चलल मुदा एहि लेल सेहो जमीनी कार्य हेबाक चाही। आ ओ काज मैथिली पत्रकारिता क’ सकैए, **मैलोरंग** क’ सकैए, **अंतिका** क’ सकैए।

हमर बहुत-बहुत शुभकामना अछि। हमरा जे थोड़-बहुत बुद्धि अछि, जे हम थोड़ बहुत लिखैत छी **मैलोरंग** के हम सहायता करबैन्ह। मिथिलांचलमे जे हमर जान-पहिचानक लोक छथि तिनका स’ हम आग्रह करबैन, जे ओ **मैलोरंग** के सामग्री दैथ आ ई एकटा सम्पूर्ण आ समग्र सांस्कृतिक पत्रिका बनत तकर शुभकामना दैत फेर सबके प्रणाम करैत छी, धन्यवाद।

**प्रकाश :** धन्यवाद विभूति भैया। अपने जे पत्रिका सभहक नाम कहलहुँ हम प्रायः एहि सबके देखैत छी **रचना** पत्रिकाक ओहि अंक स’ सेहो गुजरल छी आ प्रायः जाहि समीक्षा सबके विभूति भैया चर्चा केलथि अछि ओहो सभ हम देखलौं अछि। **नटरंग**मे जे समीक्षा एलैक अछि ओहो हम पढ़ने छी। हमर चिन्ता ई अछि जे सम्पादकके एहि बातक ध्यान किए नहि होइत छनि, जे ओ स्पेस संस्कृतिकेँ देथिन्ह। एखन धरि जतेक समीक्षा प्रायः छपल अछि ओ प्रायः संस्थाकेँ कोनो व्यक्तिक प्रयास अछि। अहिसँ पहिने हम **रचना**के एकटा अंक देखने रही जाहि मे रामानंद युवा क्लब, जनकपुरक महोत्सवक पैध रिपोर्ट छपल रहैक आ स्वयं जे व्यक्ति ओइ रिपोर्टके लिखने छलथि हमरा नहि लगैत अछि जे ओ तीनटा स’ बेसी नाटक देखने हेतथि। कल्पना झा नाम स’ ओ रिपोर्ट छपल

छलैक। ओइ महोत्सवमे हमहूँ सब पार्टीसिपेट कयने रही **यात्री**क नामस'। जखन अई प्रकारे लिखल जेतैक तहन ओ कोनो समीक्षा कोना भेलै। जखन कोनो व्यक्ति एकटा समीक्षा लिखैत छथि त' हुनका पूरा फेस्टीवल देखलाक बादे अपन राय देबाक चाही। एकटा रिपोर्ट **अंतिका**मे कुणाल जीकेँ छपल छल जाहि महोत्सव के ओ दूरो स' नइ देखने छलखिन-कलकत्ता नाट्य प्रतियोगिताकेँ। एतय गलती सम्पादकके नहि छैन, ओ एतेक विश्वास त' एकटा नाटक बला पर आओर प्रतिष्ठित व्यक्ति पर त' करबे करथिन, खैर...।

**मैलोरंग** जे प्रकाशन शुरू केलक अछि से पत्रिकाक अलावे अन्य पुस्तक सबहक सेहो प्रकाशन करत जकर शुरुआत अनिलचन्द्र ठाकुर जीकेँ उपन्यास **आब मानि जाउ** स' कयल। जकर लोकार्पण गंगेश गुंजन जी करतथि। हम आग्रह करबैन श्रीमान स' जे ओ एकर लोकार्पण करथि।

[पुस्तक : लोकार्पण]

किताबक परिचयक लेल हम आग्रह करबनि देवेन्द्र कुमार देवेश जीसँ, देवेश भाइ किताब के लगातार देखलाह अछि आ एकरा बेहतर ढंग स' वैह राखि सके छथि। ●

# कोनो प्रकाशक उतरतसे मुश्किल जानि पड़ैछ

**देवेन्द्र कुमार देवेश**

अहाँ सभकेँ नमस्कार! एहि पुस्तकक लेखक अनिलचंद्र ठाकुर हिन्दी मैथिली, अँग्रेजी, अंगिकामे लिखैत छथि आ मैथिलीकेँ अलावे हुनकर पुस्तक एहि सब भाषामे आबि चुकल अछि। एखन जे हम अपन घर कटिहार गेल रही त' ओतय हिनकास' भेंट भेल आ ओ पिछला तीन वर्ष स' ब्रेन ट्यूमरस' ग्रस्त छथि। डॉक्टर सब जवाब द' देने छनि तेँ आब हिनकर उपचारो केनाई बन्न क' देने अछि। एहन स्थितिमे हमर भेंट भेल आ रचनात्मक गतिविधि सबपर चर्चा सेहो भेल। केदार कानन जी एकटा मैथिलीमे पत्रिका छपै छथि **भारती मंडन** जाहि मे दू किस्त मे ई उपन्यास छपल छल। ओ हमरा देखेलनि आ अपन इच्छा जतौलनि, जे हुनकर ई उपन्यास आ एकटा कहानी संग्रह जे हिन्दीमे छनि पुस्तकक रूप पाबि सकतैन्ह त' हुनका नीक लगतैन्ह। हम हुनका आश्वासन देलियैन्ह। हम जखन दिल्ली अयलहुँ त' प्रकाश जी आ केदार कानन जी स' गप्प कयलहुँ। प्रकाश जी अइ उपन्यासके पहिनो पढ़ने रहथि। ओ तैयार भ' गेलाह आ प्रकाशित भ' सकल।

लेकिन समस्या बहुत अछि

मैथिलीके किताब प्रकाशन जगतमे जतय हम एखन काज कय रहल छी वा जतय एखन अहाँ लोकनि बैसल छी। पिछला आठ वर्ष स' हम देखैत छी जे मैथिलीके पुस्तक प्रकाशित होयत अछि। कोनो समयमे अकादेमी ग्यारह सौ पुस्तकक प्रति छापय छल मैथिलीमे। आब स्थिति ई अछि जे मैथिलीके पुस्तक आई तीन सौ प्रति छपैत अछि। ओ तीन सौ प्रति केँ सेहो बिक्री एहन नहि छैक जे उत्साहवर्धक स्थिति लगै एहनामे मैथिली प्रकाशनमे कियो प्रकाशक उतरत ई मुश्किल जानि पड़ै अछि। कोन प्रकारे प्रकाशनकेँ काज भ' सकै एकरो विषयमे हमरा लोकनि के सोचबाक चाही।

खैर! ई उपन्यास अछि ठेठ मिथिलाकेँ त' नहि मुदा मिथिलाके जे पार्श्व प्रदेश अछि कोसी अंचल कटिहार, पूर्णिया, सहरसा, मधेपुरा एहन एकटा नाम आ गामक चरित्र के ल' क', ख़ासतौर पर अनपढ़ लड़कीकेँ कहानी अछि संगे केएक टा आओर कहानी जुड़ि जाइत अछि राजनीतिक, सामाजिक आओर कथाके आगा बढ़बैत अछि। कथाके केन्द्रमे जे युवती अछि ओ बदलैति सामाजिक परिवेशमे अपना आपके पूर्ण रूपे कोना बदलति अछि, सामाजिक बदलाव आ दृढ़ताके प्रदर्शित करैत अछि। अई उपन्यास केँ जँ कियो शुरू करताह त' एक बैसकमे ख़त्म करताह से एकर कथाक गठन अछि मोहै वाला। समकालीन जे घटना सब अछि अपन समाज मे, तकर बहुत बढ़िया रूपे अई मे समावेश कयल गेल अछि। हम एकटा घटना बतायब जे मिथिलांचलमे आ ओकर अड़ोस-पड़ोसमे पकड़ुआ विवाह के प्रचलन बहुत छल मुदा एहन विषय पर मैथिली, हिन्दी वा कोनो अन्य भाषामे कोनो रचना देखैमे नहि भेटल, बहुत कम अछि। हमरा मोन अछि एकटा कहानी हम पढ़ने रही चन्द्रकिशोर जयसवालकेँ हिन्दीमे मुदा कोनो उपन्यासमे एहि विषयक समावेश कयल गेल त' ओ इहे छी।

लेखक पुस्तकक विषय पर कहलथि अछि -"ई कथा अछि एकटा गाम केर, असंख्य परिवार केँ, भारत भूः केँ कुलीनताक अद्यःपतन केर संस्कारक विकृत चेहराक उद्घाटन मात्र ई कथा थिक। मुदा थिक ई चेतावनी भविष्यक पीढ़ी के बचयवाक हेतु।'' त' एहि प्रकारक उपन्यास अपने लोकनि पढ़ी। **मैलोरंग** अपना हाथमे एकटा बड्ड पैध काज लेलक अछि। हम सब एकरा नहि जाए दियै, प्रकाशन आगुओ चलय तकर प्रयास होमाक चाही आ से पाठके स' संभव अछि। यदि पाठक किताब, पत्रिका, खरीदथिन्ह, ओकर प्रचार-प्रसारमे अन्य रूपे सहयोग देथिन्ह, तखने ई सम्भव अछि। आओर एकटा आग्रह हमर विशेष रूप स' अहि उपन्यासकेँ ल' क', अहाँ लोकनि यथाशीघ्र एकरा पढ़ि क' यदि एकटा क' प्रतिक्रिया लेखक केँ लिखि देबैन्ह त' शायद ओ प्रतिक्रिया हुनका लेल संजीवनी केँ काज करतनि। छः मास पहिने डॉक्टरक जवाब देलाक बादो एखन धरि ओ पोथीक

इन्तजारमे जिबैत छथि। हुनक जीजीविषा हुनका एखन धरि बचौने अछि शायद अहाँ लोकनिक प्रतिक्रिया हुनका जिनगीके कोनो संबल द' सकैन्ह। धन्यवाद!

**प्रकाश :** धन्यवाद देवेश भाई। आब हम आग्रह करबैन्ह अपन अग्रज देवशंकर नवीन जी सँ, जे अइ किताबक मादे ओ आओर किछु कहथिन। ●

## मैथिली मैलोरंगक लेल तस्करीक भाषा नहि अछि

**देवशंकर नवीन**

एखन कलानंद विभूति अपन चिन्ताक क्रममे बहुत बात कहलथि। प्रकाशके चिन्ता वास्तविक छन्हि। हम ई कह' चाहब जे मैथिलीमे जतेक अभाव हमरा-अहाँकेँ वा किनको लगैए त' एहि आभावक संदर्भमे सबस' पैध घटक जे लागि रहल अछि ओ मिथिलांचलक नव पीढ़ीक उत्पात। मोन पड़ैये एकटा सहरसा जिलाक गामओई मे बच्चा सबके संदर्भमे कहब छै जे बच्चा जे देखलक पाहुन आबि रहल छै, त' बाप पित्ती के कहलक ''काका पाहुन आबै छः पानि आनिक' राखि लय नहि त' ओइ कालमे बेइज्जत हेब'।'' जे पीढ़ी 80-86 क बाद मैथिलीमे प्रवेश केलक अछि तकरा ततेक बेसी हलतलबी छैक आ प्रतिष्ठा पाबैक लेल ततेक उताहुल अछि जे सबटा दुष्कर्म औ तै समयमे सीख लेलेक अछि जाहि समयमे हिन्दी साहित्यके दिवंगत आचार्य सुरेन्द्र झा 'सुमन' आकि चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' बहुत बादमे आबि क'सीख सकला। हम चुँकि **मैलोरंग** पारिवारक सदस्य छी तें हम अहाँ सबकेँ इ कहि रहल छी जे एहिमे जतेक युवक छथि, मैथिली महारानी एतबा देने छथिन जे सबटा दिल्लीमे अपन जीजीविषाक हेतु संघर्षशील छथि मुदा मैथिली हुनका लेल तस्करीक भाषा नहि छियैन्ह, जेना हिन्दीकेँ बड़का-बड़का साहित्यकार लोकनिक लेल हिन्दी तस्करीक भाषा भ' गेलनि अछि। पत्रिका निकालि क' अथवा हिन्दीके पैकेजिंग निकालिक'। दूरदर्शन आदि पर वा कतौ जे कमबै के व्यवस्था ओ क' रहलथि अछि आ हिन्दीक सम्बन्धमे जाहि प्रकारक व्यापारिक उद्योग खोलने छथि से उद्योग एखन धरि के ई युवक सबकेँ समर्पणके देखिक' हमरा लगैए जे रहतै। आ जाहि दू पत्रिकाक नाम विभूति कहलनि अछि **रंग प्रसंग** आ **नटरंग** वास्तविक रूप स' **नटरंग** पत्रिका अपन बहुत कम संसाधनमे आ बहुत दिनस' प्रदर्शनके दिशामे जे काज क' रहल अछि से काज **मैलोरंग** करत। एतबा जरूर छै जे जेना मुकेश विभूतिक बात पर उताहुल भेला आ कहलखिन जे जरूरति छै जे जहन दिल्लीमे पत्रिका प्रकाशित होइत छै त' दिल्लीक प्रदर्शनके समाचार अवश्य अयबाक चाही।

**रंग प्रसंग**क सम्बन्धमे प्रयाग जी एकबेर हमरा कहने छलथि जे मैथिलीमे जे प्रस्तुति होइत छैक तै सम्बन्धमे थोड़ेक लेख हमरा **रंग प्रसंग**केँ लेल देल करु। चूँकि मिथिला क्षेत्रमे हम रहै नहि छी मुदा जखन-जखन जाइत छी, कतेक लोककेँ हम कहलियैन जे हम त' रहैत नहि छी आ अहाँ के ज' ई भय हो जे हम त' लिखक' पठेबै आ छपत नहि से छपैक गारण्टी हम लैत छी। कम-स-कम प्रदर्शनके सम्बन्धमे एक आध टा फोटो आ ओकर विवरण हमरा पठा दिअ। जाहि प्रकारे हेतैक हम ओकरा सम्पादित कय आ सम्पादक सँ भेंट कय क' ओकरा छपबैक प्रयास करब, आ ई संदेश जयबाक चाही।

प्रकाश भाषा संबंधी किछु गप्प करैत छलथि त' हमरा मोन पड़ैत अछि जे मैथिली कविता पर आइ स' 12-14 वर्ष पहिने साहित्य अकादेमीकेँ पत्रिकामे हमर एकटा लेख छपल छल। ओ लेख एक मासक बाद हू ब हू एकटा पंजाबी पत्रिकामे छपलै। वैह लेख हिमाचल प्रदेशके एकटा पत्रिका छै **विपाशा** तै मे छपलै ओकर थोड़ अंश। एकर परिणाम ई भेलै जे कलकत्ता'स कालीपद कोनार आ आन्ध्र प्रदेशस' के. नागभूषणम् जे पत्रिकाक सम्पादक छथि, ओ दुनू गोटे मैथिली कविता पर अपना-अपना भाषामे विशेषांक निकालबाक प्रयास केलथि। तै आवश्यकता अवश्य छैक जै मैथिलीमे जे काज होई छैक तकरा एकटा बृहत्तर समाज देबाक लेल आन भाषामे जयबाक चाही। अहाँ सब लोकनि के देखल अछि जे जखन अशोक वाजपेयी महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालयमे छलथि त' ओ **हिन्दी** नाम स' एकटा पत्रिका अंग्रेजीमे प्रकाशित करथि। भाषा के विवाद नहि होमाक चाही। देवेश एखन कहैत छलथि जे हम मैथिली बाजि नहि सकैत छी बहुत गोटे एहन छथि देवेश जकाँ। दिल्ली आ सैंसे देशमे जे मैथिली बाजैत छथि मैथिलीमे जीबै नहि छथि। अपेक्षा छै मैथिली बाजैयोकेँ मैथिलीमे जीबैयोकेँ आ अपेक्षा छै मैथिली आ मिथिलाके लेल काज करैकेँ। जे कोनो लेखक अथवा सम्पादकके व्यक्ति महत्वपूर्ण भ' जाइत छनि हुनकासँ साहित्य आ संस्कृतिक काज कहियो ठीक स' नहि भ' सकैत अछि। हमर जे अकिंचन बुद्धि अछि तै मे हमरा एतबे लगैत अछि।

आब मानि जाउ उपन्यासक सम्बन्धमे एखन हम सत्य स्वीकारी त' हम पढ़ने नै छी आ बिना पढ़ने हम केना कहूँ। आ इहो कोना कहू जे केदार कानन अई किताब के पढ़ने नइ छथि। ई उपन्यास ओइ पत्रिकामे छपल छै केदार कानन जकर सम्पादक छलथि। मुदा **मैलोरंग**मे अई किताबक समीक्षा छपल छै ओइमे स' अनिलचन्द्र ठाकुर के नाम हटाक' लिखि दियौ गंगेश गुंजन आ सब ठाम **आब मानि जाउ** के हटा क' **पहिल लोक**, कोनो फर्क ओइमे नहि पड़त। एहन काज हिन्दीमे तीन-चारि गोटे करैत छथि। मित्रे छथि हमरा कहब त' नामो लेब-लिखता जे केदारनाथ सिंह के इस कविता से मिट्‌टी की उद्‌भुत सोंधी महक

आ रही है। ओ महक कतय छैक से समीक्षकके बुझाइत हेतनि। एना अई उपन्यास के बैसल-बैसल जे हम देख सकलहुँ तै मे हमरा तमील भाषा के एकटा उपन्यास मोन पड़ल **सुसमित्रंग**, दिवंगत भ' गेला आब हुनकर किताब छनि। **ओरुकुटुकुमेलिए** जकर हिन्दीमे अनुवाद छै **घेरे से बाहर** आ मैथिलीके एकटा उपन्यास मोन पड़ल **पृथ्वी पुत्र** अइ दुनू उपन्यास के प्रधान चरित्र नायिका छथिन्ह। दुनू निरक्षर, दुनू संघर्षशील। आ एकटा हमर मित्र छथि। प्रायः अहीं सब चिन्हैते हेबैन्ह हुनकर पिता कहै छलखिन जे हँसी-चौल दुष्चरित्राक पहिल सीढ़ी थिक। सारि-बहनोईके रिश्ता अई उपन्यासमे शरू भेल। आ तै मे बहनोई कोना परिकल छथिन्ह आ ओई नायिकाके कोन-कोन दशा सामाजिक परिवेशमे झेल' पड़ैत छैक।

सम्बन्धके बंधनमे जे एकटा कुलवाद आ वंशवादके खंडन करैत काल्हि साँझ अहाँ सब **कमलमुखी कनिया** नाटक देखलौ। प्रकाश के अनेरे चिन्ता छलैन जे नाटक केहन भेलै, ओकर समीक्षा बादमे करब, लेकिन जे प्रभाव नाटक छोड़लक काल्हि, कुलवाद आ वंशवाद पर जे प्रहार अछि वैह अई उपन्यासमे। तै ल'क' इ कने आरो महत्वपूर्ण भ' जाइत अछि। प्रदीप बिहारी के **बिसुबयश** आ नवीन चौधरी कें **बाट या बटोही** अइ दूटा उपन्यासक बाद बहुत दिन धरि फाँक बनल रहल मैथिलीमे जकरा धूमकेतु के उपन्यास जखन छपल **मोड़ पर**, त' ओ टूटल आ फेर एक बेर मैथिली उपन्यासमे जे चुप्पी अबैत अछि से **मैलोरंग** प्रकाशन अइ चुप्पी कें तोड़लक अछि। अहि कारण ई मैथिली उपन्यासक धारामे एकटा महत्वपूर्ण प्रयास छी। **मैलोरंग** जे पछिला तीन वर्ष स' घाम-पसीना नहि, खून-पसीना नहि, अपन सम्पूर्ण रक्त-मज्जा लगा क' जे काज करैत आबि रहल अछि तै मे ई प्रकाशनके काज अइ बेर शुरू भेल। ई **मैलोरंग**कें पहील फूल छी। देखवामे एकर आवरण कने तेज जरूर लागैत होयत मुदा जें की **मैलोरंग** छी आ मैथिली लोक स' जुड़ल ई संस्था अछि तें लोक संस्कृति कने तेज आ बिट्टु कटै वाला बात होइत रहैत छै। लोक साहित्यमे लोक संस्कृतिमे बहुत बात आराम स', बहुत अश्लीली बात बहुत सामाजिक ढंग स' कहल जाइत छैक आ ओकर बहुत दिन धरि प्रभाव एकटा कुनैन जकाँ पड़ैत रहैत छै तै मे एहन शानदार प्रस्तुति अनिलचन्द्र ठाकुरके अई उपन्यासके संगे भेल। अनिलचन्द्र ठाकुरके संबंधमे देवेश जी जे सूचना देलनि ओत' निश्चिते विह्वल करैवाला बात थिक।

किछु बात हम कहब जे अई उपन्यासके स्वागत हेबाक चाही आ मैथिलीमे निश्चित रूप स' कोनो व्यापारिक प्रकाशन त' छै नहि। एम्हर आबिक' नेशनल बुक ट्रस्ट किछु किताब प्रकाशित केलक अछि। तै मे अहाँ सबके सूचना दी जे मैथिली कविता संचयन गंगेश गुंजनके सम्पादनमे छपल छलनि जकर एक मास पहिने रीप्रिंट आओल। ग्यारह

सै प्रति छपल छलै। छपैत काल (मैथिली केँ बाजारक चिन्ता कारणे) किताब त' विकेतै नै बदनामी हमर होयत त' पाँच सै छपाबी। हमर चीफ एडीटर कहलथि जे पाँच सै छपतै त' एकर दाम बढ़तै, त' आरो ने बिकतै एगारह सै प्रति छपल आ एगारहो सै बिकायल। संयोग ई कहल जयबाक चाही जे मिथिला युनिवर्सिटी के बी. ए. के एसेन्सीयल कोर्समे किताब लागल छै। ओकर बिक्रीकेँ एकटा आधार ई भ' सकैए लेकिन एगारह सै प्रति बिकेलै आ ओकर पुनर्मुद्रण फेर स' भेलै। एखन मैथिली कथाक संग्रह छपल अछि। जँ कियो व्यापारिक प्रकाशन अइ दिशामे आबथि त' एकटा प्रकाशक नई चला सकतै। एकर सीधा उदाहरण गौरीनाथ बैसल छथि आ **अंतिका** छापी क' आ ओकरा बाजारक आधार देबमे पापड़ जतेक बेल' पड़ल होइन से गौरीनाथ जानथि। एहन बात नहि छै जे पत्रिका बिकाइत नहि छै, किताबो बिकाइत छै। तेँ ज' कियो मैथिली प्रकाशन के व्यवसायिक काजमे लागै त' एहन बात नहि छै जे ओ नहि चलतै।

मैथिलीक सांस्कृतिक पत्रिकाक वर्तमान परिदृश्य जे अछि तै मे जतेक बात कहलहुँ अछि से अछिए। एखन शरदेन्दु चौधरी एकटा पत्रिका बहार करैत छथि **समय साल** ओहि स' एकटा चिट्ठी आओल। हिन्दीमे एकटा दुष्कर्म भेल रहै थोड़े दिन पहिने, अहाँ सबके मोन होयत जे हिन्दीमे टॉप टेनमे कोन-कोन लेखक छथि। एतेक पैघ दुष्कर्म हिन्दीक लोक करैए त'मैथिलीमे एकर नकल किए भेलै? शरदेन्दु जी चाहि रहल छथि जे मैथिलीमे टॉप टेन लेखकके छथि? अहाँ सब गोटे विद्वान छी हमरा नहि लगैत अछि जे ई आँकड़ा निकालब संभव छै, कोनो लेखकके टॉप टेन करब? हमरा त' लगैत अछि जे दसटा कृतिके टॉप टेन अहाँ नहि कहि सकैत छी। टॉप टेनमे ज' गनबै त' ककरा गनबै **तमस** के आकि **गोदान** के आकि **पृथ्वीराज रासौ** के? कोना गानल जेतै से?

एकटा समय छल भारतेन्दु हरिशचन्द्रक पीढ़ीमे जे पत्रकारिता सेहो आ लेखन सेहो। साहित्यकार आ पत्रकार एक्के होई छलाह आ तै समयमे कोना छपत, कोना बिकायत, वैह भारतेन्दु हरिशचन्द्र सबटा काज करैत छलथि। एखन जतेक काज होइए तै मे हमरा बुझाइत अछि जे मूल चिन्ता जे लेखक, पत्रकार, सम्पादककेँ भाषा, साहित्य आ हुनकर अपन संस्कृति बाँचि जाइन। जेना सुनीलजी चर्चा करैत छलथि जे धुन ओ अपने स' बनबैत छथि जे असलमे वैह सातटा सुर छैक आ ओइ सात सुरके कम्बीनेशन कोना हुए से मूल रूपस' चिन्ताक विषय थिक। मिथिलाक वातावरणमे धानक पाकल सीस लहलहाइत छै तै स' कोन वातावरण बनैत छै आ कोन प्रकारक ध्वनि हुनकर कानमे जाइत छन्हि। बाबा एकबेर कहैत छलथि जे "मैथिलीमे कविता लिख क' पठाउ-ई केदार कानन कहैत छलथि। हम दिललीमे छी कोना लिखू कविता? जा धरि माँगुर माछक झोर कन्ठ तर नहि जाओत, तिलकोर तरल कंठ तर नहि जाओत,

मैथिली कानमे नहि बाजल, ता धरि हमरा स' मैथिलीमे कविता कोना लिखल जायत?" से काज जनकपुरमे रहिक' सुनील करै छथि। निश्चित रूप स' ओई वातावरणके प्रभाव छै जे हिनका कानके चारू दिस स' हरदम मैथिलीके भोपू बाजैत छनि। प्रकाश आकि मुकेश आकि हिनका टीम लोक सभके मैथिली की? हिनका सभके मैट्रो स' ल' क' डी. टी. सी. बस तक दिन स' ल' क' राति धरि रोटीके चिन्ता कानमे सवार रहैत छनि तै मे जतेक काज ई सब करैत रहलाह अछि से सभटा बधाइके वस्तु थिक। सबके आशीर्वाद हिनका लोकनिके छैन्ह। हमहूँ सहयोग करैत छियनि आओर आशा करैत छी अहूँ लोकनिक सहयोग भेटतनि।

**प्रकाश :** धन्यवाद नवीन भैया। आब हम आग्रह, करबनि **मैलोरंगक** अध्यक्ष, वरिष्ठ एवं सुपरिचित नाटककार महेन्द्र मलंगियाजी केँ। ●

# अपन बौआके अपने दुलार करी

**महेन्द्र मलंगिया**

रंगमंचस' जुड़ल रहलहु तेँ पत्रकार स' जुड़ल रहलहुँ। अहि बीचमे जे हमरा अनुभव भेल वैहटा हम मात्र राख' चाहब। मधुबनीमे जखन नाटक, महोत्सव करैत रही त' किछु मिडिया ओकरा नीक कवरेज देलकै आओर एकरा बाद हमरा कहैत छथि ''मलंगियाजी अहाँक नाटकक कवरेज हम बढ़िया देलौं आ एकर बदलामे हमरो किछु अहाँ के देब' पड़त।'' हम पुछलियैन्ह जे अहाँ की देब'लेल कहैत छी? त' कहैत छथि "एकटा नाटक हमरो गाममे क' दिअ।" एकर माने ई रहै जे अगर अहाँ हमरा गाममे नाटक नहि क' देब त' हम आब अहौके नइ छापब। दोसर गप्प ई छैक जे नाटक भ' रहल छैनाटक आबि क' देखियौ। हम सब चार्ज लगा देलियै जे नाटक के कवरेज नहि होइत छै, ई किए एना होइत छै तकरो एकटा उदाहरण हम द' रहल छी। हम गेलौं दैनिक पत्रक ऑफिसमे कहलियैन जे एकटा आदमीके पठा दियौ त' कहलनि जे "हम ककरा पठा दिअ, सब कहैए जे हम नाटक बुझबे नहि करैत छी ओहन विश्लेषण कर' बला नहि अछि, बरु अहीं लिख क' लाउ त' हम छापि देबै।" आब कहू ई कोनो कायदा भेलै। त' बहुत लोक बुझबो नहि करैत छथिन्ह जे रंगमंच की छियै आ नाटक की छियै? एकर अभाव देखबामे अबै छै। एकर बाद इहो छै जे ज' कोनो नेता ओइ स' जुड़ल रहल त' रिपोर्ट नेताक कार्यवाहीके पूरा विस्तारस' बतबैत छैक आ जेँ कि नाटक पर गेलै कि 'एकर लेखक ई छथि, कलाकार ई सब, निर्देशक ई छथि एवम्

प्रकारे शॉर्टकटमे काज खत्म। ई त' रिपोर्टक बात हम कहलहुँ अछि। अभिनय केना भेल, की भेल, एकर ने कोनो चर्चा होइत छैक आ ने ओकरा लेल एतेक स्पेश रहैत छैक। अइ संदर्भमे किछु अपन संबंध सेहो होइत छैक।

इहो बात छै जे पत्रकार सब जे पहुँचथि त' हुनका बढ़िया स' भोज-भात होमक चाही। चाहे अहाँ कतबो मुश्किल स' चन्दा क' क' नाटक क' रहल छी। नै देबै त' नहि छपत। बहुत तरहक एहन गप्प छै।

एकटा बात आरो छै जे हिनका दुनू तरहक कमाई छनि एकटा नै लिखथिन तकर आ एकटा लिखथिन तकर। नहि लिखथिन जकरा छुपाओल जेतैक आ जाहि स' फायदा होउक तकरा लिखथिन। मधुबनीमे एकटा कर्णजी पत्रकार छलथि बड़ा निर्भीक। छः मास धरि हुनका पयरमे प्लास्टर रहल। ततेक मारि मारलकनि। इहो स्थितिके समाना पत्रकार सभके कर' पड़ैत छनि।

सांस्कृतिक पत्रकारिता दिस ज' आबै छी त' अइमे ई एकटा बात देखलहुँ अछि जे जतेक अनुभव भेलनि पत्रकारितामे ओइ अनुभवेक आधारपर ओ प्रोजेक्ट केलखिन। आइ नाटकके स्थिति किए बिगड़लै? किएक त' ओहन होसगर हमरा लोकनिक पत्रकार नहि छलथि। यदि ओ होसगर, समझदार रहितथि त' हमरा नाट्यकर्मीकेँ, नाटकके एकटा ट्रैकमे रखितथि, ओकरा सही रूपे प्रोजेक्ट करितथीन। जाहिस' नीक चीज सब अबितै। हम मात्र एकटा एकांकीके देख' लगलियै त' हमरा लागल जे सैकड़ो एकांकी सब भरल अछि मैथिली संसारमे। लेकिन सात पूत रामके एको ने काम के। किए एहन स्थिति छै? यदि ओइ समयमे ओकरा कहितथिन जे अइमे एतेक सुधार करु, मुदा से नइ भेल। नामक पाछा जे ई फलाँ के छनि त' केना नहि औतै। ई सब होइत रहलै जाहि स' हमरा लोकनिक स्थिति बड़ा दयनीय भ' गेल अछि पत्रकारिता दिसस'। ई संस्कृतिकेँ कियो लाबै ने चाहैत छै। **हिन्दुस्तान** छलै मधुबनीमे, गतिविधि छपै छलै। आब ओ चीजे ने आबि रहल छै। बड्ड खुसामद करबैन त' एकटा छोट बॉक्समे नाटक मंचन भेल, एक आंगुरमे नाटक मंचन भेल त' अइ स' की भेल। जीवन गुजरि जाइत छैक मुदा नीको अभिनय करै वाला के नै छपैत छैक। तखन अभिनेता ओकरा कह' जाइत छै कने हमर छापि देब, कने हमर बेसी क' छापि देब। हम जनकपुरे केँ हाल कहैत छी जे ख़राब अभिनय केलकै आ कहलकै जे हमर यदि बढ़ीया स' नइ लिखब त' हम अहाँक कपार फोड़ि देब। आब ओ निकहा चलि गेल तर आ खरबहा चलि आओल ऊपर। ओ कह' गेलआइ यौं श्रीमान
अहाँ जे ई लिखलियै कि ओ हमरा स' नीक अभिनय केने छल त' ओकरा ओ कि जवाब देतै। त' हमर कहब अछि जे विभिन्न परिस्थितिस' हम सब गुजरि रहल छी।

हमरा लोकनिके वा हमरा रंगकर्मीके जे एकटा पहिचान भेटक चाही ओ पत्रकारिता दै छै। लेकिन, जखन

हमर पुरोहिते होपलेस अछि त' जजमानक की हालति होयत। हमर जजमान त' ओहिना माथ धुनता। लेकिन ई नहि हेबाक चाही। हमरा लोकनिके स्वयं प्रयास करक चाही, ई हमरे छी, हमरे माँटि-पानिक छी अई बात पर ध्यान राखी जे ई हमर मैथिली के अछि, मैथिली रंगमंच के अछि। यदि हम अपना बौआ के अपने ने थैया दिग् दिग् कहबै त' के कहतै? दोसर भाषा-भाषी त' कहबे करत जे एकर बच्चा कोना बेंग जकाँ छड़पै छै। त' हमरा लोकनि अपने बौआ के अपने दुलार करी थैया दिग्-दिग् कहियै।

**प्रकाश :** धन्यवाद सर। आब हमरा बीच आमन्त्रित छथि। हमर सभहक जेठ आ श्रेष्ठ पत्रिका **अंतिका**क सम्पादक भाई अनलकांत जी। गौरी भाई सँ आग्रह जे उपर्युक्त परिदृश्यमे अपन विचार दैथ। ●

# साहित्यिक पत्रिकास' सांस्कृतिक पत्रकारिताक अपेक्षा नहि होबाक चाही

**गौरीनाथ**

मैथिलीमे सांस्कृतिक पत्रकारिताके हमरा जनैत शुरुआते ने भेल अछि। शुरुआत जे भेल हो, जे बहुत गोटे मानैत छियै त' हम अइ ममिलामे अल्पज्ञ छी। हमरा जानकारी नहि अछि। एखन धरि हम जतेक पत्र-पत्रिका पढ़ने छी तकर सूचनात्मक नहि मानैत छियै। हम पहीने प्रकाशजी के कहने छलियैन जे अई पर हमरा लग बजबा लेल किछु नहि अछि। हम मात्र श्रोताक रूपमे छी। एकर अलावे किछु टिप्पणी **अंतिका** संबंधमे कएल गेल...।

हम एतए एलहुँ अछि त' एक-दू टा बात फरिछा दी। एक आदमी सुनील मल्लिक जे छथि हम हुनका सँ ई अपेक्षा नहि राखि सकैत छी जे ई क्रिकेटमे भाग लेथि आ सचिन तेन्दुलकरस' बढ़िया स्थान आनथि । त' पत्रकारितामे जे होई छै से अलग प्रकार छै आब कोनो जे साहित्यिक आ वैचारिक पत्रिका छै आ ओकरा स' जे अहाँ सांस्कृतिक पत्रकारिताकेँ जे अपेक्षा करैत छी से गलत अछि। हमरा सब आई धरि कोनो रपटकेँ नहि छापने छी आ ने छापब। जे प्रस्तुति भेलैए करिबन सौटा साहित्यिक कार्यक्रम भेल हेतै अइ साल मे तीन-तीन टा साहित्यकारकेँ जन्म शताब्दी मनाओल गेल छै। ढेर कार्यक्रम भेलै मुदा हम ककरो रपट नहि छपलियैन। लोक के अपन एकटा सीमा रेखा तय कर' पड़ै छै ताकि ओही दायरामे ओ काज करै। हम जे सब काज कर' लगबै त' कोनो काज नहि होयत। एकर अलावा हम नाटकके लेल देखलियै जे कतेक काजक' सकै छी

त' एखन धरि तेईसटा अंकमे आठटा नाटकके पूरा प्रकाशित कयलहुँ अछि। नाटकके स्तंभमे किछु लेख जे छै से छिटफुट हम देलियैक। स्तंभ मैथिलीमे कियो नियमित नहि लीख क' देत। हमर स्तंभ चारि अंक स' नहि आयल अछि। एक गोटे कियो कोनो कलकत्ता के चर्च केलनि जे रपट छपल छै ओ त' सूचना देल गेल छै। कियो आदमी जे रपट देखाबी त' हम पत्रकारिता छोड़ि देब। सूचना त' केओ कतौ सँ पढ़ियो क', सुनियो क' द' सकै छै जे एना-एना भेल अछि।

कमलानंद विभूति जे कहलनि जे फिल्मपर मनीष झाके बारेमे कोनो काज नहि भेल अछि त'; हम कहब जे अहाँ पढ़ैत कतेक छी से खोज करी जे अइ पर काज भेलैए कि नहि? काज भेल छै। मुदा अहाँ अपना दिस तकियौ जे काज भेल छै कत' भेल छै से किए नहि भेटल? काज खराब छै वा नीक छै मुदा हुनका पर ध्यान देल गेल छै मैथिलीयो मे। धन्यवाद! अइस' बेसी हमरा किछु नहि कहबाक अछि।

**प्रकाश :** धन्यवाद अनलकांत भाई। विभूति भैया के ई कहब नै छलनि जे काज नहि भेल हेतै मुदा एकटा **अंतिकाटा** स' काज नहि चलतै। (**अनलकांत**ःनहि आरो बहुत रास काज भेल छै) भ' सकैए एकटा मनीष झा पर काज भेल हो मुदा आरो बहुत नाम छै, बहुत लम्बा लिस्ट बतौने छलथि, ओइ पर काज नहि भेल हेतै। सूचनात्मक हमरा बजबाक नहि चाही मुदा हमरा बाज' पड़ि रहल अछि जे **मैलोरंग** तीनटा महोत्सव केलक अछि मुदा ओकर रपटो नहि छपलै जखन की ओ तीनू कार्यक्रममे अनलकांत जी उपस्थित रहथि, किए? (**अनलकांत** ः नहि ओत'हमर मर्जी छी जगह रहत छापब नहित' नहि) नहि नहि हमरा अहाँ स' कोनो शिकायत नहि अछि। (**गुंजन जी :** कानो बात नहि हमरा सब मैथिल छी रमन चमन हेवै करै छै, आब हमरा सबहक बीच हिन्दी पत्रिका **प्रथम प्रवक्ता**स' सम्बद्ध कुमार शैलेन्द्र भाई बैसल छथि। त' हम आग्रह करबनि मंच पर आबथि कुमार शैलेन्द्र आ अपन बात पाँच मिनटमे राखथि। ●

# स्मारिकेमे मैथिली सांस्कृतिक पत्रकारिता केंद्रित अछि

**कुमार शैलेन्द्र**

आदरणीय श्रेष्ठ जन! मैथिलीमे आइयो पत्रकारिते आरम्भ नहि भेल अछि। किछु पाँच-सातटा पत्र प्रकाशित होइत अछि आ सेहो रेगुलर नहि अछि त' सांस्कृतिक

पत्रकारिता कत' स' एतै? तखन जखन बैस गेल छी सांस्कृतिक पत्रकारिता पर चर्चाक लेल जे सांस्कृतिक पत्रकारिता कतौ छै त' ई मानि लियौ जे स्मारिका निकलैत अछि, मैथिलीके सांस्कृतिक पत्रकारिता ओहीठाम केन्द्रित अछि। आ ओ काज भेल छै। मानि सकै छी जे एकटा नियमित पत्रकारिता के प्रथा नै छै। ओकर विकास नहि भेलै तथापि समय-समयपर जे मैथिली स्मारिकाके विभिन्न ठाम प्रकाशन भेलै ओइमे इतिहास भेटत मैथिली पत्रकारिताके, तै पर काज कयल जा सकै छै! जखन हमरा सूचना भेटल जे ई टॉपिक छै त' हमरा अनसोहात सन लागल जे जखन पत्रकारिते नहि छै त' ई सांस्कृतिक पत्रकारिता पर चर्चा किए? फेर लागल जे नै किछुत' पत्रकारिता भेल छै जेना **भंगिमा** जे स्मारिका निकालै छै वा **मैलोरंग** अन्यथा आरोठाम जे एहन काज सब भेल छै तैमे सांस्कृतिक पत्रकारिता छै। ओइमे ततेक सूचना छै जे कोनठाम कोन समयमे कोन कार्यक्रम छै आ अइमे ततेक ने काज भेल छै जे अइ पर एकटा Ph.D कयल जा सकै छै। ओ कखन-कखन भेलै, कत' भेलै ओ सांस्कृतिक आयोजन। ओइमे प्रयुक्त गीत-नाद, चित्रकला, मधुबनी पेंटिग्स पर बहुत काज भ' चुकल छै। तखन ई सब एकठाम जोगाओल ने छै। एकरा हम सब जोगा नहि सकलौं जहिना कि हमसब साहित्यक पत्रकारिताकेँ सेहो ने जोगा सकलहुँ। लेकिन सांस्कृतिक पत्रकारिता के एकटाधारा अछि एकर जे आई विचार क' रहल छी त' हम एकरा भाई जोगा सकै छी। किएक त' पटना मे दूटा अंक **भंगिमा** निकालै अछि, तीनटा अंक **मैलोरंग** निकालत, **कर्णामृत** जाहिमे किछु सांस्कृतिक उजास उछाह रहै छै, तकरबाद जाहिठाम सूचना नहि छै तकरा लेल चिन्तित सेहो नै होम' के छै कारण सब पत्रिकाके अपन दृष्टि छै जकर दृष्टि जतेक छै ओ ततेक काज क' रहल अछि। नकारात्मक रूप स' जे हमरा लग किछु नहि अछि, मुदा से छै नहि। वास्तवमे जे काज भ' रहल छै तकरा जे आइ हम सेहो संरक्षित केनाई शुरू क' दी त; हमरा लोकनि सांस्कृतिक पत्रकारिताके जेना मैथिली भाषा के जोगाबति एलहुँ अछि अहि आभावमे तहिना जोगा सकै छी। इहो मैथिली अभावक संग टुकड़ी-टुकड़ीमे जोगाक, रखने रहब। अई विचारके लेल हमरा आमंत्रित केलहु तकरा लेल हम आभारी छी, धन्यवाद!

**प्रकाश :** धन्यवाद शैलेन्द्र भाई! मैथिलीए किए हिन्दी आ आरो आन भाषामे सांस्कृतिक पत्रिका उपलब्ध नहि होई छै। एतय ई महत्वपूर्ण नहि छै जे सांस्कृतिक पत्रकारिताक लेल अलग सँ कोने पत्रिका छपै। ई जिम्मेवारी त' ओहो पत्रिका के छै जे साहित्यिक वा आन छै जे अई सांस्कृतिक रूपके अपनामे समावेशित करथि। आइ मैथिली पत्रिकाके कमी नै छै तें ई सवाल उठलैए जँ पत्रिके के कमी रहितै त' एकर प्रश्ने नहि उठितै। तें प्रयोजन आई बात के छै जे जे

पत्रिका लोक लग पहुँचै छै, स्टेबलिस छै ओ अपनामे सांस्कृतिक पत्रकारिता के समावेशित करै। आब हम आग्रह करबनि पटना स' आयल अजित कुमार 'आजाद' केँ ओ डेस्क पर आबथि आ दू शब्द कहथि। ●

# तैयो हुनके लोकनिके मंचस्थ करैत रहलहुँ अछि

**अजीत कुमार 'आजाद'**

नमस्कार, मित्र लोकनि सबस' पहिने त' हम ई कहब जे मैथिलीमे पत्रकारिताके सेहो आरम्भ आ स्थापना भ' चुकल अछि। आ सांस्कृतिक पत्रकारिताके सेहो। ज' से नहि रहैत त' हम बारह वर्ष पहिने मरि गेल रहितौं। पिछला बारह वर्ष स' हम अहि बहाने रोजी-रोटी क' रहल छी। मैथिली साहित्यिक आ सांस्कृतिक पत्रकारिता स'। तहन छै जे जतेक एकर विस्तृत केनवॉस भ' सकैत रहै से नहि भेलै। तखन ठाम-ठाम पर कोनो व्यक्ति जेना आइ प्रकाश एत' ई जोत क' रहला अछि नाटक स', जनकपुरमे मलंगियाजीक अलग चलि रहल छनि। विराट नगर फेर शून्य छै, जितेन्द्र जीत शान्त छथि। पटना एकटा स्पॉट बनल अछि। अहाँ लोकनि के ताज्जुब होयत अइ बीचमे बहुत जगह हम घुमि-घुमि क' पत्र धरि लिखलियनि जे हम सब नीतीश जी सँ भेंट करी, मिथिलांचलमे एखन धरि एकोटा थिएटर नहि अछि। अई ल'क' हम कएकटा आलेखो लिखलियै मुदा से नहि भ' सकलै। कारण ई सब एकसर नहि हेतै। अइ लेल सपोर्ट चाही लोकक आ Political approach सेहो।

श्रीमान 2000 ई. मे एकटा पत्रिका **आँच** निकालबाक प्रयास केने रही, जे आई धरि नहि भ' सकलै, सात वर्षक बादो। हम ई सोचने रहियै जे जतेक संस्था अछि ओ सरकारी वा गैर सरकारी ओइमे जे शीर्षस्त अधिकारी लोकनि छथि से मैथिली के त' देबे करथिन मुदा आश्चर्य! हम आन शहरक त' बात नहि करब मुदा पटना के बात जरूर करब। जत' हम पत्रकारितामे बेस संलग्न छी; जतेक बैंक छै जे विज्ञापन दाता सब छै अथवा अन्य संस्था सब छै सबमे मैथिली व्यक्ति सब छथि, मैथिले लोकक दस्तखत स' विज्ञापन निकलै छै। मुदा आश्चर्य मैथिली कार्यक्रमक लेल विज्ञापन नहि भेटत मुदा इहो आश्चर्य जे हम सभ सब बेर हुनके लोकनि के मंचस्त करैत रहलहुँ अछि। कोनो ने कोनो लोभमे, जे चलू अई बेर नहि शायद अगिला बेर-शायद अगिला बेर। की स्थिति दिल्लीक छै, हमरा **मैलोरंग** ल'क' बेसी गप्प नहि भेल

प्रकाशजी स' मुदा एहन प्रकारक स्थिति के सामना **मैलोरंग** के एत' दिल्लीयो मे सेहो जरूर भेल हेतै।

मैथिल एत' दिल्लीमे बहुत छथि से बहुत शीर्षस्त सब छथि ओ एक दस्तखतस' एहन आयोजनक' सकै छथि मुदा से नहि भेल हेतै। एतेकटा के बजट ई सब कोना जुटौलनि से हम दाद दै छी। मुदा हम किछु कह' चाहब समय कम अछि तैयो कह' चाहब जे हम एकटा कविता संग्रह निकालनौ जाहिमे एकटा कविता छै जकर शीर्षक छै **आलोचक**। सब हमरा एहन नव लोक जे कोनो नव लेखक डायरेक्ट कोनो बात नहि लिखत मुदा हम लिखलियैन आलोचक सबहक बारेमे, जे आइ तथाकथित शीर्षस्थ आलोचक छथि जे श्रीमान कविता लेल तथाकथित शीर्षस्थ आलोचक नहि, आलोचक लेल कवि चाही। जतेक आलोचक सब छथि तिनका हम असगर दिल्ली केत' नै कहब मुदा पटना हम संठ केने रहै छी। से कहब प्रकाशजी, जे दुनिया एहन नै छै यहाँ स्वयं प्रकाश छी। बहुत ताबेदारी करबाक प्रयोजन नै छै। चीन्ह लियौन अई चेहरा सबकें, इहे लोकनि किछु क' सकै छथि। सांस्कृतिक परिदृष्यक जतेक चिन्ता अहाँ के अछि ततेक नहि छनि मुदा तकर बादो लोक बढ़ै छै। महेन्द्र मलंगिया के कोन सांस्कृतिक पत्रकारिता स' लाभ भेटलनि ओ अपना बदौलति एत' धरि आयल छथि हमहुँ...। ई कथक केन्द्र के डायरेक्टर रहथि (गंगेश गुंजन दिस इशारा करैत) कतेक लाभ छै मिथिला कें? हम एत' वक्तव्य देव' नहि आयल छी। हम ई कह' लेल आयल रही जे मिथिलांचलमे जत' कतौ काज हेतै से सब अहाँ के संग अछि। हम हाथ जोड़ि क' कहै छी जे ज्येष्ठ भाई छथि गौरीनाथ (अनलकांत) जी, नवीन जी, गुंजनजी, शैलेन्द्रजी काज भ' रहल छै, भैया बस कोनो काजके थोड़ा बहुत Notice कोनों ने कोनो रूपमे लिखू। अहाँ एतेक काज करिते छी कनेक दया भाव, कनेक गरीब श्रेणी के कलाकार सबके उपर रखियौ जे एतेक मेहनत स' काज क' रहल छथि कने एकरा सब पर नजरि दियौ।

**प्रकाश :** धन्यवाद अजीत भाई। Emotional भ' गेल छलथि। हमरा सबके एखन धरित' सहयोग भेटि रहल अछि। रातिमे अहाँ लोकनि जे कार्यक्रम देखलौ तै मे नृत्य नेहा वर्मा केने छलथि जे अहाँ सबके नीक लागत होयत आ' नेहा वर्मा हमरा टीमस' जुड़ल छथि। ओइ समयमे गंगेश गुंजन जी कथक केन्द्र के निदेशक छलथि आ नेहा वर्मा छात्रक रूप मे चयनित भेल रहथि। बात सत्य कहलियैए। ई हमर मैथिल समाजक त्रासदी अछि। खैर, **मैलोरंग** के मात्र मानसिक सहयोग भेट जाए त' हम ई प्रोग्राम की अछि एहन-एहन तीनटा प्रोग्राम क' सकै छी साल मे। आब हम सुबोध बाबू सँ-आग्रह करबैन जे ओ हमरा लोकनि के दू-शब्द कहथि सुबोध सर। ●

# समाजक सूर्य बनू

**सुबोध नाथ झा**

आदरणीय गंगेश गुंजनजी, मलंगिया जी, नवीन जी, प्रकाश जी अहाँकेँ धन्यवाद जे अहाँ हमरा बजेलहुँ। दरअसल अभिशप्त छै ई मैथिल समुदाय। कनेकेमे प्रसन्न कनेकमे नाराज भ' जायत, दरअसल बहुत तुनकमिजाज कौम छै। राजा महाराजाके शरणमे रहलै, तें कने बेसी दुलार भ' गेलै। लेकिन अपन परम्परामे जँ जायब त' भेटत जे हिन्दुस्तानमे सबस' समृद्ध परम्परा अपने सबके अछि। धर्मशास्त्रक इतिहास पढ़ी त' बुझि पड़त जे मिथिला की थिकै। संस्कृत भाषा रहतै ताबत तक मिथिला हमर छै, जाबत धरि दर्शन रहतै ताबत तक हम छी। अइ बैक ग्राउण्डमे हमेशा देखक चाही सब परेशानी त' छै अपना जगहि पर मुदा अइ बीचमे 15-20 वर्षमे बड्ड परेशानी भेलैए। आओर सांस्कृतिक परंपराए एहन छै जे हमरा समाजके जोड़ने रहत। सामाजिक परिवेश देखिए रहल छियै जे कोना चरमरा गेलैया लोक के कारणे। राजनीतिक परम्परा के देखिए रहल छियै जे कोना छै। सांस्कृतिक परम्परा सबके जोड़ने रहत। मुदा, एतए काज सामुदायिक स्तर पर कर' पड़त असगरे केला स' काज नहि चलत। समुदायके जोड़' पड़त, पंचायतके जोड़' पड़त। पंचायत मे आई ततेक पाई आबै छै जे ग्रामीण स्तर पर ई सब भ' सकैत अछि। ग्रामीण स्तर पर निर्णय लेब' वाला जे लोक छै ओई स्तर पर पत्रकारिताके पहुचाब' पड़त। ग्रामीण क्षेत्रमे सांस्कृतिक चेतना जगब' पड़त ओ ताना बाना बुन' पड़त। ई छै कठिनसे बात सही छै। लोकके बान्हब इहो बड़का कला छै। अपना ओहि ठाम बहुत लोकप्रसन्न होयत त' एकटा लाल झंडा जा क' कतौ गाड़ि देत। अइ स' गरीबी हटतै, अइ स' शिक्षाक प्रसार हेतै, अइ स' बौद्धिक विकास हेतै? कारण, सामुदायिक स्तर पर कहियो चिन्तन नहि भेलै। जाबत तक चिन्तन नहि हेतै ताबत धरि, स्थित नहि बदलतै।

आइ हमरा सब जे एत' बाजि रहल छी, ककरा बल स'? त' 1905 मे. .. जे आवेदन करियौ मैथिलीमे करियौ। जतेक आवेदन एतै सांसद मे जेतै राज्य सभामे जेतै मैथिलीमे हेतै। एकटा मैथिल आदमी ओत' बैसतै ओ अनुवादक हेतै ओ हिन्दी स' मैथिली करतै आ मैथिली स' हिन्दी करतै। कयकटा पठेलियैए? कारण फेर समीक्षा हेतै एकरकि अस्तित्त्व छै जे ई संविधानमे रहय? ई समीक्षा जेतै। ओकर Short analysis हेतै। ओकर की opportunity छै, कि खतरा छै, अइ सबके समीक्षा होइत रहतै। ताहि लेल ई हमेशा ध्यान राखू जे कहावत छै जँ एक वर्षक विनियोजन हुए त' धानक खेती करू फसल उगाऊ, दस वर्षक विनियोजन

हुए त' फल लगाऊ आ यदि सौ वर्षक विनियोजन करबाक हो त' शिक्षित करू। अक्षर ज्ञान होयब अलग बात छै मुदा शिक्षित केनाई अलग बात छै। हिन्दुस्तान के आजादी के लड़ाईमे लोककें शिक्षित कयल गेलै साक्षर नहि कयल गेलै जे हमरा आजादी चाही। आब दोसर आजादी आर्थिक आजादीके लड़ाई हम लड़ि रहल छी। सबके शिक्षा चाही, सबके स्वास्थ्य होई ओइ आजादी के लड़ाईमे सबके दत्त चित्त स' लाग' पड़त मात्र थपड़ी बजौला स' नहि होयत आ ने किलकारी मारला स' होयत। विद्यार्थी छी जे विद्यार्थी के होमाक चाही से हासिल करू 24-25 वर्ष तक, ओकर बाद फेर आयब पारिवारिक जिनगीमे, लक्ष्य हमेशा स्पष्ट रहबाक चाही। जे किछु कर' चाहै छी ओकर मार्केटिंग छै मार्केटिंग हेबे करत। सारा संसार के लोक अहि ठाम आबि रहल अछि किएक त' लोक छै, एक अरब बारह करोड़। चीनमे जा रहल अछि किएक त' लोक छै ओत', तखन प्रयास त' कर' पड़त। मान-अपमान नहि होइ छै, मैथिल सबके सबस' बेसी समस्या ई छनि हुनका मान-अपमान बढ़ लगै छनि। आगा बढ़बाक लेल Plan बनब' पड़त।

हम त' प्रत्येक वर्ष कम से कम एक हजार कें मैथिली किताब खरीद करैत छी। आ अपन सम्पर्कक लोक अधिकारी सबके सेहो कहै छियैन जे अहूँ खरीदू। एकटा Plan बनाऊ पहिने Short Trem plan एक साल तक के जे हम किनका स' भेंट करब की करब। फेर Middle term plan बनाऊ एक स' पाँच सालक बीच हमर की स्थिति रहत की हम कर' चाहैत छी कत' हम जाय चाहैत छी काठमांडू धरि अहाँकें राज अछि त' जखन राज अछि त' काज त' कर' पड़त ने। समय कम अछि आ कहबाक बहुत रास। रवीन्द्रनाथ के एकटा कविता छनि जे सूर्य अस्त भ' रहल छथि ओ कहै छथिन जे क्यो आस-पासमे छें? ई सुनि सब गुम्म किएक त' ई बात सूर्य कहि रहल छथिन। भगवान राम जे सूर्यवंशी छथि। ओहो गुम्म ओत' कहि सकै छलखिन ने जे हम सूर्यवंशी राम कहूँ अहाँ, हमरा की कहै छी, मुदा हुनको हिम्मति नहि भेलैन जे किछु कहथिन हुनको सिट्टी-पिट्टी गुम भ' गेलनि। मथुरा के छैल छबीला, रसिया कृष्ण ओहो चुप्पे रहला तखने एकटा दीपक चलल जा रहल छल ओ पुछलकनि सरकार कहू की बात, कि कहै छी अहाँ बहुत काल स' अस्ताचल पर बैसल छीयै? त' सूर्य के कहलकनि जे घर-घरमे जैइके सामर्थ हमरे अछि अहाँ त' उगै छी क्षितिज पर आकाशमे मुदा हम त' घर-घर जरै छी। जतेक कुरुतिके हम दूर क' सकै छी, अन्हारके दूर क' सकै छी करब।

अहि ल' क' हम अपन बात समाप्त करब आ कहब सूर्य बनू। अट्टालिका के, गरीबके झोपड़ी पर सेहो ओतबे प्रकाश दै छै। समाजक सूर्य बनू, अपना-अपना घरक सूर्य बनू। दोसर के हम किए कहियौ जे हम अहाँ ओत' गेलहु हमर काज नहि भेल यौ, अहाँ स'

हमर ई अपेक्षा छल यौ हम ई किए कहबै? बान्हि देबै हम अपन आचरण स' जे ओ व्यक्ति अहाँके पाछा-पाछा चलत? सूर्य नहि बनि सकी; माटिक दीप त' अहाँ छीहे। अपना घर आ समाजक लेल। अहि शब्दक संग हम अहाँ लोकनि स' विदा चाहब।

**नवीनजी :** क्षमा करब बीचमे एलौंह, भाषण दै लेल नै एकटा बात कहै लेल जे सुबोध जीके पूरा परिचय अहाँ लोकनिके नहि भ' सकल ई प्रशासनिक अधिकारी त' छथिए अहि स' पहिने उत्तर प्रदेशमे शिक्षा सचिव छलथि। Iand आ People के कतबा स्पष्ट समझ छनि से अहाँ सब बुझि गेल हेबै। ई कोनो कवि नहि छथि, कहानीकार नहि छथि मुदा लेखक जरूर छथि। नेशनल बुक ट्रस्टके एकटा सीरीज छै प्रकाशन के India Land and People **भारत देश आ लोक** तै मे लगभग 300 पृष्ठ के एकटा किताब सुबोध जीक छपलैन अछि। अँग्रेजीमे छः मास पहिने आ ओकर हिन्दी अनुवाद सेहो छपि रहल छनि। अहाँ लोकनिके हुनकर वक्तव्य स' पता चलि चुकल होयत जे ओ कोन प्रकारक अध्येता छथि। सुबोध बाबू अहाँके विश्वास दियबै छी जे एहि बच्चा सबमे समर्पण बड्ड छै आ जोश सेहो। अहाँ अपन आशीर्वाद हिनका लेकनिके दियौन ई सब दीप जकाँ की धूपकाठी जकाँ जरिक' आ सुगन्धित क'क' सेहो देखा देता आ दीप जकाँ सेहो फैलतथि।

**प्रकाश :** धन्यवाद। आब हमरा सबहक बीच बैसल छथि पटना स' आयल संजीव मिश्र। संजीव नीक रंगकर्मी छथि। हमर आग्रह अछि पाँच मिनटसे समाप्त करथि। ●

## समीक्षा पढ़बाक आदति होमाक चाही

**संजीव मिश्र**

आदरणीय गुरुजन, साहित्यकार लोकनिके चरणस्पर्श। हमरा दू-तीन टा गप्प जे कहबाक अछि जे वक्ते लोकनि के बात स' उभरि क' आयल अछि। भ' सकैए हमर सबटा बात उल्टा दिशामे होयत। विभूति भैया कहलखिन जे नाटक, खेल, संगीत, सिनेमा नै छै तकर कारण की छै? हमरा जे लागि रहल अछि हमर सबके जे Social Structure अछि तैमे ओकर हिस्से नई छै। अगर नौ बजे तक रिहर्सल छै आ हम दस बजे घर पहुचै छी त' पहिने स' जूता खोलि लैत छी आ मानसिक रूपे तैयार रहैत छी जे पता नइ के केबाड़ खोलतथि पापा आ कि बड़ी दीदी आकि माँ; जूता पड़त की झाड़ू पड़त?

एखनो जे **समय साल** छपलैए ओकर कवर पर प्रतिभा पाटील के फोटो

छनि एक दिस आ दोसर दिस अर्द्धनग्न कोनो तस्वीर। हमरा त' ई नहि बुझा रहल अछि जे ओ सम्पादककी कह चाहै छथिन। एक तरफ नारी सशक्तिकरणक संदेश दैत प्रतिभा पाटीलक फोटो त' बुझायल मुदा ओ दोसर फोटो की कहि रहल अछि?

दोसर शैलू (शैलेन्द्र) भाई कहलखिन दृष्टिक बात। अगर शैलू भाई **प्रथम प्रवक्ता**मे छपै छथिन त' गौरीनाथ भैया के सेहो त' छपवाक चाही **अंतिका**मे। बच्चा जनमिते त' पानि नइ पिबै छै ओकरा आदति लगाब' पड़ै छै। ओहिना अहाँ लोकके आदति त' लगबियौ समीक्षा पढ़ैके, नाटकके भ' सकैए ओइ पर बढ़िया टिप्पणी आबय। चुँकि हम सब काज करै छियै त' कतौ ने कतौ त' अपेक्षा जरूर रहत अहाँ सबस'। एना त' नइ हेबाक चाही जे बस पानिएमे लाठी मारि रहल छी। रिकोगनाइज त' हेबाक चाही जे हम सब कोन काज क' रहल छी। पत्रिकामे एकटा **भंगिमा** आ दोसर **मैलोरंग** अछि। हँ ई बात छै जे **भंगिमा** पत्रिका कम स्मारिका बेसी अछि आ **मैलोरंग** के ई शुरुआत बढ़िया अछि। हम धन्यवाद दै छियैन **मैलोरंग** के जे ओ हमर सन युवा सबके मंच द' रहल छथि।

**प्रकाश : मैलोरंग** के अखन सामर्थ छल पत्रिका प्रकाशित भेल, भ' सकैए एहन हो जे हमरा समर्थ नहि होइ त' नहि क' सकब। बेसी अपेक्षा राखब त' दुःख हैत। (**गुंजन जी**प्रकाश हम एकटा बात कहब जे ई नीक बात अछि जे अहाँ अपन स्थिति स्पष्ट केलहुँ मुदा जहिया हमरा पता चलल जे अहाँ सबमे स' कियो अपन जन्मदिन मनेलौ आ **मैलोरंग** के जन्मदिन नइ मनेलियै त' ई ठीक नई हैत।) सर ओतेक त' अहाँ के विश्वास रखबाक चाही जे जन्मदिन की हमरा सब लेल यैह जन्मदिन छी हमसब कलाकार छी आ हमसब गोटे मिलक' एकटा नाटक क' लेब। एतेक विश्वास रखियौ (**गुंजनजी**-भ' गेल)। आब हमारा बीच काश्यप कमल छथि जे बहुत नीक नाटककार छथि आ **मैलोरंग**क उपाध्यक्ष सेहो। हुनकर लिखल नाटक **गोरखधन्धा** बहुत चर्चित छनि। काश्यप कमल जी। ●

# खेमाबाजी सँ बचबाक चाही

**काश्यप कमल**

धन्यवाद प्रकाशजी। एत बड्ड बात भेलै पत्रकारिताके ल' क' हम **नटरंग प्रतिष्ठान**मे छी जे एकटा थिएटर अर्काइव छै। जवाब हमरा ओत' थोड़-बहुत भेटल मैथिली स' संबंधि। जत' भारतके हर भाषाके पेपर क्लिपिंग्स छै, Information छै मैथिली के नाम पर किछ ने भेटत। जखन हम बड्ड तकलियै त' हमरा प्रकाश

जी के हाथ स' लिखल 2002 के चिट्ठी भेटल जै मे ओ **यात्री** के जानकारी पठौने छलखिन। जिम्मेवार के? कुणाल जी पटनामे एतेक काज क' रहल छथि कुणाल जी के जनै वाला? मलंगिया जी के बाद कुणाल जी के सेहो दक्षिण भारतक रंगकर्मी का समाज पूर्णरूपे नहि जनै छथिन, जिम्मेवार के? किएक त' हम सब अइ बातके Proper ducumentation नहि क'रहल छियै। गंभीरतास' नै लै छियै। पत्रकार लोकनि त' पहिने स' अपना आपके गौरी भाई जकाँ सुरक्षित केने छथि जे हमर एकटा सीमा अछि। संजीव जी ठीक कहलखिन अछि, **समय साल** के एकटा कॉलम अबै छै दिल्ली कार्यालय स' ओ कॉलम पढ़बै प्रायः घरमे ओ पत्रिका नहि राखि सकैत छी।'' बीसटा पत्रिका निकलै छै एक्कोटा नै चलै छै हिन्दीयो के बैह हाल छै मैथिली त' सद्‌हय। **अंतिका** अबैत अछि नीक पत्रिका अछि ओइमे कतेक जगह चाही नाटकक लेल ओहो त' रंगकर्मके स्थापितक' सकै छलैन। हमर एतेक आग्रह अछि जे Douemen-tation पर ध्यान दियौ। भारतक महेन्द्र मलंगिया नेपालमे स्थापित छथि मुदा एत?

एकरा अलावा अलग एकटा पहलू ई छै जे हम सब अइ एकटा खेमा के रूपमे बाँटि गेल छी। अइ पर हमरा ध्यान आयल **भंगिमा** के हालक अंक पढ़िक'? अरविन्द 'अक्कू' प्रतिष्ठित लोक, नाटककार, हुनकर लेख मिथिलामे नाट्य परम्परा पर छनि जे कत'-कत' नाटक होइए। ओइमे पटनामे नाटक होइए, दरभंगामे नाटक होइए, कलकत्तामे नाटक होइए जनकपुरमे नइ होइए, ई नाटककार छथि ओ नाटककार छथि महेन्द मलंगिया नहि छथि। (**ऋषि**-अई बातक चर्च कयल गेलनि त' कहलनि जे अइ स' पहिने मलंगिया जी के लेखमे हमर चर्चा नहि छल) वाह! खेमा मे छी। आग्रह हमर, हमरा जे लागल से हम कहलौं अर्थ पर ध्यान देबै। धन्यवाद!

**प्रकाश :** धन्यवाद कमलजी। एकटा बात हम अहाँ सबके आर कहि दी जे **नटरंग प्रतिष्ठान** के चर्च कयलथि तेँ कहै छी जे पाँच-छः साल स' संजीव भाई जुड़ल छथि। (संजीव स्नेही) हुनको ई जिम्मेवारी छलनि जे ओ ओकर Information दित 'थिन किएक त' ओ स्वयं रंगकर्मी सेहो छथि। पता नहि किए नहि देलथि। हमर त' एकेटा कहब अछि जे अन्दर स' ईमानदार भ' क' काज करबाक चाही, प्रेरित भ' क' नहि। जखन हम काज करबै त' धीरे-धीरे लोकके जानकारीओ लेबैए पड़तै। नीक कहलखिने अजित भाई त' ठीके महेन्द्र मलंगिया के त' ककरो काज नहि पड़लै किए बढ़ि गेलखिन। प्रेमलाता मिश्र जे रंगकर्मके पहिल महिला रंगकर्मी भेलखिन हुनका पर आइ तक बहुत रास चर्च कतौ ने देखने हेबैन, शर्मनाक स्थिति छै। एतेक लम्बा समय तक रंगमंच पर बितेलाक बाद जखन इज्जति नइ होइत छैक तखन,

नवकी के इज्जति के दैतै? आब हम सब समापन के दिस चली।

आब हम गुंजन जी स' आग्रह करबैन जे ओ आबथि आ अइ समारोहके सम्पूर्ण परिदृश्यके चर्च करैत समापन करैथ। ●

# केन्द्रीय सूचनाक केन्द्र बनै मैलोरंग

**गंगेश गुंजन**

असलमे अइ प्रकारक काज त' हमरा करबाक बहुत कम्मे अवसर अबैए। एकटा स्रोता जकाँ कहब कारणे एत' सब परिचीते छथि। सबमे एक गोटे अपरचित छथि प्रायः ओहो हमरा स' जेष्ठ नहि हेतथि। मैथिली साहित्य के नाटक एकटा उपविभाग भेलै। जँ मैथिली आन्दोलनके चर्च करी आ जहिया मैथिलीके शुरुआत भेल, हम जहिया स' जुड़लौं 1965 मे आकाशवाणी पटना स' जखन मैथिलीके मिश्रित कार्यक्रम शुरुआत भेलै तकर बाद जे हमर सफर शुरू भेल आ तकर बाद के जे हमर पूरा सफर अछि तै के बाद जे परिस्थिति सब भेलै ओहि बीजके गाछ आ पात जकाँ अइ गोष्ठीमे देख'मे आओल। पिछलो बेर किछु अनुभव भेल छल मुदा अइ बेर विशेष। हम बहुत सामाजिक आओर सामयिक दृष्टिकोण स' कहि रहल छी कोनो मैथिली वा हिन्दीके परिप्रेक्ष्यमे नै कहि रहल छी।

अहाँ लोकनि कृप्या हिन्दी आ मैथिलीके जे द्वेषात्मक जे संवाद अछि तकरा खत्म कयल जाउ, ओकर आइ कतौ स्थान नै छै। जे भेद छै से शौक्षनिक भेद छै? मैथिल अस्मिता जे छै तकरा कने परिभाषित करु। मैथिल अस्मिता आ हिन्दी अस्मिता, दरभंगा अस्मिता आ सहरसा अस्मिता ई की होई छै से हम नहि बुझै छी। देखू अहाँ लोकनि युवक छी हमर एकटा बनावट रहल अछि से एखन नहि जहिया हम युवक छलौ तहियो अहिना छलौ। हम जाहि परिवेशमे एलौ ओई परिवेशके हम दुलारू बनवैके प्रयास करै छी। ओकर बहुत कम बात हमरा खारीज करबाक मोन होइए। एतेक तक जे ओ हमरा खिलाफ काज करैए तैयो की। बादमे ओतै स' सम्मानो भेटल। आइ जे दिल्लीमे जे स्थिति छै प्रकाश स' हमरा चर्चो होइए। अहाँ चाही वा नै चाही आइ जे दिल्लीके वा समस्त भारतमे रंगकर्मके उत्तरदायित्व अहाँके लेब' पड़त ओ चाहे मैथिली हो वा अन्य। यदि हम कोनो कविता लिखब त' ओकरा **अंतिका** छाप' वा **समय साल**। ई नै हेतै जे अपन कविता हम ओकरा नै कहबै। अहाँ सब करू आ हमरा सबस' जे सहायता हैत से करब हमरा सबके अहाँ सब अरहाऊ हम करब मुदा ओकरा अहाँ ल' क' चलू। ई कहला स' प्रकाश अहाँके काज नहि चलत जे हमरा स' बेसी अपेक्षा नई

राखू। हम किए राखब, आ किए ने राखब मुदा जखन हम अहाँ के ओइ रूपे तैयार क' देब तखन राखब। कोनो बेटा जखन लोक बनबैए तखन ने ओकरा स' बेसी उम्मीद राखै छै। मानसिकता मे ढीलपन नई। ई अगिलो वर्ष अहाँ के करै पड़त आ हेतै। केन्द्रिय सूचना के अहाँसब श्रोत बनूँ। दोसरो भाषा भाषी के लेल सेहो।

एक आधटा जे मुहावरा आयल अछि जकर बहुत खराब अर्थ अछि जेना अहाँसब झंडा गाड़ब, एकर जे अभिव्यक्ति अछि ओ कुचलिक राजनीति अछि। मोमिन एकटा नीक शायर भेलथि उर्दूमे ओ लिखने छथि'मरचुक भी तूँ कहीं गमे हिजरा से छूट जाए, कहते तो हैं भले की वो लेकिन बुरी तरह।' जे कहै छियै बुरी तरह स' बचै के छै, ई एकटा तेहन जरूरत छै Communication मे हमरा अहाँके ओकरा स' बच' पड़त। जत' ऑपरेशन के प्रयोजन छै तखन ओत' त' ओ काज फूल स' त' करबै नै, ओत त' हेतै छुरीए चाकू स' मुदा ई काज सामाजिक कन्टेन्ट के हिसाब स' कर पड़त। रंगकर्म के जे दुनियाँ छै, ओकर जे कर्म छै, बनावट छै, ओइमे अहाँकें स्वयंके प्रशिक्षित कर' पड़त। जेना रंगपत्रिका छै ई अवधारणा एकटा नव अवधारणा छै। आब नव अवधारणा नाटकक पाठ्यक्रम भ' सकै छै, सांस्कृतिक पत्रिका क्या है? त' रंगपत्रिकारिता जे विभिन्न भाषाके विद्वान सब छथि, Communication पर काज क' रहल छथि, जे मिडिया पर काज क' रहल छथि हुनका हिन्दीएमे, अँग्रेजीएमे जकरा जेना होइ छै पासमे एक दिन या दू दिन बजा क' ओहीमे. ..जेना काश्यप कमल द' कहलौ त' हिनका प्रशिक्षित कयल जा सकै छनि। अहाँ अनका पर जे निर्भर करब आ जे अनकर खुसामद करब से किएक?

हमरा एकटा बात बड्ड खराब लागत जे प्रार्थना पर एकदम नई उतरु। अजित बहुत नीक बजला हुनकर ताप बुझैमे हमरा अबैए लेकिन जे ओ एकटा प्रार्थना छै से किए? हमरा सबमे एकटा मधुकर श्री रहथिन ओ कहथिन 'ओ शर्मा जी रखिएगा हाथी और जुतबाइएगा हल। त' रचनाकार जे होई छै से हाथी होइ छै ओकरा स' हर नइ जोताओल जा जकैत अछि। एखन जे संविधान स्वीकृतयोत्तर जे जागरूकता छै तकर बहुत पैध महत्त्व भ' सकैत छै। दोसर छै जे आलोचना स' डराइ नइ। हम ई देखलियैया जे आलोचना लोक कें गारि जकाँ बुझाइत छै साहित्य स' ल' क' कोनो काजमे, कोनो कलाकर्मी, कोनो श्रमसिद्धकर्मी कें।

हाँ! प्रकाश अहाँ एकटा दूत जकाँ रहबै सवंवादवाहक जकाँ। जे सर्वश्रेष्ठ व्यंजना छै ओकर जे गूढ़ अर्थ छै ओ जनसाधारणके भाषामे होइ। जनसाधारण के जोड़ै के अछि से सब ल' क' चल पड़त। आब अइ गोष्ठी के खत्म करु। प्रकाश अहाँ जे भार हमरा देने छलहुँ से हम ओइ रूपे त' नहि निमाहि सकलौ मुदा...हमर भाषा सेहो नै ओइ रूपे अछि तखन एक आध टा फ्रेम अहाँ जोड़ि देबै अपना दिस स'। परिचर्चामे विषय के ओ केना लेलनि आ बजलनि आ कतबा

की कहलनि से हुनकर सबहक अपन जिम्मेदारी छनि...आ आन्दोलनकारी रूप जे छै त' अहाँ जाबत धरि समकालीन समाजक सब वर्ग कें सहानभूति नै लेब आ संवाद अहाँके नीक नै रहत ताबत नइ हैत।

हमरा लोकनि त' आब बहुत पुराना छी पाकल आम छी। आब से जे होई आब त' अनुभवे आ बयसे हम सैह भेलहुँ। जेना कलहुका नाटक जे देखलहुँ से हमरा जे लागल तै पर हमहूँ लिखब। आब ओना त' लिखनाइ त' मुश्किल छै मुदा जखन सामाजिक रूप स' कहिए देलौं त' हम विशेष रूप स' हमरा जे लागल से लिखब समग्र रूप स'। रंग पत्रिकारिता के जे हमर अपन जे समझ अछि तै मे हमरा जे कतौ कमी लागले वा केनो विशेषता बुझेला नीक लागलए प्रस्तुति स' ल' क' शिल्प स' ल'क' तमाम रूपस' जे दुनू छै निश्चित रूप स'। अनादरित नैं क' सकै छियै ओकरा माने एखन धरि त' हम लिखबे नें केलहुँ अछि त' हम की कहब। हम कहै छियैन जे काश्यपे लिखौथ, शैलेन्द्र लिखौथ, परिवेश बनाऊ सदनशीलनता बनाऊ। उर्जा ठीक छै, क्रोध ठीक छै, युवा क्रोधित नै भेल त' की भेल मुदा ओकरा कने सरिया क' संयमित रूपमे समय स' विस्फोट ऐबाक चाही। माने असमय जे अहि ठाम फट्टका फोड़ि देलौ से नै। एकरा बयसक सलाह कही वा अनुभवक सलाह। बहुत बधाई, शुभकामना अहाँ सब जे ई काज क' लैत छी। रंगटोली **मैलोरंग** के जे क- लेलहुँ से निश्चित रूप स' बहुत आशा जगबै छै ठीक छै, एतबो रहतै त' बहुत छै, माने अई लेल कोनो असंतोषक बात नै छै धन्यवाद! शुभकामना। ●



*रंगमंच*

# फर्क छैक सरकारी आ गैर सरकारी रंगमंचमे

**नित्यानंद गोकुल**

प्रिय प्रकाश!

नाटक विभागमे कार्यरत एकटा राजकीय पदाधिकारी द्वारा सरकारी आ गैर सरकारी रंगमंच पर निबंध लिखनाई हमर इमानदारीके रेखाँकित त' अवश्य करत मुदा एतेक बेबाकीपूर्ण इमानदारीके स्पष्ट केनाई कतेक उचित छैकसे प्रश्न विचारणीय अछि।

मधुबनी सनक एकटा गाँवनुमा शहरमे रंगमंचक लेल संघर्ष केनाइ, एकटा रंगकर्मी रूपमे अपन पहचान बनेनाई, अपना जेबसँ पाई खर्च क' राजकीय स्तर पर नाटक समारोह करेनाई, ओइ समय (1990-95) मे सहज नहि छल। जखन कखनो नाटक लेल चन्दाक आवश्यकता पड़ैत छल त' किछु लोक त' सहर्ष दैत छलाह मुदा किछु कठकोकाँड़ि लोकक कहब छलनि"हे देखियौ पागल बूड़ि सभके ँ, नाटक लेल भीख मँगैत छथि, पढ़ता-लिखतासे नहि होइत छैन त' नाटक करताह।" चन्दाक लेल बहुत परिश्रम करी त' कुइथि-काइथ क' हजार रुपया जमा होइत छल। तखन एकटा तरकीब निकालहु। **जमघट** नाम सँ एकटा टीम बनले छल ओकरा भारत सरकारके गीत आ नाटक प्रभाग सँ पंजीकृत करेलहुँ। आई मे किछु कलाकार निःशुल्क श्रमदान केलनि। अई माध्यमसँ जखन पाई आब' लागल त' जनहितमे निःशुल्क नाटक समारोह होअ लागल। नेपाल, पटना, बेगूसराय, दरभंगा, कलकत्ता सँ नीक-नीक नाटक मंडली सब आबि-आबि क' मिथिलाक हृदय मधुबनीमे अपन-अपन प्रदर्शन करय लगलाह। जखन-जखन हमरा सबकेँ नाटक समरोह करबाक मोन हुए त' **जमघट** द्वारा प्रस्तुत सरकारी रंगमंचक पेमेन्टमे स' किछु जरती काटि-काटि क' जमा क' ली आ बिना

कोनो चन्दाके नाटक समारोह ठानि दी। मुदा जे सन्तुष्टि समारोहके नाटकमे होइत छल से सन्तुष्टि सरकारी रंगमंच पर नहि होइत छल, कियैक त' कलाकार एहि मंचके माध्यमसँ अपन व्यथा-कथाकेँ कहबामे पूर्ण समर्थ होइत छल, जखन कि सरकारी मंचके अपन किछु सीमा होइत छैक, सब बात आइ मंचसँ कहलो नहि जा सकै छैक। चूँकि हम दुनू सफर तय केने छी, दुनूक अनुभव हमरा मोनमे तीतल अछि। दुनू मंचक जे अनुभव हमरा मोनमे बीतल अछि तकरा फड़िछा क' कह' मे हमरा औखन अशोकर्य भ' रहल अछि। तकर कारण स्पष्ट अछि। की, एकटा सरकारी पदसँ सरकारी मंचक अभावके उजागर करबाक चाही? की, एहि पद पर रहैत गैर सरकारी रंगमंचमे हस्तक्षेप करक चाही? ई तखन संभव छल जखन हम सरकारी बंधनमे नहि रहितहुँ मुदा तैयो एकटा सुच्चा रंगकर्मीक नाते किछु त' कहबाके चाही।

देखू प्रकाश, ई त' सब जनैत अछि जे रंगमंचक प्रारम्भ राजघरानासँ भेल अछि। राजघरानासँ जखन रंगमंचके संरक्षण भेट' लगलैत' एहि कलाके विकासमे एकटा नवयुग आरम्भ भलैक। यद्यपि राजप्रासदक लोक एकरा मात्र मनोरंजनक साधन मानैत छलाह लेकिन एकर आइरमे कलाकारक कला ओकर जीवन-यापनमे दिनानुदिन विकास होयल लागल। यदि हम सब ओहि दिनक राजतन्त्रके आजुक सरकार मानी त' एहि विद्याक उत्पति सरकारी तंत्रके गर्भसँ मानल जा सकैत अछि। मुदा कइक वर्षसँ ई सवाल उठाओल जा रहल अछि जे “सरकारी मंचमे वो बात नहीं दिखती है जो बात गैर सरकारी रंगमंच में देखने को मिलती है। जितनी निष्ठा और इमानदारी के साथ लोग गैर सरकारी रंगमंच से जुड़ते चले जाते हैं। उतनी निष्ठा और ईमानदारी सरकारी रंगमंच के प्रति नहीं दिखती।” मुदा हमर कहब अकर विपरीत अछि। यदि सैह होइत त' 1954 मे संगीत नाटक अकादेमीक स्थापना नहि होइतइ, जकर माध्यमसँ राष्ट्रीय रंगमंचक अवधारणाकेँ सार्थक बल भेटलहि। अकादेमी देखते-देखते नाटय-संगोष्टिक आयोजन शुरूक' देलक जाहिमे विभिन्न भारतीय भाषाक नाटककार आ रंगकर्मी सम्मिलित भेलाह। सरकार जँ रंगमंचक विकासकेँ गंभीरतासँ नहि लइतई त' राष्ट्रीय नाट्य विद्यालयके पूर्ण स्वायत्तताक दर्जा द' राष्ट्रीय रंगमंचक विकास आ नव निर्माणक दिशामे महत्वपूर्ण डेग नहि उठाओल गेल रहैत। आइ संगीत नाटक अकादेमी, दिल्ली सब राज्यके संगीत नाटक अकादेमी आ राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय वर्ष भरि पूरा देशमे घूमि-घूमि क' रंगकर्मी सबके चुनब, हुनक प्रतिभाके निखारब आ हुनक क्षमताकेँ राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पहुँचेबाक लेल कतेको प्रकारक गोष्ठी, सेमिनार, वर्कशाप आ ट्रेनिंगक योजना बनाओल जा रहल अछि, जकर सार्थक आ सफल परिणाम हमरा सभहक सोझा अछि।

ऐतबे नहि गीत आ नाटक प्रभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकारक रंगमंचीय प्रस्तुति त' कतेको

लोक आई 50 वर्ष सँ देख रहल अछि हॉलहिमे मधुबनीक वाटसन स्कूलमे ध्वनि एवं प्रकाश कार्यक्रम **शतरूपा**क मंचन सात दिन भेल जकरा मधुबनीक आम लोक खूब प्रशंसा केलक। जँ एकर स्तरीयतयामे इमानदारी नहि रहितइ त' लगभग एक लाख लोक प्रशंसा नहि करितइ। एहि प्रकारक कतेको सरकारी रंगमंच एहि देशमे कार्यरत अछि जे बहुत सतर्कतासँ आ इमानदारी पूर्वक अपन कार्य करैत अछि चाहे ओ लखनऊक भारतेन्दु नाटक अकादमी हो वा विद्यालय आ विश्वविद्यालयमे पढ़ाबय बला नाटक विभाग, सब सरकारिए तंत्र छैक सभहक प्रस्तुतिके अपन-अपन ढंग छैक मुदा ककरो स्तर निम्न नहि कहल जा सकैत अछि।

रंगमंचकेँ सांस्कृतिक-सामाजिक जीवनक अमिट अंग मानल जाइत अछि, ई कलाक पहील पाठशाला थिक, एकरा पंचम वेद मानल गेल अछि मुदा जाहि तरहेँ एकर विकास होएबाक चाही से आइयो धरि नहि भ' सकल। जखन अइ ठाम 19वीं सदीक आधुनिक नाटक आरम्भ भेल त' रंगशालाक निर्माण प्रारम्भ भेल लेकिन आइयो अकर संख्या नागण्य अछि। दिल्ली, मुबंई आ कोलकाता सनक पैघ शहर छोड़ि देल जाम तऽ अधिकांश शहरमे एकर नितान्त अभाव अछि जकर नकारात्मक प्रभाव रंगकर्म पर बुझना जाइत अछि। गैर-सरकारी संस्था चाहियोक' एतेक अर्थक उपार्जन नहि क' सकैत अछि जे रंगशालाक निर्माण क' सकय। अइ लेल सरकारके आब' पड़तै।

गैर सरकारी रंगमंच द्वारा अर्थपूर्ण रंगकर्म करबएकटा पैघ चुनौती छैक जाहिमे पर्याप्त धनक आवश्यकता पड़ैत छैक से बिना सरकारी सहयोगक असंभव अछि। ऐहन स्थितमे रंगकर्मके बचाक' राखव असंभव नहि त' कठिन अवश्य अछि। तकला सँ प्रायोजक सब भेटत' जाइत छैक मुदा हुनक सबहक स्वाद विचित्रे बुझना जाइत अछि। हुनका सबमे गंभीरता कम फूहड़ता विशेष बुझना जाइत अछि। एहन स्थितिमे गंभीर रंगकर्मकेँ कतेक तरहसँ समझौता कर' पड़ैत छैक। आब रंगकर्मीकेँ मात्र रंगमंच पर निर्भर भ' क' रहनाइ असंभव बुझना जाइत छैन। करता की तऽ रेडियो, टेलिवीजन आ फिल्मक रास्ता ध' लेलनि। साँच पूछी तऽ गैर सरकारी नाट्य संस्थामे योग्य आ प्रतिभाशाली अभिनेता, लेखक आ निर्देशक छथि मुदा पैसाक लेल साबुनक प्रचारमे सब केओ व्यस्त छथि। हमरात' लगैये जे ऐहन स्थिति रहल त' आब' बला दिनमे गंभीर थिएटरक अकाल पड़ि जायत। इब्राहिम अलकाजी, शंभु मित्र, ब.व. कारंत, हबीत तनवीर, कर्नल गुप्ते, बिरेन्द्र नारायण, मोहन महर्षि, वेथीकोल, रंजीत कपूर, चितरंजन त्रिपाठी, प्रसन्ना, राजेन्द्र नाथ, रतन थियम सनक निर्देशक विलुप्त भ' रहल छथि संगहि रामगोपाल बजाजक स्थान पर रामगोपाल वर्मा आ जब्बार पटेलक जगह पर मधुर भण्डारकर नेने जाइत अछि। सब केओ रंगमंचे सँ सबकिछु सीख क' पहुँचलाह मुदा रंगमंचके छोड़ति किनको मोह नहि भेलनि। एहन लिस्ट रंगकर्मीक सेहो हमरा

लग अछि जे अपन जीवन रंगमंचसँ शुरू कयलनि मुदा सिनेमाक चकाचौंधमे रंगमंचके बिसरि गेलाह। धोखासँ ककरो यादो छैनि तऽ बस औपचारितावश!

कहक अभिप्राय जे रंगमंच एहन जीवंत कला छैक जे प्रतिदिन किछु नव अनबाक प्रयासमे लागल रहैत अछि। उदाहरणस्वरूप जँ कोनो एक नाटकके‍ँ स्थान परिवर्तन क' क' दोहरायल जाय तऽ किछु न किछु नयापन अवश्य भेटत मुदा फिल्म या टेलिविजन के रिपीट 'शो' मे किछु नयापन नहि भेटत मुदा तैयो आधुनिक रंगकर्मी एकर पाछाँ पागल छथि, एहन तरहक प्रवृत्ति भविष्यमे रंगकर्मके हानि पहुँचा सकैत अछि, जाहि दिस गंभीरतासँ ध्यान देनाइ अनिवार्य बुझना जाइत अछि।

प्रकाश! ई विषय तेहन ज्वलंत आ समकालीन अछि जाहि पर एकटा राष्ट्रीय बहस हेबाक चाही। एकर सहज निराकरण वा किछु ठोस निर्णय ल' क' किछु कहबामे मुश्किल भ' रहल अछि। मुदा एते कहमे कोनो हर्ज नहि जे फर्क होइत अछि सरकारी आ गैर सरकारी रंगमंचमे कतहु सकारात्मक त' कतहु नकारात्मक। परंच हमरा अहाँ सनक रंगकर्मीक लेल दुनू केँ ल' क' चलबेमे भलाई अछि। रंगकर्म सामाजिक जीवनक एकटा अनिवार्य हिस्सा थिक आ वैचारिक सहिष्णुता एकर पहील शर्त छैक, मुदा हमर सबहक समाजमे आइयो एकरा प्रति उदासीनता बनल अछि..."अरे ये क्या कर रहे हो.. .नाटक-वाटक छोड़ो यार"...अइ तरहक उदासीनताके हटाक' रंगकर्मके विकसित आ समृद्ध बनेबाक लेल, दलाने-दलाने सरकारी आ गैर सरकारी दुनू स्तर पर आन्दोलनक', एकटा वातावरणक निर्माण आवश्यक अछि जे नाट्य-मंचन, नाटय-समारोह आ दलाने-दलाने देश स्तर पर चौटरिया नाटक क' क' संभव अछि। तखने भारतीय रंगमंच चाहे ओ सरकारी हो वा गैर सरकारी एकटा सार्थक रूप ल' सकबामे समर्थ होयत। एखन बस एतबे, फेर कहियो...

अहाँक,
गोकुल भैया

9313098557

## गमैया नाटकक पलायन

**ऋषि बशिष्ठ**

'जेहन अन्न तेहने मोन' मैथिलीक ई प्रसिद्ध कहावत मिथिलाक गमैया रंगमंच आ दर्शक पर सेहो शत् प्रतिशत फिट्ट बैसैए। जतय एकदिस मिथिलांचलक गमैया दर्शक के नाटकक मूल्यांकन करबाक उचित अवगैति छैक ओत्तहि दोसर दिस नाटक देखबाक बदलल दृष्टिकोण एकर उचित मूल्यांकन नहि

क' पबैत अछि। एकरा लेल दोखी के? नाटक मंडली? नाटकक आयोजनकर्ता? आ कि दर्शक?

प्रश्न दिस ध्यान देला पर लोकक नजरि दर्शके दिस आबि क' केन्द्रित होयब लगैत अछि। नहि भाई, एना कोना हेतै? किछु दोख लोहाक त' किछु दोख लोहारोक त' मानियौ।

लोक एक्कहि साँसमे कहि दैत छथि जे सिनेमा हॉल आ टेलीविजन नाटक के नोकसानी पहुँचेलक अछि। मुदा बात एत्तहि तक त' नहि अछि। ओ जँ नाटक के नोकसानी पहुँचेलक त' नाटक की पहिनहि जकाँ अपस्थक बनल बैसल अछि? नहि यौ। आब तँ नित्यदिन नाटकोमे नव-नव प्रयोग भ' रहल अछि। नवका अभिनेता, निर्देशक आ प्रयोगकर्मी सब नाटककेँ सिनेमा सन अवस्थामे आनबाक प्रतियोगितामे छथि कोनो-कोनो रंगमंच पर तँ आगू अछि कारण ई जीबैत आ ओ मरल। आ जँ माता शेरावाली मंदिरक आगूमे स्वयं आबि ठाढ़ि होथि त' मन्दिरमे पाथरक मूर्ति के के देख' जायत? हमरा जनैत नाटकोक संग ठीक एहने बात होइत अछि। लोककेँ कलासँ प्रेम छैक। ओ अभिनय कलाके द्वारा अपन मनोरंजन चाहैए। जँ नाटक नहि भेटतै तँ की करत लोक? कोनो तरहक मनोरंजने सँ त' ओकर ई इच्छापूर्ण हेतै किने? बस ओ चलि गेल सिनेमाहॉल। नित्य नाटक देखेबाक लेल कोनो नाटकघर तँ छैक नहि? पेटक भूखल लोकके लाखे भात खयबाक इच्छा होई, आ भात नहि भेटतै तँ ओ अन्ततः रोटियो सँ त' अपन पेट भरिये लेत। भुक्खल किन्नहुँ नहि रहत। आब गमैया नाटकमे सेहो परिवर्तन होयबाक चाही। ओ समय बिति गेल जहिया लोक निच्चाँमे बैसि क' नाटक देखबाक आनन्द लैत छल। आब फुलपैंटक जमाना छैक आ निच्चाँमे उकड़ूँ भ' क' बैसत त' ओ नाटक देखबाक लेल गम्भीर कोना रहत? ओकरा त'कखनो एम्हर नोचतै त' कखनो ओम्हर ससरतै।

एखनुक परिवेशमे गामोक नाटकमे दर्शकके बैसबाक लेल उचित व्यवस्था होयबाक चाही। तकरा संग-संग गामक नाटकमे आरो कैकटा बातके ध्यान रखबाक चाही। गाममे मंचन होबय वला नाटकक विषयवस्तु सेहो हल्लुक हेबाक चाही। भाषा एहेन सरल आ सहज जे सहजहिँ निरक्षरों लोकके बुझबामे आबि जाइ। डायलॉग छोट हेबाक चाही। कथावस्तु त' ओकर अपन हेबाके चाही जकरा देखतहि ओ नाटक के अपन समाजक घटना मानि लिए। संगीत पक्षक महत्व त' सबतरि एके रंग अछि ओ जतबे महत्वपूर्ण शहरी लोकक लेल ततबे ग्राम समाजक लेल सेहो। एतेक मसालाक बाद नाटकमे जँ नव तकनीक सबहक प्रयोग कैल जाइए त' ओ नाटक अवस्से जनमाजुगाइत धरि लोक मोन राखत।

एखन धरि गाममे नाटक करब लोक बड़ आसान बुझैत रहल अछि। जँ कहियौ जे एकटा नाटकमे महीनो लगै छै त' पट द' जवाब भेटत-

"एह! बड़का नटकिया भेलाह अछि। दू दिनमे त' तेहन नाटक हेतै जे की कहियह?"

नाटकक पाठ याद कर' पड़त।

"एह, भ' जेतै की! खाली कनियें पाछु सँ लाइन धरादिह'।"

तखन गामक नाटक के जमबाक कल्पने कोना करै छी बाबू? ओ जे बड़का-बड़का महारथी सब मासक-मासक तैयारी करैत छथि तिनका सबके की पतिया लागल छनि?

नाटकक विषयवस्तु कतबो बढ़ियाँ होबय जँ ओकर प्रस्तुति ढंगसँ नहि भेल तँ दर्शक ओकर सन्देश किन्नहु नहि बुझत। एक बेर नाटकक दृश्य आ फेर एकटा नटुआक नाच। एहन मे लोक कथीक आनन्द लेत? नाटकक की नाचक? गामघरमे अधिकांशतः एहने होइत अछि। नाटक सफलता दिस बढ़ैत रहत। दर्शक नाटकमे उबडूब करैत रहत जेना आब ओ नाटकक धारमे डूम्मी काटहिवला अछि कि बस्स...। नाटकक ओ सीन खतम भेल आ उद्घोषक आविक' नाच प्रस्तुत करबाक लेल उद्घोषणा करताह। एहिसँ की भेल? सबटा कयल-धयल गेल पानिमे। आब दर्शक फहड़ मिजाज भ' गेलाह। आब फेर कलाकार कतबो एड़ी-चोटी एक करताह ओहन गंभीर चिन्तनमे दर्शकके नहि ल' जा सकैत छथि।

ई सब कमी देहातमे नाटकक प्रस्तुत कर्त्तामे होइत छनि, जकरा कारणेँ नाटक जमि नहि पबैए। आ नाटक जे नहि जमलै तकरा लेल नाटकक प्रस्तुतिकरणके दोखी नहि मानि सबटा छाड़ा-भाड़ दर्शकक कपार पर पटकि देल जाइत अछि। अहिना धीरे-धीरे गाम घरसँ नाटकक जेना पलायन होबय लागलै! पहिने कोनो शुभ अवसर पर आ कि पूजापाठमे गामघरमे नाटकक मंचन होइत छल। सब गाममे अपन नाटक मंडली होइत छलैक। खूब जुटिक' सब तैयारी करैत छल आ उमंगसँ नाटकक मंचन होइत छलै। ओहि नाटकमे नीक भूमिका करयवलाके समाज आदरभावेँ देखैत छल। ओना गामक समाज नाटक करयवलाके नीक नजरिसँ एखनो नहि देखैत अछि मुदा एहन दृष्टिकोण समाज व्यावसायिक नटकियाक सम्बन्धमे बनौने अछि। ओना नाट्यकला के बढ़ावा देब'मे खाली व्यावसायिके मंच नहि शौकिया रंगमंचक सेहो कमटा योगदान नहि छैक। नाटक करयवला लोकक प्रति गामक पुरुष समाजक दृष्टिकोण भले खराप होइन स्त्री समाज धरि नाट्यकर्मीकेँ अन्तर्मनसँ पसिन्न करैत छथि। ओना गामक स्त्री समाजमे एखनो ओहन हिम्मति नहि अयलनि अछि जे ओ सोझाँ-सोझी कलाकारके प्रोत्साहितक' सकथि। नाट्यकला आ कि रंगकर्मीक अभिनय-कलाक बदौलतिक एक ठाम ओ अपनाके सम्हारि नहि सकलीह अछि।

गामधरक स्त्री समाज नाटकक पात्रमे असली पात्रक दर्शन करैत छथि। जेना गामघरमे रामक भूमिका करयवला आदमी कतबो खराप हो स्त्री समुदाय ओकरामे साक्षात् रामभगवान दर्शन करैत छथि आ तेँ ओ ओकरा अभिनय पर मोहित भ' जाइत छथि।

गमैया नाटककेँ दुबरेने खाली मंचने प्रभावित भेल अछि से बात नहि।

नाटकक लेखन सेहो कम प्रभावित नहि भेल अछि। किछु नाटककार जे नाटक लिखब शुरुह केलनि त' कनिके दिनक बाद बाट बदलि लेलनि। आ नाटकके शहरी परिकल्पना दैत लिखय लगलाह।

किछु लगारी नाटककार धरि एकरा पकड़ने रहलाह। आ गामघरमे जँ ककरो नाटक करबाक अवसर भेटलनि त' हुनका किछु-किछु पोथी भेटैत रहलनि। ओना मिथिलांचलक उत्तरी भागमे दुइये चारि टा नामी नाटककार छथि। नव नाटककार एहि विधामे लिखबके खतरनाक बुझैत छथि।

मिथिलावासी आब रेडिमेडके अभ्यासी भेल जा रहल छथि आ इएह कारण थिक जे नाटकक जगह पर ऑर्केस्ट्रा होबय लागल अछि। अपन लोकनाट्य आ लोककथाक माँग शहरमे बढ़ि रहल अछि ओतय ओ हमर सबहक परिचायक बनि रहल अछि मुदा ओकर सोइरी घर सुन्न मसान भेल जा रहल अछि। जँ लोककथा आ नाट्यके गामक संरक्षण खतम भ' जेतै तँ ई त' भारी नोकसानी होयत। एकरा लेल हमरा सबके गम्भीरता सँ सोचबाक चाही। हमरा सबहक लोककथाक बलेँ बम्बईक सिनेमावला सब पाई हिलोरि लैत अछि आ हमसब अपन संस्कृतिके अबडेरने जा रहल छी।

मुदा एना कतेक दिन? जँ किछु नव नहि होबय तँ कम सँ कम ओतबोक संरक्षण त' होयबाके चाही। तँ एकबेर फेर सँ डाँड़ के सक्कत क' क' नव-नव तकनीक आ प्रयोगक संग नाटकक मंचन गाम-गाममे होयबाक चाही। आ सब शुभ अवसर आ पूजापाठमे नाटकक मंचनके परम्परा स्थापित होयबाक चाही। एहि सँ नाटकेटाक भलाई नहि होयत, कलाकारक प्रतिभामे सेहो निखार आयत आ नव-नव कलाकारक उदय सेहो होयत। तकरा संग-संग गमैया नाटकक पलायन रूकत आ आने व्यावसायिक मंडली जेकाँ गमैयो नाटक मंडली सब प्रतिष्ठा पाओत। ●

---

09835074308





# ज्योतिरीश्वरक सखी वर्ण्णना

**महेन्द्र मलंगिया**

पूर्णिमाक चान्द अमृत पूरल अइसन मुह। श्वेत पङ्कजकाँ दल भ्रमर वयिसल अइ।सन आँषि • काजरक कल्लोल अइसन भऊह • गथले फुले नर्म्मदाक शलाका पूजल अइसन षोम्पा • परवाक पल्लव अइसन अधर • कनिअर।क कर अइसन नाक • सीन्दुर मो।ति लोटाएल अइसन दान्त। वेतक साट अइसन वाँह • पारिजातक पल्लव अइसन हाथ • छोलङ्ग छोलल अइसन पयोधर • काँञ्चिवर्ली अइसन आगक (= आङ्क) वान • उद्भरू (= डमरू?)। (18ख) क माझा अइसन वेकण्ड • काकहक को × × अइसन जाँघ × विकशित स्थलपद्म अइसन चरण • सर्व्वगुण संपूर्ण उपालम्भ • विनोद मंडन • संगमशिक्षा • वीराभ्यास • छओ ये सखीक धर्म्म तँ कुशल • नायिकाक दोसर शरीर अइसन × श्यामाजाति सखी॥ अपर : प्रकार : 11 सहजन्या • चित्रलेखा • धृताची • उर्व्वशी • मेनका • रम्भा • तिलोत्तमा • देवजानी • इ ये आठओ नायिका अथिकह सेहओ मन्दि होथि जकरे रूपे • पुनुं कयिसनि नायिका • कामदेवक नगर अइसन शरीर। निष्कलङ्क चान्द अइसन मुह • कन्दल खञ्जरीट अइसन लोचन। यमुनाक तरङ्ग अइसन भऊह • साँकरक शलाका अइसन नाक • सोनाक सी।प अइसन कान • अन्धकार लता अइसन विरनी • पाकल वि [ ं ] व अइसन अधर • सहजेँ दालिव फुटल अइसन दान्त • कामदेवक पाश अइसन वाह • निलहि (? लोहित) पद्म अ।...

[20 क] [ख] ञ्जरीटयुगलप्राय लोचन • वक्र वलित घन • श्यामदीर्घ • कन्दर्पकोदण्ड प्राय भ्रुयुगल • चतुरस्त्र, चतुरङ्गूल • कनकपट्टिका सुन्दर • निराल सफुर • सरल • सदृश • [सि] न्दुर दन्ति (=ण्डि) कालङ्कृत सीमन्त • सुरभि • स्निग्ध • प्रचुर • घन • कुञ्चित • सुकुमार • सूष्म • श्याम

मै
ली
रं
ग

अंक 2
मई-अगस्त
आ
अंक 3
सितम्बर-दिसम्बर
2008

• सुसंयत • सकुसुम केशपाश • सुशीला • लज्जावती। ××विलासवती • गौराङ्गी • चन्द्रमुखी • गीतप्रिया • मधुरस्वरा • शिल्पवकृ (ह) (= 0 वती, वक्त्री) • मृदुभाषिणी • कलावती • कृष्णदेहा • चित्रवसना • अङ्गारागवती • ब्रीलायुता • सर्व्वा [ङ्ग] । संपूर्ण चित्रिणी जाति नायिका॥ ॥ अपरः प्रकारः ॥ स्वर्ग • मर्त्त्य • पातालक सौन्दर्य एकजाति नायिका बड़े • प्रणिधाने विधाताहुँ नायक स। × ×एकेँ अपूर्व्व विश्वकर्म्मात्रेँ निर्म्मउलि याक मुखक शोभा देषि पद्मेँ जलप्रवेश कएल • आँषिक शोभा देषि हरिण वण गेल • केशक शोभा देषि चमरी प

[20 ख] [लायन कए] ल • दाँतक शोभा देषि तालिवेँ हृदय वीदीर्ण कएल • अधरक शोभा देषि प्रवाल द्विपान्तर गेल • काँनक शोभा देषि वौद्ध ध्यानस्थित भेल • कण्ठक शो।भा दे]षि कम्बु समुद्रप्रवेश कएल • स्तनक शोभा देषि चक्रवाक उछन्न भेल • वाहुँयुगलक शोभा देषि पञुक नाल पङ्कनिमग्न भेल • हाथक शोभा देषि।×××क पल्लव ग्रस्त (? त्रस्त) भेल • जंघयुगलक शोभा देषि कदलीँ विपरीतगति कइलि • चरणक शोभा देषि स्थलकमलेँ निकुञ्ज आश्रय कएल • एवम्विध। ××× संयुक्ति त्रिभूवनमोहिनी देषि॥ अपरः प्रकारः॥ कन्दलित तारूण्य • अपगत वाल्य • उद्भूत अभिलाष • अपगति लज्जा • जागरूक भाव • अङ्कुरित। ××× एवम्विध नायिका • कुण्डल दुइ रत्नमण्डित त (क) राँ कान कइसन देषु • । जनि कामदेवकाँ रथँ चक्रदुइ जोलूल अछ • सोनाक डोरेँ मध्यभाग बाँधल कइ

[21 क] सन • देषु • जनि सौन्दर्यक तुलापुरुष काछल बाँधल अछ • विचित्राम्बर फुरुहुरा कइसन देषु • जनि काञ्चनगिरिकाँ शृङ्ग मयूर नचइतेँ अछ • नूपुर दुइ शब्दा। यमान ताकाँ कइसन देषु • जनि त्रिभूवनमोहिनी मन्त्र जपइतेँ अछ। शोभा • विलास • भाव • हाव • गीत • नृत्य • वाद्य • विनय • शील • आवर्ज्जन • पेश। लता • रूपातिशय • लज्जा • त्रयोदसगुणे संयुक्ति भद्राजाति नायिका देषु॥

॥ इति श्री कविशेषराचार्य ज्योतिरीश्वरविरचिते वर्णरत्नाकरो [0 रे नायिका वर्णनाम] नाम द्वितीय कल्लो ः॥

## शब्दार्थ

पूर्णिमाक चान्द अमृत[1] पूरल अइसन मुह = पूर्णिमाक चन्द्रमा सन अमृतस्रावी मुह।

श्वेत पङ्कजकाँ दल भ्रमर वयिसल आँषि = उज्जर कमलदलपर बैसल भ्रमर सन आँखि।

काजरक कल्लोल अइ। सन भञुह = काजरक तरंग सन भौंह।

गथले फुले नर्म्मदाक शलाका[2] पूजल अइसन षोम्पा = मालासँ पूजल गेल नर्मदा क्षेत्रक कारी शिवलिङ्ग सन खोपा।

परवा (परवाल)क[3] पल्लव अइसन अधर = नवांकुर प्रवाल (मूँगा) सन ठोर।

कनिअरक कर[4] अइसन नाक = कनकचंपाक कऽर (फुलएबसँ पूर्वक अवस्था) सन नाक।

सीन्दुर मोति लोटाएल अइसन दान्त = सिन्दुरमे लेटाएल मोती सन दाँत।

बेतक साट अइसन बाँह = बेंतक सट्टा सन बाँहि।

परिजात पल्लव अइसन हाथ = पारिजातक पल्लव सन हाथ।

छोलङ्ग[5] छोलल अइसन पयोधर = छोलल (सोहल नहि) नारंगी सन स्तन।

काँञ्चिवरली[6] अइसन आग (आंग)क वान = काँचक बड़ेरीसन शरीरक काट।

उद्भरू (डमरू)क माझा अइसन वेकण्ड = डमरूक मध्य भाग सन डाँर।

काकहक को ×× अइसन जाँघ×[6] (काहारक कोकवा अइसन जाँघन) = कहारक बाँस सन जाँघ।

विकसित स्थलपद्म अइसन चरण = विकसित थलकमल सन पाएर।

सर्व्वगुण संपूर्ण = सर्वगुण संपन्न।

उपालम्भ = अनुभव।

विनोद = मनोरंजन।

मंडन = शृंगार।

संगम = रति क्रिया।

शिक्षा = ज्ञान संचय।

वीराभ्यास = साहसी काजमे अभ्यस्त।

छओ ये सखीक धर्म्म तँ कुशल = छवो जे सखीक धर्म अछि ताहिमे कुशल।

नायिकाक दोसर शरीर अइसन = नायिकाक प्रतिमूर्ति सन।

श्यामा[8] जाति सखी = तप्त सोना वर्णक सखी।

अपर : प्रकार : = अन्य प्रकारक।

सहजन्या = आठ अप्सरा नायिकामेसँ एक।

चित्रलेखा = आठ अप्सरा नायिकामेसँ एक। (चित्रलिखित भौंहबाली)

धृताची = आठ अप्सरा नायिकामेसँ एक।

उर्व्वशी (उर्वशी) = आठ अप्सरा नायिकामेसँ एक। (ई पुरुरवाक पत्नी बनलीह
आ आयुस् नामक पुत्र उत्पन्न कएलीह।)

मेनका = आठ अप्सरा नायिकामेसँ एक। (ई शकुन्तलाक माता छलीह)

रम्भा = आठ अप्सरा नायिकामेसँ एक। (केराक थम्हसन जाँघबाली)

तिलोत्तमा = आठ अप्सरा नायिकामेसँ एक। (ब्रह्माण्डक सब उत्तम पदार्थसँ निर्मित)

देवजानी = आठ अप्सरा नायिकामेसँ एक। (गंधर्व विद्यामे निपुण।)

इ ये आठओ नायिका अथिकह = ई जे आठो नायिका छथि।

सेअहो मन्दि होथि जकरे रूपे = सेहो मन्द होथि जकर रूपे।

पुनु कइसनि नायिका = फेर केहन नायिका?

कामदेवक नगर अइसन शरीर = कामरूप सन शरीर अर्थात् मोहित कर' बाला शरीर।) एहीठाम कामदेव अपन रूप प्राप्त कएने छला हा तेँ कामरूप कहल गेलैक। लोककथन अछि जे एहिठामक युवती लोककेँ भेड़ा बना लैत छलैक अर्थात् अपन रूपजालमे फसा लैत छलैक।

निष्कलङ्क चान्द अइसन मुह = दागरहित चन्द्रमा सन मुह।
कन्दल खञ्जरीट अइसन लोचन = कनक दलपर बैसल खंजन पंछी सन आँखि।
यमुनाक तरङ्ग अइसन भउुह = यमुना नदीक तरंग सन भौंह।
साँकर (शांकर)क शलाका अइसन नाक = माटिक महादेवक ऊपरका भागसन नाक।
सोनाक सीप अइसन कान = सोनाक सितुआ सन कान।
अंधकार लता अइसन विरनी = अन्हारक लत्ती सन जुट्टी।
पाकल विंब अइसन अधर = पाकल तिलकोरक फरसन ठोर।
सहजेँ दालिव फुटल अइसन दान्त = सहजहिं पाकिक' फुटल दाड़िमक दाना सन दाँत।
कामदेवक पाश अइसन वाह = कामदेवक डोरी सन बाँहि।
नीलहि (नीहन्) पद्म अइसन हाथ = कमलो पराजित होअबाला सन हाथ।...
**(20 नम्बरक पात खंडित अछि।)**
खञ्जरीट युगलप्राय लोचन = आँखि प्रायः युगल खंजन पंछी सन।
वक्र वलित[9] = मोड़ल जकाँ टेढ़ (धनुषाकार)।
घन = घनगर।
दीर्घ = लम्बा।
कन्दर्प कोदंड प्राय भ्रुयुगल = कामदेवक धनुष समान प्रायः दुनू भौंह।
चतुरस्त्र = चौकोर।
चतुरङ्गुल = चारि आंगुरक।
कनकपट्टिका[11] = कपार।
सुन्दर = आकर्षक।
निराल = स्वच्छ।
सफुर = चकचक।
सरल = सरल रेखा समान।
सिन्दुर दन्ति = दाँतक आकारमे माँथक केशसँ कनेक बढ़ल सिन्दूर।
कालङ्कृत सीमन्त = टटका कएलगेल मांग विन्यास।
सुरभि स्निग्ध = तेलसँ सुवासित।
प्रचुर घन = पर्याप्त घनगर।
कुञ्चित = घुमल।
सुकुमार = मोलायम।
सूष्म (शुष्म) = चमकदार।
श्याम = कारी।
सुसंयत (सुसंगत) = सीटल, बान्हल।
सकुसुम = फूलसँ युक्त।
केशपाश = केशक लट। (एहिठाम केश कलाप)
सुशीला = सोझ हृदयबाली।
लज्जावती = लज्जाशील।
××(नम्र) = विनीत।
विलासवती = कामुक।
गौराङ्गी = गोर अंगबाली।
चन्द्रमुखी = चन्द्रमा सन मुहबाली।
गीतप्रिया = गान-बजानक शौखीन।
मधुरस्वरा = मधुर स्वरबाली।
शिल्पवकृ (शिल्पवक्तृ) = पटुतासँ बाज'बाली।
मृदुभाषिणी = मधुर वचन बाज'बाली।
कलावती = गीति, हाव, भाव, विलास, किलकिञ्चित क्रिया आदिमे निपुण, शोभायुक्त

कृष्णदेहा[12] = ऋतु, माल्य, अनुलेपन, अलंकार आदिमे निपुण।

चित्रवसना = छीट वस्त्र धारण कर'बाली।

अङ्गरागवती = अंगलेपनमे निपुण।

ब्रीलायुता (लीलायुता) = केलि-क्रीड़ामे दक्ष।

सर्व्वा [ङ्ग] (सर्वाङ्ग) संपूर्ण चित्रिणी जाति नायिका = सब अंगसँ संपूर्ण (सब विशेषतासँ पूर्ण) चित्रिणी जाति नायिका। (कामशास्त्रक अनुसार चारि प्रकारक नायिकामेसँ एक।)

स्वर्ग-मर्त्स-पातालक सौन्दर्य एकजाति नायिका = नायिकामे जेना स्वर्ग, पृथ्वी, आ पातालक सौंदर्य एकत्रित भ' गेल हो।

वडे प्रणिधाने विधाताहुँ नायक स××एकेँ अपूर्व्व विश्वकर्माञेँ निर्म्मउलि (वडे प्रणिधाने विधातहु नायक सरूप एकेँ अपूर्व विश्वकर्माञेँ निर्म्मउलि) = नायिकाद्वारा बहुत भक्ति कएलापर नायक सदृश अपूर्वरूपक निर्माण विश्वकर्मा कएलनि।

याक मुखक शोभा देषि पद्म जल प्रवेश कएल = जिनकर मुहक शोभा देखि कमल जलक भीतर गेल।

आँषिक शोभा देषि हरिण वन गेल = आँखिक शोभा देखिक' हरिण वन गेल।

केशक शोभा देषि चमरी पलायन कएल = केशक शोभा देखि चमरी गाय भागि पड़ाएल।

दाँतक शोभा देषि तालिवेँ (दालिवेँ) हृदय वीदीर्ण कएल = दाँतक शोभा देखि दाड़िमक हृदय विदीर्ण भ' गेल।

अधरक शोभा देषि प्रवाल द्विपान्तर[13] (द्वि द्वीपान्तर) गेल = अधरक शोभा देखि प्रवाल दुनू द्वीप सँ अन्यत्र चल गेल।

कानक शोभा देषि बौद्ध ध्यानस्थित भेल = कानक शोभा देखि बौद्ध ध्यानस्थ भ' गेलाह।

कण्ठक शोभा देषि कम्बु समुद्र प्रवेश कएल = कण्ठक शोभा देखि शंख समुद्र मे प्रवेश कएलक।

स्तनक शोभा देषि चक्रवाक उछन्न भेल = स्तनक शोभा देखि चकवा उजड़ि गेल।

वाहुँयुगलक शोभा देषि पञुक नाल पङ्कनिमग्न भेल = दुनू बाँहिक शोभा देखि कमल नाल (डंटी) पाँकमे निमग्न भ' गेल।

हाथक शोभा देषि ××× (पवरा) क पल्लव ग्रस्त भेल = हाथक शोभा देखि पाकड़िक पल्लव वेवश भ' गेल।

जंघयुगलक शोभा देषि कदलीँ विपरीत गति कइलि = दुनू जाँघक शोभा देखि केराक थम्ह अपन गति विपरीत कएलक।

चरणक शोभा देखि स्थलकमलेँ निकुञ्ज आश्रय कएल = चरणक शोभा देखि थलकमल लतागृहक आश्रय लेलक।

एवम्विध रत्ना ××× (रत्नालंकार) संयुक्ति त्रिभुवन मोहिनी देषु = एवं प्रकारे रत्नालंकारसँ संयुक्त त्रिभुवनकेँ मोहित कर' बाली सखीकेँ देखू।

अपर : प्रकार : = अन्य प्रकार।
कन्दलित तारुण्य = स्वर्णिम यौवन आएल।
अपगत वाल्य = बचपना छुटल।
उद्भूत अभिलाष = मनोकामना जागल।
अपगति (उपगति) लज्जा = लाजक ज्ञान भेल।
जागरूक भाव = भाव जागल (प्रेम जागल)
अङ्कुरित ××× (विकार) = वासना अंकुरित भेल।
एवम्विध नायिका = एहि प्रकारक नायिका।
कुण्डल दुइ रत्नमण्डित तकराँ कान कइसन देखू = दूटा रत्नमंडित कुंडल कानमे केहन देखू ?
जनि कामदेवकाँ रथ चक्र दुइ जोलूल अछ = जेना आँखिक कोर (कामदेवक रथ) सँ दुनू चक्र जोड़ल अहों।
सोनाक डोरेँ मध्यभाग वाँधल कइसन देषु = सोनाक डरकससँ बान्हल डाँर केहन देखू?
जनि सौन्दर्यक तुलापुरुष काछल बाँधल अछ = जेना सौन्दर्यक प्रतिमा धोतीक ढड्डासँ बान्हल हो।
विचित्राम्बर फुरुहुरा कइसन देषु = छीट वस्त्रक फरफराहट केहन देखू?
जनि काञ्चनगिरिकाँ शृंग मयूर नचइतेँ अछ = जेना कांचन गिरिक शिखरपर मयूर नचैत हो।
नूपुर दुई शब्दा यमान तकाँ कइसन देषु = तालमे सशब्द आ निःशब्द क्रियासँ कालक माप केहन देखू ?
जनि त्रिभुवनमोहिनी मन्त्र जपइतेँ अछ = जेना त्रिभुवनमोहिनी मंत्र जपैत हो।
शोभा = सुंदरता।
विलास = सुखभोग (कामकेलि)
भाव = मनक विकार।
हाव = आकर्षित करबाक चेष्टा।
गीत = गान।
नृत्य = ताल एवं लयक आधारपर अंग संचालन (नृत्य)।
वाद्य = बाजा।
विनय = नम्रता।
शील = व्यवहार कुशल।
आवर्ज्जन = गठल शरीर।
पेशलता = कोमलता।
रूपातिशय = अत्यधिक रूपवती।
लज्जा = शर्मीलापन।
त्रयोदस गुणे संयुक्ति भद्रा जाति नायिका देषु = तेरह गुणसँ संयुक्त भद्रा जातिक नायिका देखू।

(इति श्री भ्रमवश लिखा गेल अछि। किएक तँ द्वितीय कल्लोलक अन्त नायिकाक हास्य वर्णनाक बाद होइत अछि। संगहि उपर्युक्त वर्णन नायिकाक नहि, नायिकाक सखीक वर्णन अछि।)

## भावार्थ

नायिकाक श्यामा जातिक जे सखी छनि तिनकर मुह चन्द्रमाक समान अमृत स्रावी छनि। आँखि दुनू लगैत छनि जेना उज्जर कमलदल पर दूटा भ्रमर वैसल हो। भौंह बूझि पड़ैछ जेना जलमे उठल काजरक तरंग हो। खोपामे माला लगैत छनि जेना

नर्मदा क्षेत्रक शिवलिङ्ग मालासँ पूनल गेल हो। नवांकुर प्रवालसन ठोर छनि। कनक चंपाक कऽर सन नाक छनि। दाँत लगैत अछि जेना सिन्दुरमे लेटाएल मोती हो। बेंतक सट्टा सन बाँहि छनि। पारिजातक पल्लव सन हाथ छनि। छोलल (सोहल नहि) अनार सन स्तन छनि। शरीरक काट ओहिना बूझि पड़ैछ जेना काँचक बड़ेरी हो। नितम्ब तथा स्तन पुष्ट रहबाक कारणेँ डाँर लगैछ जेना डमरूक मध्य भाग हो। कहारक बाँस सन रोलल जाँघ छनि। विकसित थलकमल सन पाएर छनि। एहि तरहें ‘ओ सर्वगुण संपन्न छथि।

अनुभव, मनोरंजन, शृंगार, रतिक्रिया, ज्ञान संचय तथा साहसी काज जे सखीक छवो धर्म अछि ताहिमे कुशल छथि। देखलासँ बूझि पड़ैछ जेना नायिकाक प्रतिमूर्ति होथि।

श्यामा जातिक सखीक बाद जे दोसर सखी छथि तिनका रूपक सोझाँमे सहजन्या, चित्रलेखा, धृताची, उर्वशी, मेनका, रम्भा, तिलोत्तमा, देवजानी जे ‘अष्ट अप्सरा नायिका’ छथि सेहो मन्द पड़ि जाइत छथि।

फेर ओ केहन नायिका छथि? कामरूप सन (कमनीय) शरीर छनि। दाग रहित चन्द्रमा सन मुह छनि। कनक दल पर बैसल खंजन पंछी सन आँखि छनि। यमुना नदीक तरंग सन भौंह छनि। माटिक महादेवक ऊपरका भाग सन नाक छनि। सोनाक सितुआ सन कान, अन्हारक लत्ती सन जुट्टी, पाकल तिलकोरक फर सन ठोर, सहजहिं पाकिक’ फुटल दाड़िमक दाना सन दाँत तथा कमलो पराजित होअबाला सन हाथ छनि।

(20 नम्बरक पात खंडित अछि। तेँ ई नहि निर्णय भ’ सकत जे ई कोन प्रकारक सखी छथि आ कोन प्रकारक गुण छनि।)

आब जे सखी छथि तिनकर आँखि बूझि पड़ैछ जेना युगल खंजन पंछी हो। भौंह मोड़ल जकाँ टेढ़, धनगर, लम्बा छनि जे कामदेवक धनुष समान बुझना जाइछ। कपार चौकोर आ चारि आंगुरक छनि। आकर्षक, स्वच्छ, चकचक, सोझ, सिंदुरदन्ति तथा टटका मांग विन्यास छनि। तेलसँ सुवासित, पर्याप्त घनगर, घुमल, मोलयम, चमकदार, कारी, सीटल, फूलसँ युक्त केश छनि। ओ सीधा, लज्जाशील, विनीत, कामुक, गौरांगी, चन्द्रमुखी, गान-बजानक सौखीन, मधुर स्वरबाली, पटुतासँ बाज’ बाली, शोभायुक्त, कृष्णादेहा, छीट वस्त्र धारण कर’बाली, अंग लेपनमे निपुण, केलि-क्रीड़ामे दक्ष आदि गुणसँ युक्त छथि। एहितरहें ओ सभ अंगसँ पूर्ण चित्रिणी जातिक नायिका छथि।

नायिकाकेँ देखलासँ बुझना जाइछ जेना स्वर्ग, मर्त्य आ पातालक सौंदर्य एकठाम जमा भ’ गेल हो। नायिकाद्वारा बहुत भक्ति कएलापर नायक सदृश अपूर्व रूपक निर्माण विश्वकर्मा कएलनि जिनकर मुहक शोभा देखि कमल जलक भीतर चल गेल। आँखिक शोभा देखि हरिण जंगल चल गेल। केशक शोभा देखि चमरी गाय पलाएन कएलक। दाँतक शोभा देखिक’ दाड़िमक हृदय विदीर्ण भ’

गेलै। दुनू ठोरक शोभा देखिक' प्रवाल दुनू द्वीपसँ अन्यत्र चल गेल। कानक शोभा देखि बौद्ध ध्यानस्थ भ' गेलाह। कण्ठक शोभा देखि शंख समुद्रमे प्रवेश कएलक। स्तनक शोभा देखि चकवा उजड़ि गेल। दुनू बाँहिक शोभा देखि कमलनाल पाँकमे निमग्न भ' गेल। हाथक शोभा देखि पाकड़िक पल्लव वेवश भ' गेल। दुनू जाँघक शोभा देखि केराक थम्ह अपन गति विपरीत कएलक। चरणक शोभा देखि थलकमल लता गृहक आश्रय लेलक एवं प्रकारे रत्नालंकारसँ संयुक्त त्रिभुवनकेँ मोहित कर'बाली सखीकेँ देखू।

अन्य (चारिम) प्रकारकस्वर्णिम

यौवन आएल बचपना छुटल। मनोकामना जागल। लाजक ज्ञान भेल। प्रेमक भाव जागल। वासना अंकुरित भेल। एहि प्रकारक नायिकाक रत्नमण्डित कुण्डल दुनू कानमे केहन लगैछ? जेना आँखिक कोर (कामदेवक रथ)सँ दुनू चक्र जोड़ल हो। डाँरमे सोनाक डरकस केहन लगैछ? जेना सौंदर्यक प्रतिमा धोतीक ढड्ढासँ बान्हल हो। छीट वस्त्रक फरफराहट केहन लगैछ? जेना कांचन गिरिक शिखरपर मयूर नचैत हो। तालमे सशब्द आ निःशब्द क्रियासँ कालक माप केहन लगैछ? जेना त्रिभुवनमोहिनी मंत्र जपैत हो।

सुन्दरता, सुखभोग, मनक विकार, ककरो आकर्षित करबाक चेष्टा, गान, नृत्य, वाद्य, नम्रता, व्यवहार कुशल, गठल शरीर, कोमलता, अत्यधिक रूपवती, शर्मीलापन आदि तेरह गुणसँ संयुक्त भद्रा जातिक नायिका देखू।

## पाद टिप्पणी

1. चन्द्रमाक चान्दनीकेँ अमृत कहल जाइछ। अतः जहिना पूर्णिमाक चन्द्रमा अमृतस्त्रावी अछि तहिना श्यामाजाति सखीक मुह छनि। देखल जाएगीत गोविन्द काव्यम्, याख्याकार : आचार्य शिव प्रसाद द्विवेदी, चौखम्बा, सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, पृ. सं. 298।
2. नर्मदा नदीक बहाव ओहि पहाड़ी क्षेत्र बाटे छैक जाहि क्षेत्रमे कारी पाथर सब पाओल जाइछ। अतः नदीक प्रवाह ओहि पाथरकेँ घसि-घसिक शिवलिङ्गक रूप द' दैत अछि। तेँ ज्योतिरीश्वर नर्मदाक शलाका कहलनि अछि।
3. आनन्द मिश्र तथा गोविन्द झा पाबरा रूपमे शुद्धक' क' अर्थ स्पष्ट कएलनि अछि, मुदा हमरा जनैत 'परवा' में 'ल' छुटल अछि। एहन छूट कतेकों ठाम पाओल जाइछ। आव परवालक अर्थ भार्गव आदर्श हिंदी शब्द कोशमे मूँगा (प्रवाल) देने अछि। अतः परवालक पल्लवक अर्थ नवाँकुर मूँगा अछि जे बहुत लाल होइछ। संगहि बहुतो कविलोकनि ठोरक उपमा प्रवालसँ कएलनि अछि।
4. उपर्युक्त विद्वान द्वय 'कर'केँ फर क' देलनि अछि आ नाकक उपमा कनैलक फरसँ देलनि अछि। हमरा जनैत कर अपना स्थानपर ठीके अछि जे फुलएबासँ पूर्वक स्थिति बोध करबैत अछि। फेर ओही शब्दकोशमे कनियारक अर्थ कनकचम्पा देने अछि। अतः सखीक नाक (अविकसित) कनकचम्पाक फूल सन छनि।

5. मानक हिंदी शब्दकोशमे छोलङ्गक अर्थ नेबो देने अछि। आब नेबोक प्रजातिमे नारंगी, समतोला, जमीरी नेबो, कागजी नेबो तथा टाभ नेबो अबैत अछि। समतोलाक ऊपरका भाग चापत होइत छैक। एही कारणेँ पृथ्वीक तुलना समतोलासँ अस्वीकृत क' देल गेल अछि। तखन स्तनक तुलना समतोला आ ओहूमे सोहलसँ कोना कएल जाएत ? अतः सखीक स्तन छोलल (सोहल नहि) नारंगी सन छनि।
6. विद्वान द्वय 'काँञ्चिवरली' केँ काँच वरड़ी क' क' अर्थ कमलबीज देलनि अछि आ आंगक वानकेँ अंगक वर्ण क' देलनि अछि। संगहि संपूर्ण अर्थ एना प्रस्तुत कएलनिअङ्गक वर्ण (आंगक बान) काँच बरड़ी (कमल बीज) सन छनि। एहन अर्थ उपयुत नहि लगैत अछि। किएक तँ ज्योतिरीश्वर रूपक चर्चा कएलनि अछि, रंगक नहि। दोसर जँ श्यामा जाति सखीक वर्णे मानि लेल जाए तँ ओकर वर्ण भट्टि काव्यमे एना देल गेल अछि। तप्त कांचनवर्णा भासा स्त्री श्यामेति कथ्यते (518) अर्थात् तपाएल सोना सन वर्णक स्त्री केँ श्यामा कहल जाइछ। अतः एकर अर्थ एना होएबाक चाहीसखीक शरीरक काट (आंगक वान) काँचक बड़ेरी (काँञ्चि वरली) सन छनि। याद कएल जाए 'वान-काट'।
6. 'काकहक को ×× अइसन जाँघ ×' केँ काञ्चीनाथ झा 'किरण' अपन काव्यशास्त्रीय अध्ययनमे को तथा जाँघक बाद क्रमश. दूटा आ एकटा अक्षर लुप्त अछि ताहिपर कोनो विचार नहि क' क' काकहक (कटहरक) को अइसन जाँघ मानि लेलनि अछि। (पेज न. 199)। की, एना माननाइ आ जाँघक तुलना कटहरक 'को' सँ करब हास्यास्पद नहि बुझना जाइछ? हँ, पेज न. 6 मे ओ इहो शिकाइत करैत छथि जे पोथीमे बड़ अशुद्धि छैक। एहना स्थितिमे एकर शुद्ध रूप प्रस्तुत करबाक चाहैत छलनि। काहारक बाँस मोटगर रोलल, रहैत छैक तेँ ज्योतिरीश्वर ओहि बाँससँ सखीक जाँघक तुलना कएलनि अछि।
8. श्यामाक सम्बन्धमे वामन शिवराम अप्टे संस्कृत-हिन्दी शब्द कोशमे भट्टि काव्यक एकटा पाँती प्रस्तुत कएलनि अछि तकरा देखल जाएतप्तकांचनवर्णाभ सा स्त्री श्यामेति कथ्यते अर्थात् तप्त कांचन समान वर्णवाली स्त्रीकेँ श्यामा कहल जाइछ।
9. सांकरक अर्थ विद्वान् द्वय चीनी कहलनि अछि आ ओकर शलाका, माने गुलाब छड़ी। अतः सखीक नाक गुला बछड़ी सन छैक। एहन उपमा उपयुक्त नहि बुझना जाइछा। सांकर में तालव्य 'श' होएबाक चाही। एहि तरहें शांकरक अर्थ शंकर संबंधी भ' जाइछ। अत' सखीक नाक माटिक महादेवक ऊपरका भाग सन छनि। ई भाग ने बेसी मोट आने बेसी पातर होइत छैक।
10. विद्वान द्वय वक्र आ वलितक अर्थ अलग-अलग टेढ़ तथा ऐंचल जनौलनि अछि जे स्थिति केँ स्पष्ट कर' मे दुनू शब्द एकेठाम टकराइत अछि। तेँ वक्र वलिततक अर्थ धनुषाकार रूपमे टेढ़ बुझल जएबाक चाही।

11. कनकपट्टिकाक अर्थ विद्वान द्वय कनपट्टी लगौलनि अछि जे कोनो माने नहि रखैत अछि। किएक तँ चौकोर आ चारि आंगुरक गुण कपारेक होइछ। इहो दुनू कानक मध्यमे पट्टिए जकाँ रहैछ। एहीपर सिन्दुरदन्ति (दाँत आकारक सिन्दुर) नमड़ाओल गेल अछि। अतः कनक पट्टिका विशेष अर्थ में कपारे समीचीन बुझना जाइछा।

12. शृंगार रसक वर्ण श्याम होइत अछि। एहि रसक चरितार्थ कर'बाली सखी ऋतु, माल्य, अनुलेपन, अलंकार आदिमे निपुण होइछ। एकरे उद्दीपन विभावसँ संभोग शृंगार उत्पन्न होइत अछि। अतः कृष्णदेहाक अर्थ कारी नहि, बल्कि ऋतु, माल्य, अनुलेपन, अलंकार आदिमे निपुण बुझल जएबाक चाही। (भरत को नाट्यशास्त्र, गोविन्द प्रसाद) भट्टराई, नेपाल राजकीय प्रज्ञा-प्रतिष्ठान, पेज न. 88 मे देखल जाए।

13. 'अधरक शोभा देषि प्रवाल द्वीपान्तर गेल'क अर्थ होइछ-एक द्वीपसँ दोसर द्वीप चल गेल। मुदा अधर एकेटा नहि, दूटा अछि। जहिना प्रवालद्वीप समानान्तर रहैछ तहिना इहो सामान्तर अछि। तेँ द्वि द्वीपान्तर द' क' भाव स्पष्ट कएल गेल अछि। एहने सन तुलना बाण भट्टक कादम्बरीमे सेहो भेटैत अछि-अभिनव यौवन क्षोभितस्य रागसागरस्य तरङ्गभ्यामि वोद्‌गताभ्यां विदुमलता लोहिताभ्याम। अर्थात् अभिनव जवानीरूपी पवनसँ उद्वेलित रागसमुद्रक मूँगाक लतासँ लाल भेल, उठैत दूटा तरंग सदृश दुनू अधर सुशोभित भ' रहल अछि।

●

---

09835096116



# माँगनक ठाठ

**मिथिला विभूति संगीत शिरोमणि माँगन खबासपर विशेष**

**ओमप्रकाश भारती**

विस्मरण आ ओकर विस्थापनक पेट सँ उपकल भावनात्मक क्षतिक परिणाम भोगैत, महानगरक मनुखक मध्ये हमरा मोन पड़ैत अछिमाँगन खबास।

महानगरक बिर्रोमे हमरा मोन पड़ैत अछिराजाक ड्योढ़ी, बरहकेसी रानीक ठुठ्ठी पाखैरक गाछ, माँगन खबास, ननैद-भौजाइक पोखैरिक खिस्सा-पिहानी। गाम घर बहियारमे, पलखैतमे गैबार-भैसवार सँ बेर-बेर एहि सभ खिस्सा पिहानी के सुनि क' विविध आयाम भेटैत छल। सब किछु बुझैत-गुनैत उच्चारैत छलहुँ। नै बुझबामे अबैत छल माँगन खबासक घुरची। हमरा गाम सँ सटल पंचगछिया टिसनक काली पूजा मेलामे सरौनिक लखना नटुआ जखन छपरैहा धून पर कमर मटकबैत-लचकबैत गबैत छल ''बाबू दरोगाजी कौने कसुर हो पियबा बान्हल मोर...।''

मरर बीच्चेमे आपेक्ष करैत''आहा'' बिगैड़ गेलौ, बिगैड़ गेलौ! कनेक माँगनक ठाठ दहक।'' नटुआ बजनियाके कानमे फुसकी सँ ''नालके पखावज अंगक ठेका दियौ'' और कारनेट बला सँ''कनेक शहनाइक टोन दियौ।''...नटुआ ठेहुनिया दय, डेढ़ हाथक घोघ तानि मंच पर बैस गेल। कारनेट आओर नालक संवेत धुनपर दुनू हाथसँ घोघके उठबैत''बा'' बू'''...दा''रोगा'...जी'''...।'' आइ! गोसांई मरर हरबाही पेनाके हाथमे लय दरोगाक भावमे दर्शकक बीच ठाढ। अद्‌भुत जुगलबन्दी! बिजलौका!!थईह-थईह भ' गेल। चारि पाँच दिन धरि गाम-घरमे गोसाई मड़रक प्रसंग चर्चामे रहल। स्कूल पर माहटर साहेब कहैत सुनल गेल''की पूछसि अनुभव मोहे...मन तिरपित नहि भेल।'' बयस के हिसाबे हमहूँ एहि घटनाक नामकरण कयलहुँमाँगनक ठाठ!

मैलोरंग

अंक 2
मई-अगस्त
आ
अंक 3
सितम्बर-दिसम्बर
2008

गाम सँ सहरसा, सहरसा सँ पटना आओर चाकरीक फेरमे दिल्ली ठाहर भेल। महानगरक गर्दम गोलमे माँगनक ठाठ स्मृति सँ बिला गेल। कमानी प्रेक्षागृह दिल्लीमे प्रसिद्ध तबला वादक पं. किशन महाराज बनगामक एकटा संगीत सभाक संस्मरण सुनैबाक मध्ये जखन माँगनक उल्लेख कयलनि, छिरपिट्टी लागि गेल। मनेमन कएक बजार खसलौं। क'त' तँ पदम् विभूषण पं. किसान महाराज आ क'त' बाबुआन टोलक निरक्षर श्री गोसाई मड़र। परतीत नहि भेल। अपन गाम घर आ स्मृति सँ जुड़ल शबद पहिल बेर अंतरराष्ट्रीय ख्याति व्यक्तिसँ सुनि मोन भीज गेल। अपन अस्तित्वक अहसास भेल।

संयोग कहू जे एहि घटनाक बाद गजेन्द्र नारायण सिंह (संगीतविद्) अभय नारायण मल्लिक (अमता घराना दरभंगाक प्रसिद्ध ध्रुपर गायक), प्रो. चंडेश्वर झा सँ भेंटक दौरान माँगन ठाठक विस्तार भेल।

घर मुँहाँ भेलहुँ। पटना, सहरसा, गाम कतहुँ माँगनक स्मृति शेष नहि भेटल। गोसांईं मड़र रहलाह नहि। आजुक नटुआ सभकेँ माँगनक गीत नहि अबैत अछि। माँगनक एक मात्र शिष्य योगेन्द्र नारायण यादव जीवैत छथि हुनका सँ आ आर किछु बूढ़ पुरान सभसँ जे किछु सुनलहुँ बुझलहुँ सभकेँ जोड़ि माँगनक विषयमे किछु कहबसे अहि प्रकार अछि

बीसम शताब्दीक अंतिम दशककेँ कोनो साल, महीना आ दिन सहरसा जिलाक पंचगछिया गाममे माँगनक जनम भेल। बाप सर्वजित कामति, पेशा खबासी आ चाकरी। बचपन गाय-भैंसक चरबाहीमे बीतल। स्कूलक मुँह कहियो नै देखलक। अखियाससँ अक्षर ज्ञान मात्र पैने छल।

पंचगछिया ब्रिटिश भारतक अंतरगत एकटा छोट स्टेट छल। राय बहादुर प्रियवत नारायण सिंह एहि स्टेटक जमींदार छल। आदरबस लोक सभ हुनका राजा साहेब सेहो कहैत छलथि। राय बहादुर प्रियवत नारायण सिंहक घर दुइ गोट गुणआगर पुत्रक जन्म भेल। बड़का राय बहादुर लक्ष्मीनारायण सिंह आ छोटकाक नाम योगेन्द्र नारायण सिंह रहैन। लक्ष्मीनारायण सिंह संगीत आ साहित्यक अनुरागी छलाह। गायन, वादन आ नृत्य विधामे ओ प्रवीण छल। कहल जाइत अछि जे मृदंग आ हारमोनियममे हिनक जोड़ नहि रहनि। संगीतक शिक्षा पंडित विश्वनाथ पाठक सँ भेटल रहै।

लक्ष्मीनारायण जीक दरबार संगीत आ विद्याक चर्चाक कारणें देश भरिक राजबारा सभहक बीच प्रसिद्ध छल। हुनका समयमे पंचगछियामे नियमित संगीत सभाक आयोजन होइत छल जाहिमे जयपुर, बनारस, दिल्ली, आगरा, पटियाला, ग्वालियर आ रायपुर घरानाक कलाकार सभ नियमित रूपसँ अबैत छल। लक्ष्मी बाबूक गोतिया रहैन ब्रह्मनारायण सिंह। ब्रह्म बाबू संस्कृत विद्याक उद्‌भट्ट विद्वान। हुनक दरबार विधानुरागी आ तार्किक सभसँ भरल रहैत छल। माँगनक बाबू सर्वजित मूलतः ब्रह्मनारायण सिंहक ओत' चाकरी करैत छल से माँगनो ब्रह्मनारायण सिंह ड्योढ़ीक टहल-टिकोरा करैत छल।

लक्ष्मीनारायण सिंह आ ब्रह्मनारायण सिंहक बीच जमींदारी बटबाराक कारणें किछु खटास रहैत छलै। ई खटास खबास आ नोकर चाकरक बीच सेहो तीतफरी बनि गेल छल।

एहि प्रसंगक विराम एतहि करैत आब पुनः माँगन लग चलैत छी। एक दिनक घटनालक्ष्मीनारायण सिंह भोरक बेर संगीतक अभ्यास करैत छलाह। माँगन बह्मबाबूक आँगनमे बरतन-बासन मँजैत छल। लक्ष्मी बाबूक गायकीक संगे माँगन बरतन मँजनाइ छोड़ि आ थारी बजा रागक अनुसारे थाप दियै लागल। पहिले तँ' लक्ष्मी बाबू केँ कनेक उबैन लगलनि मुदा किछुए कालक बाद हुनका माँगनक थापक रस भेट' लागल। ओ खबासके बजा पुछलनि जे ई थपकी के दैत छल। माँगन हाजिर कयल गेल। लक्ष्मी बाबू अचम्भित! ''गीत सिखब?'' डर सँ हदसल बच्चा थरथराइत ठोस सँ बजलै ''हँ''। आ यैह "हँ" माँगनक जीवनक राग बनि गेल। आब ओ परसरमाक संता नटुआक छकड़बाजी नाचक दलमे शामिल होयबाक विचार छोड़ि देलक आ संगीतक अपार सागरमे डुबि गेल। लक्ष्मी बाबूक आश्रयमे माँगनक प्रतिभा छिटकै लागल। कनेक दिनमे माँगनक गायकीक इजोतसँ सम्पूर्ण मिथिलांचल प्रदीप्त भेल।

माँगनक संगे हुनक गायकी सेहो जवान भेल। अजगूत रूप छँटा। दकदक लाल गोर वरन, औंठिया केश, बंहिगा सनक मूँछ, दुरहा आ छरहर बाँहिएहने किछु पंचगछियाक लोक सभ देखने छल माँगन केँ।

लक्ष्मीनारायण सिंहक संरक्षणमे पंचगछिया इस्टेटक प्रतिनिधि गायकक रूपमे माँगनक ख्याति चहु दिस पसरै लागल। लखनऊ, बनारस, ग्वालियर आदिक संगीत समारोहमे माँगनक कीर्ति आ प्रतिभाक चर्चा भेल। कहल जाइत अछि जे लखनऊमे 1930 मे एकटा संगीत समारोहक मध्ये उस्ताद फैयाज खाँ आ माँगनक बीच मौन स्पर्धाक स्थिति आबि गेल छल। फैयाज साहेब गायकीक बोल रहै''फूलबन की गेंद न मैका मार''। माँगन एहि पद केँ ओही रागमे जाहिमे खाँ साहेब गौने छल, गयलनि। महफिल मुग्ध भ' माँगनक पक्षमे भ' गेल। स्वयं खाँ साहेब माँगनके आलिंगन कय सराहना कयलनि। लक्ष्मी बाबू मुदित भेलनि। अपन संगीत साधनाक पौनघीके माँगनक रूपमे फलतै-फुलतै देखलनि। मुदा, ई सभ बेसी दिन नहि चलि सकल। ब्रह्मबाबू केँ नै देखल गेलनि। गोतिया डाह निकालबाक एहिसँ नीक अवसर फेर कहिया भेटतनि। ओ सफल भेलाह। माँगनसँ कनफुसकी केलनि जे एहि छोट ड्योढ़ीके छोड़ि दरभंगा महाराजक ओत' चलू, राज गायक बनबाय देब। माँगनो लोभा गेल आ ब्रह्म बाबूक संग दरभंगा चलि आयल। लक्ष्मीबाबू माँगनक एहि आचरण सँ मर्माहत भेलनि।'' ...ओ दरबारी सभकें बजाय कहलनिजे ''हमर अर्थी उठबाक बादे, माँगनके पंचगछिया आबै दिहें'' एहिना घटित भेल।

माँगनक दरभंगा जेबाक प्रसंग कनेक घुरची लागल अछि। ब्रह्मबाबू माँगन के पहिले दरभंगा नहि ल' जाय,

कलकत्ता ल' गेलनि। महाराजक छोटे भाय विश्वेश्वर सिंह **दरभंगा** सँ किछु गायक सभके ल' कय **अखिल भारतीय संगीत सभामे** भाग लेबाक लेल कलकत्ता स्थित कोठीमे ठहरल छलाह। संगमे पं. रामचतुर मल्लिकक पिताजी **राजीत राम शर्मा मल्लिक** सेहो छलाह। यैह राजीत मल्लिक मिथिलाक अमता घराना ध्रुपद गायकीक जनम देनिहार छल। माँगनक भेंट राजीत मल्लिक सँ भेल। मल्लिकजी माँगनक प्रतिभासँ अभिभूत भेलाह। खबरि विश्वेश्वर सिंह लग पहुँचल। दरभंगा कोठीमे माँगलक गायन राखल गेल। माँगन दरभंगा महाराजक राज गायक नियुक्त भेलाह। दरभंगाक रामबाग आ बादमे बेला महलके उतर पोखरिक पछबरिया मोहारपर माँगनक लेल आवास बनल। ब्रह्मबाबू अभिभावक भेलाह। पाँच सौ टाका प्रतिमाह तलब। माँगनक संग बालमकुन्द झा (तबलची) आ बटुक झा (हारमोनियम वादक) सेहो रहैत छलाह। माँगनक गायकीक इजोतसँ सौंसे भारतमे दरभंगा राज्यक नाम दमक'लागल।

काठमाण्डूमे युद्ध शमशेर राज **अन्तर्राष्ट्रीय संगीत सम्मेलनक** आयोजन कयलनि। एहि सम्मेलनमें पं. विष्णु दिगम्बर पलुस्कर आ पं. ओंकारनाथ ठाकुर आमंत्रित छल। दरभंगा महाराजक प्रतिनिधिक रूपमे माँगन सेहो आमंत्रित छल। एहि दंगलमे माँगन नव आ अपेक्षाकृत कम वयस्कके छल। विश्वेश्वर सिंहके आशंका रहै, कत'ई ओंकारनाथ ठाकुर सन साधल सक्खर गवैया आ कत' माँगन सन युवक कहीं लज्जित नहि होमय परय। मुदा सम्मेलनक केन्द्रमे माँगनक गायकीक चर्चा रहल। अन्तिम दिन ओंकारनाथ ठाकुर कहलनिहमरा गायकीमे **वाह** अछि, मुदा माँगन के सुनि **आह** बहराइत अछि।''

ई सभ बेसि दिन नहि चलि सकल। राजकीय संरक्षण आ वातावरणमे माँगन के घुटन बुझाबै लागल। गाम बेरि-बेरि मोन पड़ै। एहि बीच लक्ष्मीबाबू सेहो सिधारि गेल। गुरुके बिछोहमे माँगन मर्महत भेल; राजाकें दिससँ दस तरहक बंदिशऐने नहि जाऊ, ओने नहि गाबू। अंततः गाम जैबाक मोन बनोलनि। आवेदन कयलनि। छुट्टी नहि भेटलहि। राजाक दिससँ अठारह सौ टकाक अग्रिम कर्ज देल गेल, ई सोचिके कि जखन धरि करजा सधत नहि माँगन दरबार नहि छोड़ि सकत। औने पंचगछियामे लक्ष्मीबाबू पौत्रक वियाह छल। माँगनके वियाहमे एयबाक न्योता भेटल, आब की पूछाताछी ताक पर, माँगन घरमुँहा भेल।

पंचगछियामे माँगनक स्वागत भेल। ड्योरीक कोयली फेरि कुहके लागल। कनेक दिनमे माँगन दरभंगा प्रसंग सभ बिसुरि गेल। ब्रह्मबाबूक फाँस फेरि जकैड़ि लेलनि। मुदा, गायकी फेर आरंभ कयलनि। इहो कहल जाइछ, जे **शारदा संगीतालय,** कदम कुंआ, पटनामे किछु दिन प्रशिक्षक सेहो रहलनि। चम्पानगर, पूर्णिया के दशहरा मेलामे प्रतिवर्ष अवश्ये जाइत छल। एहि मेलाक आयोजक श्यामानंद सिंह संगीतक रसिक आ साधक छलाह।

1941 मे **अखिल भारतीय संगीत सम्मेलनक** आयोजन रायगढ़मे भेल। देशक नामी-गवैया संभक संग माँगन सेहो आमंत्रित छल। माँगनक गायकी सँ

मुग्ध/मुदित भ' रायगढ़ नरेश, माँगनसँ रायगढ़ राज्यक राजगायक बनबाक आग्रह कयलनि। माँगन मानि गेलाहा पाँच सौ रुपया प्रतिमाह आ रहबाक लेल राजमहलमे घर आ मोटरगाड़ी माँगन के देल गेल। छः मास बीतल नहि एतहु उएह गप्प-ओतय नहि जाऊ...ओकरा नहि सिखाऊ माँगन फेरि राजकीय संरक्षणसँ बिचलित भ' गाम हियोलक। रायगढ़ नरेश निहोरा करैत रहलाह, माँगन पंचगछिया धुरि आयल।

1944 में संगीत सम्मेलन गयाक लेल माँगनकें न्योता आयल मांगन विचलित भ' गेल छलाह। खासके राजकीय संरक्षणक घुरची आ पंचगछिया ड्योढ़ीक आपसी कलहके कारणें माँगनक मोन फाटि गेल रहै। ब्रह्मबाबू सदिखन मांगन पर दाबी रखैत छल। हुनकर कहब छल जे ''हमरे कारण माँगन।''

माँगन गया संगीत सम्मेलनमे जयबाक न्योता घुरा देलक। हुनकर मोन रहै कि वैद्यनाथ धाम जाय। ब्रह्मबाबूक मोन रहै गया चलू। कतौ नहि गेल। माँगन बेराम पड़ि गेला।

ओतय दरभंगामे विश्वेश्वर सिंह माँगनक आचरणसँ क्रुद्ध भेलाह। कचहरीमे नालिस भेलै। माँगन पर अठारह सय टका ल' के दरबारेए' भगबाक लांछन सिद्ध भेल। कार्तिक पूर्णीमा वर्ष 1944 सामा चकेवा पावैनक दिन माँगन अपन प्रिय शिष्य उपेन्द्र प्रसाद यादवके गोकोरामे माथ राखि जीवन सँ मुक्त भ' गेलाह। माँगनक देहान्तक खबरि सुन संगीत जगतमे उदासी आबि गेल। पंचगछियामे **सामा चकेबा** नहि खेलल गेल, चुल्हि नहि जरल। गयाक संगीत समारोहमे माँगनके श्रद्धांजलि दैत मौन राखल गेल। माँगनक पुत्र लड्डूलाल माँगनक देहान्तक खबरि ल दरभंगा महाराजक ओतय पहुँचल, महाराजके भेलनि जे माँगन स्वयं अयबामे संकोच करैछ, एहि लेल लड्डूलाल के भेजने अछि; लड्डूलान दरबारमे हाजिर भेल महाराज मांगनक समाचार पुछलनि। लड्डूलाल फफैक उठल। गरदैनक उतड़ी देखबैत कहल जे माँगन नहि रहलाह। दरबार स्तब्ध आ शोकाकुल। विश्वेश्वर सिंह माँगनक जे बीच जे कोटक डिग्री भेल छल, ताहि कागजके मंगाय दरबारमें फाड़ि देलनि। श्रद्धाक हेतु पाँच सय टाका नकद देलनि।

कहल जाइछ जे आइ जे विद्यापति गायनक पद्धति प्रचलित अछि, ई संगीत मँगनक देन छी। हिन्दुस्तानी शास्त्रीय गायनमे ठुमरी आ ख्यालमे माँगनक जोड़ नहि छल। माँगनक शिष्यमे दुर्गादत्त झा, गणेशकान्त ठाकुर, धर्मदेव सिंह, पुनो पौद्दार, अधिकलाल पौद्दार आ उपेन्द्र प्रसाद यादव के प्रसिद्धी भेटलनि। पंचगछियामे नहि लक्ष्मी बाबूसन संगीतक रसिक रहलनि, नहि माँगन सन गवैया। हँ, गामक पूवरिया गाछीमे कोइलीसँ अहाँ सुनि सकै छी माँगनक ठुमरी''बिकल सैंया करि गयो मोरा जियरा।' मुदा बहिर समाजके किछु नहि सुनायत अछि। आइ मांगनक स्मृति मिथिलामे कतहु नहि भेटत।

धन्य अछि हमर मैथिल समाज!

---

*0364-2590319*
*01202633539* •





# एखनहु प्राकृतिके रंगसँ चित्र बनबैत छी : गोदावरी देवी

**तारानंद वियोगी**

आइ, मिथिला पेंटिंगक विश्वविख्यात कलाकार गोदावरी दत्त (राँटी) संग गप-सप भेल। जिला प्रशासन, राज्य सरकारक प्रेरणासँ श्रीमती दत्तकेँ पद्मश्री सम्मानक हेतु नामानुशंसाक निर्णय केलक। ताहि लेल प्रस्ताव तैयार करबाक भार हमरा पर अछि।

गोदावरी जीकेँ घर राँटी गामक माँझ टोलमे अछि, जे चौकसँ छै तँ थोड़बे दूर, मुदा सघन गलीसँ भ' क' बाट जाइत छैक। ओ बतौलनि जे हुनके आग्रह पर मधुबनीक विभिन्न कलक्टर लोकनि हुनकर टोलक विकास केलक अछि। हुनका घरक सटले पूब पोखरि छनि। गाम तँ सुरम्य छैके, ताहिमे हुनकर ड्राइंग रूमक सुन्दरताक तँ चर्चे नहि हो। ड्राइंग रूममे ओ एक दिसका समुच्चा देबाल पर कोबर चित्र बनौने छथिसे सर्वागतः पूर्ण। ताहिमे मिथिला चित्रकलाक एक-एक गोट महीन, एक सँ एक छटा चित्रित छैक। ओ बड़ी काल धरि तकर तकनीकी पक्ष पर बजैत रहलीह। एक-एकटा प्रतीकक अर्थ-व्याख्या केलनि। से अर्थ निस्सन्देह एक नमहरे कलाकार खोलि सकैत अछि। हुनक सौन्दर्य-बोध आ बुद्धि-स्तर व्यापक छनि। ओ बड़ी काल धरि लटपटौआ सुग्गा'क आकृतिक व्याख्या करैत रहलीह आ ताहि क्रममे पति-पत्नीक प्रेम आ दाम्पत्यक महत्त्व दरसाबैत रहलीह।

अपन जीवन-यात्राक सम्बन्धमे सेहो ओ बहुतो रास बात बतौलनि। हुनकर दाम्पत्य-जीवन कष्टपूर्ण रहलनि। पति उपेन्द्र दत्त हुनकर उपेक्षा करैत दोसर विवाह क' लेलनि। घनघोर निराशासँ निस्तार पबैत ओ कोना-कोना अपन व्यक्तित्वकेँ माँजि-तरासि सकलीह, से सब बात ओ बतौलनि। उपेन्द्र महारथी आ कुलकर्णी जखन हुनका ग्राम

मै
लो
रं
ग
अंक 2
मई-अगस्त
आ
अंक 3
सितम्बर-दिसम्बर
2008

आएल रहथि तँ हुनको ओतए आएल रहथिन, हुनकोसँ चित्रक माँग कएल गेल रहनि। मुदा ओ संकोचवश आ अपन कुल-मर्यादावश चित्र नहि देने छलथिन। हुनक पहिल चित्र पर जखन हुनका 25 टाका पारिश्रमिक भेटलनि, कतेक हर्ष आ उद्वेग संगे-संग हुनका भेलनि, तकरो खिस्सा ओ कहलनि।

मिथिला म्यूजियमक संस्थापक (टोकियो) हेसिगावा कतेको बेर हिनका ओतए एयलथिन, कतेको चित्र ल' गेलथिन आ जखन जापानमे एहि कलाक व्यापक प्रशंसा होअय लगलै तँ हेसिगावाकेँ म्यूजियमक आइडिया एलै। गोदावरी जीकेँ ओ जापान ल'-गेलाह जतए ओ कठिन परिश्रम क' क' ओहि म्यूजियमकेँ रूपाकार देलथिन, आ एखन धरि तँ ओ छओ बेर ओहि ठाम गेल छथि। जर्मनी-प्रवासक समय हुनका सफेद दाग भेलनि। बादमे जापान ल' जा क' हेसिगावा हुनकर इलाजो करौलथिन।

गोदावरीजी एखनहु प्राकृतिके रंगसँ चित्र बनबैत छथि। हमेशा कागजे पर बनबैत छथि। चित्रमे महीनी उकेड़ब हुनकर कलाक एक विशेषता थिकनि। अपन अनेक चित्र सभक फोटोग्राफ देखाक' ओ ओकर अन्तर्निहित कथा, प्रतीकक अर्थ समझौलनि। हम देखलहुँ जे हुनकर प्रायः समस्त चित्र मिथक प्रधान छनि। कोनो-ने-कोनो पौराणिक कथा ताहिमे अन्तर्निहित छैक। हम पुछलियनि जे एकर एहि प्रयोगक प्रेरणा अहाँ केँ कतए सँ भेटल? ओ कहलनि जे परम्परागत रूपसँ एतेक मिथक प्रयुक्त नहि होइत छलैक। हम अपन अन्तःप्रेरणासँ एहि विषय-विस्तारकेँ चित्रित केलहुँ। ओ कहलनि-कोनो चित्र देखिक' ओकर नकल करब हमरा बुते सम्भव नहि होइत अछि। हम जखन चित्र बनब' लगै छी तँ पूर्णतः अपन कल्पना पर आश्रित रहैत छी। ओ चित्र हमरा मोनक भीतर पहिनहिसँ बनल रहैत अछि, जकरा हम कागज पर उतारि दैत छी।

गोदावरी दत्तक अधिकांश चित्र कृष्ण कथा आ महाभारत कथा पर आश्रित छनि। भगवतीक चित्र आ अन्य मांगलिक प्रतीक जेना त्रिशूल, डमरू, चक्र, कमलदह आदि सेहो कोनो ने कोनो गम्भीर आशयकेँ अपना भीतर सहेजने भेटैत अछि।

गोदावरी जीक गुरु हुनकर माता स्व. सुभद्रा देवी (पति : रास बिहारी दास, ग्राम : बहादुरपुर, दरभंगा) छलथिन। अपन माता केँ ओ अत्यन्त भावगह्वरित भ' क' स्मरण करैत रहलीह।

कतेक चित्र एखन धरि बनेने हेबै-हमर एहि प्रश्न पर ओ कहलनिहम तँ बहुत कम चित्र बनेने छी। एक चित्र बनब'मे हमरा दू-दू मास लागि जाइत अछि। मुदा जे एक बेर बनेलहुँ, से' फेर नहि बनेलहुँ। हम देखलहुँ जे हुनका लग अपन बनाओल चित्र सभक कोनहु संग्रह नहि छनि। बनौलनि आ बिक्री भ' गेल। एकमात्र चित्र जे हुनका ड्राइंग रूममे टाँगल छलनि, जकरा हालमे ओ पूरा केलनि अछि। हम पुछलियनिएकर कतेक भेटत? ओ कहलनिएक लाख रु. धरि भेटि जायत।

हुनकर किछु चित्र सभ बहुत प्रशंसित भेल आ तकर माँग कतेको

ठामसँ अबैत रहैत छनि। एहन माँगक पूर्त्ति हुनकर पौत्री प्रीति करैत छथिन। ओ अपन प्रसिद्ध चित्र सभक किछु फोटोग्राफ देलनि। मिथिला म्यूजियम जापानमे हुनका द्वारा बनाओल अठारह फीटक त्रिशूलक चित्रके प्रतिकृति सेहो ओ भेंट केलनि।

## श्रीमती गोदावरी दत्त
## रांटी (मधुबनी)

[*मधुबनी जिला कार्यालयसँ पद्मश्री सम्मानक लेल पठाओल गेल अनुसंसा पत्रक प्रतिलिपि। चूँकि ई पत्र हिन्दी भाषामे पठाओल गेल छल। तेँ एकरा ओही रूपमे पाठक समक्ष राखल जाइत अछि। ई पत्र तारानंद वियोगीजी, गोदावरी दत्तजीक संग भेल बातचीतक आधार पर तैयार केने छलाह।संपादक* ]

श्रीमती गोदावरी दत्त ने मिथिला पेन्टिंग की शिक्षा अपनी माता स्व. सुभद्रा देवी से अनौपचारिक रूप से प्राप्त की। सांस्कृतिक रूप से उन्नत परिवार में जन्म लेने की वजह से कला-संस्कार इन्हें विरासत में प्राप्त हुआ था। मिथिला पेन्टिंग कला की कोई अलग विधा नहीं थी, बल्कि दैनिक जीवन के आचार-विचार तथा विधि-व्यवहार में समाहित थी। विवाह, मुण्डन उपनयन आदि अवसरों पर दीवारों पर उकेड़े जानेवाले चित्रों तथा माँगलिक अवसर पर कागज पर बनाए जानेवाले चित्रों में बचपन से ही उनकी गहरी अभिरुचि थी। उनकी माता ने न केवल इस कला की महीन बातों के प्रति उन्हें पारखी बनाया, अपितु नए-नए प्रयोगों के लिए भी प्रोत्साहित किया।

गोदावरी देवी मैथिल महिलाओं की उस प्रथम पीढ़ी की कलाकार हैं, जिन्होंने दैनिक माँगलिक अवसरों पर बनाए जानेवाले चित्रों को नया अर्थ प्रदान किया, जिससे देश-विदेश के कला-पारखी इस ओर आकृष्ट हुए। उन्होंने पारम्परिक शिल्प में चित्र बनाकर अपनी कला यात्रा शुरू की थी। शीघ्र ही रंग, माध्यम, विषय एवं कथ्य से सन्दर्भित उनके नए प्रयोग सामने आने लगे। उनके बनाए चित्र अत्यन्त प्रशंसित हुए। उन्हें दर्जनों सम्मानित प्रतिष्ठानों से प्रशस्तिपत्र, सम्मान एवं पुरस्कार प्राप्त हुए। श्रेष्ठ शिल्पी के लिए उन्हें वर्ष 1980 में राष्ट्रपति पुरस्कार प्रदान किया गया।

श्रीमती गोदावरी दत्त की प्रतिभा उभयमुखी है। एक ओर जहाँ वे कलाकृति-निर्माण में विशिष्ट हैं वहीं दूसरी ओर मिथिला पेन्टिंग से सम्बन्धित उनका सूचनात्मक ज्ञान भी अद्वितीय है। वे इस विषय की प्राध्यापिका रही हैं। उन्होंने भारत सरकार के प्रतिष्ठानों के सौजन्य से अनेक स्थानों पर इस विषय का प्रशिक्षण प्रदान किया है। जापान, जर्मनी एवं फ्रान्स में मिथिला पेन्टिंग को लोकप्रिय बनाने में इनका योगदान विशिष्ट रहा है।

श्रीमती दत्त के चित्रों की कई विशेषताएँ हैं। वे आज भी प्राकृतिक रंगों यथा पत्ते, फूल, गोबर, काजल, सिन्दूर

आदि से अपने चित्रों का निर्माण करती हैं। उनकी चित्रकृतियों में अक्सर महीन रेखाओं का प्रयोग होता है, जो कला को बारीकी प्रदान करता है। उन्होंने मिथिला पेन्टिंग को कई नए आयाम प्रदान किए हैं। पहले ये चित्र मात्र लौकिक व्यवहार को प्रकट करते थे। कुछ चित्रों में शाक्त देवियों का चित्रण होता था। श्रीमती दत्त ने व्यापक मिथकों को मिथिला पेन्टिंग से जोड़ा। महाभारत की कथाएँ, कृष्ण की लीलाएँ, देवी दुर्गा की चरित-कथाएँ आदि-आदि उनके चित्रों में मुखर रूप से प्रकट हुए। उनके द्वारा बनाया गया प्रत्येक चित्र अपने भीतर किसी-न-किसी अन्तर्कथा को सहेजे रखता है, जो भारतीय सांस्कृति एवं कला-चेतना को आम जनता तक पहुँचाने का एक महत्त्वपूर्ण प्रयास है।

---

*09431413125*

# लोककलामे मधुबनी पेंटिंगक स्थान सर्वोपरि

**जनसत्ता स'**

{*मिथिला पेंटिंगसँ संबंधित राष्ट्रीय चर्चासँ जुड़ल एहि महत्त्वपूर्ण समाचारमे बहुतरास समकालीन जानकारी अछि। तेँ एहि समाचारकेँ पाठक लग रखयाइ जरुरी लागल। संपादक* }

मधुबनी पेंटिंग नाम मोनमे उचरिते शहरक चमक-दमकसँ दूर गामक माटिक देबाल पर सहज आ सरल रूपें उकेरल छोट-पैध सुन्दर चित्र उभरिक' सामने अबैत अछि। मुदा, एक समय समुचा दुनियामे परचम लहरबै बला एहि मिथिला क्षेत्रक ई पारंपरिक लोककला वैश्विकरणक नवका दौड़ा-दौड़ीमे अपन पहिचानक समस्यासँ जूझि रहल अछि।

मधुबनी पेंटिंगक वर्तमान स्थितिके देखैत लोकसभामे 2008-09 के बजट सत्रमे अनुदान माँग पर चर्चाक दौरान रेलमन्त्री लालू प्रसाद कहलनि जे इंदिरा गाँधी कलाक सम्मान करैत छलीह आ हुनकर सरकार मधुबनी पेंटिंगक चित्रकार यशोदा देवी संग आरो कतेक कलाकारकेँ पुरस्कृत कयने छल। मुदा, आजुक समयमे ई सिलसिला किछु थमि जेना गेल अछि। हालाँकि रेलवे अपन कार्यालय आ ट्रेनमे मधुबनी पेंटिंग लगयबाक उपाय सेहो केलक अछि।

चर्चाक क्रममे काँग्रेसक अध्यक्ष सोनिया गाँधी सेहो कहथिन्ह जे मधुबनी चित्रकलाके आर आगा बढ़यबाक हेतु जे सब जरूरी उपाय भ' सकै से करबाक चाही। न्यूयार्कक रॉयल ओंटारियो म्यूजियमक सदस्य रहि चुकल कांसस मैथ्यूज कहलीह जे कोनो समाजक आ कि राष्ट्रक प्राचीन संस्कृतिके अक्षुण्ण बनाक' रखबामे साहित्य आ लोककलाक

महत्वपूर्ण भूमिका होइत अछि। आ लोककलामे मधुबनी पेंटिंगक स्थान सर्वोपरि अछि।

सुप्रसिद्ध चित्रकार जतिन दासक कहब छनि जे शास्त्रमे जाहि चौंसठ कलाक वर्णन अछि ओहिमे चित्रकलाक लोकविधा एक महत्वपूर्ण स्थान रखतै अछि। किएक कि एकरे सहारे लुप्त भ' रहल सभ्यता सभहक चित्र हमरा सभहक मोन मस्तिष्कमे बनैत आकि बिगड़ैत रहैत अछि। ओ इहो कहलनि जे चित्र चाहे किताबक कोनो पन्ना मे छपल होइ आकि ऐतिहासिक धरोहर होइ, सांस्कृतिक विरासत, कोनो मन्दिर, महल, कोनो धातुक बनल समान आ नै त' घर-दुआरिक आगाँमे बनाओल गेल कोनो तरहक लोकचित्रे किएक नहि होइई सभ सभ्यताक विकासक प्रतिनिधि होइत अछि संगहि अबैबला पीढ़ीकेँ अपना समयक सामाजिक, आर्थिक आ सांस्कृतिक परिस्थितिक जानकारी दैत अछि।

मिथिला क्षेत्रमे लोककलाक शुरूआत वैदिके कालसँ भेल एहन मानल जाइत अछि। जहिया राजा जनक अपन सुपुत्री सीताक विआहक मौका पर स्वास्तिक, अरिपन, कोहबर आ किछु दोसरो लोकचित्रके जमीन (भूमि) पर बनबेने छलाह। एकरे बाद एहि प्रदेशमे सभ सांस्कृतिक आ धार्मिक अवसर पर एहि तरहक लोकचित्र बनाओल जाय लागल।

मधुबनी चित्र बनबैवाली मंजू देवीक कथन छनि जे मधुबनी पेंटिंगमे समाजक प्रायः सभ पहलूक साक्षात दर्शन होइत अछि। एहि लोकचित्रकेँ मौगी-मेहर अपना हाथसँ देबाल, कपड़ा आ कागज पर बनबैत छथि। एहिमे बेसी काल सीता स्वयंवर, राम जानकी विआह, कोहबर, गोपी चीर हरण, अरिपण आ दोसर-दोसर लीलाक वर्णन होइत अछि।

मंजू देवी इहो कहलनि जे मधुबनी चित्रकला मुख्यरूपें ग्रामीण कला अछि आ एहि जीवंत कला पर मौगी-मेहरिक एकाधिकार अछि। महिला लोकनि एहि कलाकेँ विरासतक रूपमे एक पीढ़ीसँ दोसर पीढ़ीकेँ सौंपते छथि। मधुबनी चित्रकलाक वर्तमान स्थिति पर चिन्ता करैत ओ इहो कहलीह जे एहि कलाक अनदेखी आ बदलैत समयमे चित्रकलाक उचित मूल्य नहि भेटबाक कारण नव पीढ़ीक लोक एकरा अपना नहि रहल अछि। जितबारपुर आ राँटी गामसँ एहि चित्र सभकेँ कम दाम पर खरीदक' बिचौलिया सभ बाहर बेसी दाममे बेचैत अछि। एहि कारण चित्रकारक स्थिति दयनीय भेल जा रहल छकै। सीता देवी, यशोदा देवी, गोदावरी देवी महासुन्दरी देवी, बच्चादाई देवी एहन किछु कालाकार मधुबनी चित्रकलाक माध्यमसँ कलाजगतमे अपन अहम स्थान बनौलनि। मधुबनी चित्रकलाक संदर्भमे मिथिलांचलक जितवारपुर गामक अहम स्थान अछि जत' 85 प्रतिशत महिला सभ चित्र बनबैत छथि। जाहिमे 40 प्रतिशत ई कार्य नियमित रूपे करतै छथि। युग-युगान्तरसँ नारीक शक्तिक प्रतीक रहल ई मधुबनी चित्रकला वैश्वीकरण आ मार्डन आर्टक एहि नव दौरमे अपन पहिचानक समस्यासँ जूझि रहल अछि। ●



*चिन्तन*

# बाढ़ि आ विस्थापन

**प्रशांत कुमार मिश्र**

**मैथिली अनुवाद : काश्यप कमल**

भारतक उत्तर-पूर्व स' बिहाड़ि चललै त' पछबारि भारतमे रहै बला बिहारी सबहक खोंता गाछ पर स' खसय लगलैन्ह। खोप उजरलाक बाद विस्थापितक इ खेप अपन छिड़ियाएल वस्तु-जातक मोटरी बान्हि चलल बिहार दिस। पटना जंक्शन पर 'बिहार जिंदाबाद'क नारा सुनलहु त' दरभंगा स्टेशन पर विलापक स्वर सुनना गेल। ब्रह्मपुत्रक द्वीप सबमे बिहार बेचैन, अपमानित आ आक्रांत त' अरब सागरक तट पर 'छठि परमेश्वरीयो' धमकीक शिकार भेलीह।

निजी चैनल आ समाचार पत्रक हेडलाइन सब जाहि सत्यके आगाँ आनि रहल अछि ओहि सत्यक आधारक जड़िक सब तहके बुझनाई आब अत्यन्त आवश्यक अछि बिहारवासी देशवासीक लेल। विकासक पथपर आगु बढ़ैत भारतमे वंचित क्षेत्रक उपेक्षाक परिणाम अछि जे आजादीक छः दशक बितलाबादो नेपालक संग कहियो जल प्रबंधनक कोनो व्यावहारिक डेग नहि उठाएल गेल। हिमालयस' बहि क' अबै बला पाँकक (गाद) स' माँटि उपजाऊ त' भेलै परंतु एकर आब विनाशकारी प्रभाव ई भेलै जे नदिक बान्हक बिचला हिस्सा बेसी ऊँच भ' गेलै नतीजा जल प्रवाह दिशा विहीन भ' जाइत छैक।

जलक दिशाहिनता जनसंख्याके विस्थापनक लेल विवश करैत छैक। समस्त भारतमे 'पूरबिया समाजे' हाड़-तोड़ परिश्रम स' विकासमे त' अमुल्य योगदान क' रहल अछि परञ्च ओकर अपन गाम-घर दूर भेल जा रहल छैक। बाढ़िमे आश्रयके लेल कोनो गाछ पर साँप-बिच्छुक संग राति बितेनाइ होइ वा गैर हिंदी भाषी क्षेत्रमे दुनू साँझक भोजनक जोगाड़मे भटकनाइ-खतरा त' दुनू ठाम छैक।

मैथीली रंग
अंक 2
मई-अगस्त
आ
अंक 3
सितम्बर-दिसम्बर
2008

विस्थापन सांस्कृतिक संकटके जननी बनि गेल अछि। राजनीतिक-समाज अहि जटिलताके सुलझेनाइ छोड़ि अपन वोटक प्रबंधनमे लागि गेल छथि। राजनीतिक अहि खेलमे मिथिलांचलक चर्चा दिलचस्प भ' सकैत अछि। कखनो यदि मिथिला राज्य आ मैथिली भाषा पर बहस शुरू होइत छैक त' सामाजिक न्याय विषयक राजनीतिक परिधिमे अबै बला नेतागण अपन उदासीनताक प्रदर्शन करय लगैत छथि। बाढ़ि प्रभावित मिथिलांचलमे रोजगार पयबाक एकमात्र साधन विस्थापन अछि। आखिर उद्योगीकरण ज'हेबो करय त' कतय? कोन जमीन पर? परन्तु बाढ़िक मादूर स' मुललाबादो मिथिलामे एकर समाधानक लेल एकजुटताक आभाव अछि। मिथिला-मैथिलीक लेल कतेको प्रश्न अनुतरित अछि। मिथिला राज्य ककरा लेल? सामांतवादी मनोवृति वला ओहि नेता सबहक लेल जे बिहारक राजनीतिमे अप्रासंगिक भ' गेल छथि? की मैथिली भाषी अपन शुद्ध रूपमे केवल जाति विशेषक धरोहर छथि? या अपन लौकिक स्वरूपमे सब जातिक भाषा की छै? की मिथिलाक ओ चेहरा प्रतिनिधि अछि जे मधुबनी चित्रकलाक चर्चा स' उभारि क' सामने अबैत अछि। जाहिस' देश विदेशक कुलीन वर्ग परिचित छथि। जापान स' ईंगलैंड धरिके कला प्रेमी मधुबनी चित्रकलाक माध्यम स' जाहि मिथिलाके जनैत छथि ओ जनपदीय स्वरूप बला सुसंस्कृत भू-खंड अछि जतय लोक विद्यापतिक पदावली गाबि खुश अछि, जतय ने सामाजिक स्तर पर कोनो तरहक बेचैनी अछि आने आर्थिक विषमता।

साओन-भादवक मासमे मिथिलाक भौगोलिक व्यक्तित्व सामने अबैत अछि, जखन कोसी, कमला, गंडक, बूढ़ी गंडक, बलान, आदि धार सबहक घटैत-बढ़ैत जलस्तरक समाचार प्रसारित होइत अछि। अहि क्षेत्रक सामाजिक चिंतनक धारा अन्तर्विरोध स' ग्रस्त होइक कारणे ओहन बुद्धिजीवि वर्गके उत्पन्न क' चुकल अछि जे विशुद्ध ब्रिटिश अंग्रेजीमे यूरोप-अमेरिकाक राजनीतिक अर्थव्यवस्था पर अधिकार पूर्वक बाजिक' अपन विद्वताक धाक जमबैमे त' सफल भेलाह परञ्च जहन अपनहि गृहक्षेत्रक बात अबैत छन्हि त' हुनकर स्तरीकृत मानसिकता हुनका नाक-भौं सिकोड़बाक लेले विवश क' दैत छन्हि। एहनमे त' मिथिला 'शिथिला' बनि क' रहि जेतीह।

आर्थिक पिछड़ापन आ सांस्कृतिक चेतनाक कारण वर्ष 2000 मे स्थापित उत्तरांचल, छत्तीसगढ़ आ झारखण्ड सामाजिक-आर्थिक संरचना मिथिलास' फराक छैक। उत्तरांचल ओहि पर्वतीय जनजातीय सांस्कृतिक हिस्सा अछि जे लेह स' अरूणाचल तक विस्तृत अछि। जाहिमे जातिक विद्वेशक तत्व गौण छैक और जतय पिछड़ल जाति सब सेहो सांस्कृतिकरणक सहारा स' अपेक्षाकृत बेहतर सामाजिक स्थित प्राप्त क' चुकल अछि, आ सवर्ण सेहो हर चलेनाई के छोट काज नहि बुझैत छथि। अन्य

जनजातीय समूह सब सेहो ओहि सामाजिक तनाव स'अनभिज्ञ अछि जे मैदानी सामाजिक व्यवस्थाक अनिर्वाय घटक अछि। तेँ एतय पृथक राज्यक माँग के सहज स्वीकृति भेटलै। छत्तीसगढ़ आ झारखण्डक जनसंख्यात्मक संरचनामे बहुत हद तक समानता देखल जा सकैछ अहि दुनू प्रांतक गठनके लेल ओतयके जनजातीय समूहक तीव्र आकांक्षामे आबादीक ओहि हिस्साक आवाज सेहो संग छलै जे जनजातीय भयवश''दिकू'' कहि क' अपन भावनाके शब्द रूप दैत छल। अहि तरह स' अहि तीनू नव राज्यके ज' एकहि 'मेल्टिंग पॉट' के रूपमे चित्रित करी त' जतय के नेता सबमे सोच विकसित भेलैन्ह जे ओ आर्थिक विकासक लेल अपन सामूहिक प्रवृत्ति के लगाम कसैमे सफल भेलाह त' गलत नहि होयत। अहि सबहक विपरित मैथिल जन अहि मामलामे शिथिलताक परिचय दैत रहलाह।

आब समकालीन भारतक इतिहासमे 'मिथिलाक विकासक' अध्याय जोड़नाइ समयके माँग अछि। कृषि आधारित उद्योग कड़ीमे चीनी मिलक स्थापना पहिल प्राथमिकता हेबाक चाही, नहि त' अबै बला समयमे मैथिली प्रवासीक संख्यामे बढ़ोतरीये होयतैक आ ओहि 'बिहारी' भाई सबहक खूनस' आसामक खेतमे स' लाल-लाल कुसियार निकैलते रहतैक। बिहारी अस्मिताक गप्प करै वला किछु राजनीतिक भाषा शैलीमे मिथिला शब्दे गायब भ' गेल अछि। 'बिहारी भेनाइ' गंवईपनके प्रदर्शित करैत अछि चाहे बिहारी भेनाई गौरवक बात अछिअहि सब के ल- क' 'लालटेनक' इजोतमे 'टीम' चलिते रहतै परञ्च अहि सबमे मिथिलाक लेल कतेक जगह छै? अहि पर बहसके आवश्यकता छैक।

की बाढ़ि स' प्रभावित विस्थापनक समाधान 'यूपी, बिहार, मुंबई एक्सप्रेस' भ' सकैत छैक? बिहारी चाहे मराठी बजैथ चाहे पुरबिया, चाहे पंजाबी बाजिक' स्थानीय हेबाक भ्रम पालिलौथ समस्याक एहन समाधान कोनो हालतमे उचित नहि अछि। भारतक संविधान देशक सब नागरिकके रोजगारक लेल एक क्षेत्र स' दोसर क्षेत्र जेबाक अनुमति दैत छैक। परञ्च ई निहितार्थ नहि जे एक प्रान्तक अर्थव्यवस्थाक आधार 'मनिआर्डर' बनि जाइ। धार सबके आपसमे जोड़बाक गप्प चललै त' परिवर्तनक आशा जगलै जे अहि समस्या पर सरकार आब गंभीर भेल अछि। परञ्च अहि मामलामे कतेक परिवर्तन भेलैकसे आम जनताके कोनो पत्ता नहि। झारखण्ड बनलाक बाद शेष बिहारक लेल कोनो विशेष कार्य योजना नहि बनायल गेल त' बिहारीक विस्थापन देशक सामने सब स' पैध समस्या बनि जायत अहिमे कोनो आश्चर्य नहि। बिहार आब तीन भाषिक संस्कृतिमे अपनाके समेटने अछि-मगध, भोजपुर आ मिथिला। पलायन आ विस्थापनक चर्चाक क्रममे प्रयुक्त लोकभाषा/जनभाषा के रूपमे भोजपुरी समाचार माध्यममे अपना लेल स्पेश बना लैत अछि जखन की मगही

आ मैथिली पाछू छुटि जाइत अछि। सामाजिक न्यायक नाम पर 'वोट' मँगनिहार भोजपुरी भाषाक उपयोग एक हथियारक रूपमे जरूर केलाह परन्तु एकरा मनोरंजनक भाषा बना क' भिखारी ठाकुरक 'बिदेसिया' के घर वापस अनबाक कोशिश नहि केलाह। मगही अहि रेसमे कतय अछि? परञ्च बीसवीं सदीक आखरी दशकमे मैथिली अपनहि गृहक्षेत्रमे हास्यास्पद स्थितिमे फंसि गेलीह जखन राज्य सरकार मैथिलीके लोक सेवा आयोगक पाठ्यक्रम स' निकालि देबाक घोषणा, विचारक दिशाहीनता, जतय सांस्कृतिक संकटके जन्म देलक ओतय बाढ़िक विभिषिका लोकक जड़ि के काटि देलक। नदी सबके उड़ाहनाई जल प्रवाहक लेल आवश्यक अछि त' आर्थिक विकासक लेल आम जनक भागीदारी। ●

## विनम्र आग्रह

मैथिली लोककला शोध संस्थान मैथिलीक प्रदर्शनकारी कलाक (लोक, नाटय, संगीत, नृत्य आ चित्रकला) दस्तावेजी अभिलेखन क' रहल अछि। अपने सँ विनम्र आग्रह जे उपर्युक्त विषय सँ संबंधित किछु तथ्य / सामग्री जे अहाँ लग उपलब्ध अछि, ओ संस्थान के पठाबी। अहाँक अमुल्य सामग्रीहक समुचित रखरखाव संस्थान करत। संगहि संदर्भ मे अपनेक सहयोगक उल्लेख सेहो करत।

मैलोरंग





# मैथिली सेवी के?

### संदर्भः समयांतरमे छपल लेख

**प्रेमराज**

कनिए दिन पहिने हिन्दी भाषाक मासिक पत्रिका **समयांतर** (अप्रैल, 2008) मे गौरीनाथक लेख **राजनीति में भाषा** प्रकाशित भेल छल। लेखक संदर्भ छल-दिल्ली की मैथिली (और भोजपुरी) अकादेमी।

कीर्तिलता सँ प्रेरित भ' लेखक (गौरीनाथ) एतेक तक जनैत छथि जे 'बाल चन्द्रमा आ विद्यापतिक भाषा, दुनू के दुरजनक परिहास किछु नहि बिगाड़ि सकैत अछि'तखन एतेकटा लेख ओहो हिन्दीमे बेकारे किने।

हम पूछ' चाहबैन गौरी सँहयौ! कहियो जँ ई मैथिली अकादेमी बनितै त' ओहि समय कोनो पार्टिक सत्ता रहितैक कि नै? आ जँ कोनो ने कोनो सरकार रहबे करितै त' अखुनका सरकारक एहि पहल के एतेक उदासीनतासँ की लेबाक चाही?

गौरीनाथ साइत चिह्नबामे बिसरि गेल छथि जे ओ वैह अनिल मिश्र छथि जे *अंतिका* के ठाढ़ होयबा काल प्रथम सहयोगीक रूपमे सदैव तैयार रहैत छलाह। जखन तखन **अंतिकाक** आयोजन व प्रकाशनल लेल अप्रत्यक्ष रूपसँ सहयोग अनिल मिश्रे करैत रहलाह आ **अंतिके** वा गौरीनाथ/अनलकांते किएक दिल्ली स्थित कोन एहन मैथिलीक संस्था वा व्यक्ति छथि जिनका लेल अनिल मिश्र अपन व्यस्ततम समय सँ समय नहि निकालैत छलथि आ जखन आई अनिल जीकेँ दिल्लीक मैथिली आकदेमीक उपाध्यक्ष बनाओल गेलनि त' गौरीनाथक नजरिमे अनिल मिश्र दिल्ली

मै
लो
रं
ग
अंक 2
मई-अगस्त
आ
अंक 3
सितम्बर-दिसम्बर
2008

विश्वविद्यालयक एकटा कॉलेजक मात्र राजनीतिशास्त्र पढ़ेनिहारटा भ' क' रहि गेलाह। की, मैथिलीमे तथा-कथित (कूड़ा-कचड़ा) कविता/कथा/लेख आदि लिखनिहारेटा मैथिली सेबी भ' सकैत छथि?

हयौ। बाउ, हैत' सम्हारल कोनो संस्थाक उपाध्यक्षक पद; जकर की अध्यक्ष मुख्यमंत्री होइत छै? सामर्थ्य अछि दौड़-बरहा करबाक...चित्त भ' जायब... अहू लय हुब्बा चाही...। ओना पोन पर तबला खूब बजै छै...। जरूरति छै जे सभ कियो मिलि बैसि एहन स्थितिके कोना आरो नीक बनाओल जाय ताहि पर विचारक।

आइ गौरीनाथ के हिन्दीमे प्रसाद बँटनाइ देखाइत छनि। आ जहिया हिन्दी अकादेमी प्रसाद देलकै तहिया अपन हाथ कहाँ छिपलाह बल्कि आर आगू बढ़ाक' ग्रहण केलाह ओही हिन्दी अकादेमीक सम्मान। ई दोहरा नीति की नीक छै?

गौरीजीके केन्द्रीय साहित्य अकादेमी, बिहार मैथिली अकादेमी, केन्द्रीय भारतीय भाषा संस्थान, नेशनल बुक ट्रस्ट आदि संस्थान आ एहिमे कार्यरत सभ मैथिल कर्मचारी संगहि एहि सभ संस्थान सँ सहयोग प्राप्त करनिहार व्यक्ति वा संस्था जे लगातार मैथिलीक लेल कोनो ने कोनो रूपे कार्यरत अछि ओ सभ चोर वा कि चुहार देखाइत छनि। मुदा, किछु आरो देश स्तरक संस्था जेना ओ. एन. जी. सी., ओरिएण्टल इंश्योरेंस, भारतीय डाक विभाग, मध्यप्रदेश सरकार, राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय आदि संस्थाक *अंतिकाक* अंकमे छपल विज्ञापनके देखि की ई अंदाजा लगाओल नहि जा सकैत अछि जे इहो सभ ऊँच पद पर बैसल, मैथिली भाषा-भाषीक चाटुकारिता परिणाम थिक? आजुक स्थिति त' ई अछि जे **अंतिका**मे प्रायः पचास स' साठि हजारक विज्ञापन छपैत अछि आ छपाईमे मुश्किल सँ दस-बारह हजार लागत अबैत अछि। (एक हजार प्रति), मूल्य बीस टाका यानी जोड़ि-जाड़ि क' लगभग अस्सी हजारमे बीस हजार खर्च यानी लगभग साठि हजार सुच्चा नफा। कहाँ **अंतिका**क दाम घटा क' मैथिली भाषी पाठकक (जकर दोहाइ दैत छथि गौरीनाथ) लेल दस टाका कयल गेलै। कतौ ने कतौ सभ कियो त' एक्के डारि पर छी बात छै सुतारबाक... । गौरीजी अहूँ सुननहि हेबै 'जकर अप्पन घर शीशा के होइत छै ओ दोसर पर ढ़ेपा नहि फेंकैत अछि, खैर! लेखक महोदय जखन हिन्दीमे घरक उकटा-पैचीमे बहरयलाह छथि तखन हम मैथिलीमे किएकने किछु आरो कही एहि बहाने। ई प्रायः लेखकक लेख के कनि आरो आगू बढ़ेनाइ जेना अछि

ककरो परिचय पति-पत्नि सँ देनिहार अंतिकाक संपादक (ओना **अंतिका**क संपादक अनलकांत छथि मुदा अपन लेख मे एक ठाम लिखैत छथि( **अंतिका**, अंक-17) के संपादकीय मे इन पंक्तियों के लेखक ने लिखा था कि...) के मोन हेतैन ओ दिन जहिया एकटा सुगठित अंतिकाक टीममे कतौ नै रहनिहारि नंदनी एका-एक ओहि ग्रुपके

पाछू छोड़ि ओकर स्वामीत्व/प्रकाशकक पद पर आसीन भ' गेलीह। ई नंदनी के छथि? हमर प्रिय मैथिली पत्रिका अंतिकाक सम्पादकक धर्म पत्नि। तकरे परिणाम छल जे ओहन सुगठित अंतिकाक टीम भंग भ' गेल। की, गौरी बाबू ई सब अहाँक हृदय नीक जेकाँ जनैत हैत।

तें मौका भेटला पर अहूँ नहि चुकल छी। गौरीनाथ...ई मानबा मे कनियो शंका नहि जे अनलकांत एकटा नीक संपादक छथि। मुदा हुनका नीक हृदय सेहो रखबाक चाहियनि। हाँ! अखन युवा छथि तें होइत छनि, जे ककरा-ककरा सँ ढाही ली। मुदा एहि अवस्थामे विशेष जरूरी जे जोश मे होशके नहि छोड़बाक चाही।

हाँ! आए जँ ई लेख कोनो मैथिलीक पत्र-पत्रिकामे छपल रहितै त' कोनो तेहन गप्प नहि छल। मुदा, एहन थुक्कम फैज्जति वला लेखके हिन्दीमे छपबाक' मैथिली भाषा, मिथिला समाज वा कि मैथिली पाठक ककर उपकार भेल होयत से कनियो नहि बुझना जाइत अछि आ एही कारण हम गौरीनाथक कृतित्वक समीक्षामे अपनाके खर्च कयलहुँ अछि।

अपना लेखमे भारतक जाहि संस्थान सभहक गौरीनाथ चर्च केलनि अछि, ओहि संस्थानक उच्च स्थान पर कियो एहिना नहि पहुँच जाइत छैक। पूरा भारत सँ छानल व्यक्तिके एहन भार देल जाइत अछि। ओहि व्यक्तिक सभहक कार्यकलाप पर सम्पूर्ण देशकेँ विश्वास रहैत छैक। आ जँ ओहि स्थान पर कियो अप्पन भाषा-भाषी पहुँचथि त' हुनका 'बाड़िक पटुआ तीत' बुझि जत' तत' बोकियाब' लागीईहो मुर्खता नहि होयबाक चाही। एतेक त' हम जरूरे बुझि सकैत छी जे एहि मे सँ कियो जँ फुकि देताह तँ ई अनलकांत, अंतिका सभटा बूट लाध' चलि जायत भाई। ओना गौरीनाथ येह चाहैत छथि जे किछु एहन करी वा लिखी जे हरदम चर्चा मे रही (गुरु दक्षिणा स्वरूप' **हंस** स' येह टा त' ग्रहण केलनि), मुदा ताहि लेल कि मल्लिका सेरावत वा कि राखी सावंत बनि गेनाई कतेक उचित छैक? हमहूँ मैथिली पाठक पर ई फैसला छोड़ैत छी...?

raazpremraaz @gmail.com

•

# इन्द्रक थरथरी

**प्रेमराज**

जखने कोनो ऋषि-महात्मा लीन भ' तपस्या क'र' लगैत छलाह कि थरथर कॉपय लगैत छलाह भगवान इन्द्रं किएक त' अपना पद सँ डर हुअ लगैत छलनि जे कहीं हमर आसन नहि छिना जाय।

एहने स्थित लगैत अछि दिल्लीक

मैथिली जगत मे। प्रायः तीन चारि सालसँ किछु उत्साहित युवक सभ दिल्लीमे सभ नाटक करबाक लेल संस्था बनेलक अछि। जाहि मे एक्कोटा मैथिली (तथाकथित साहित्य) सँ परिचित व्यक्ति नहि छथि। मुदा हजार कष्टक बादो समाचार भेटैत रहैत अछि जे ई सभ संस्था (जे-दू-चारिटा अछि) अपन सभ किछु लगा नाटक क' रहल अछि। नाटक शुरू भेल दिल्लीमे। हुनके सभहक प्रयाससँ बाहरक संस्था सभ केँ दिल्लीमे नाटक करबाक लालसा पूरा हुअ लगलै। ई नवयुवक संस्था सभ कहिया धरि चलत से नहि कहल जा सकैत अछि, मुदा एकरा सभहक कार्य कलाप केँ देखि दिल्लीमें आसन पर बैसल किछु इन्द्र रूपी भगवानक छाती धुनकी जेकाँ धक-धक क'र' लगलनि। ई धुक्क-धुक्की ततेक ने तीव्र भेल से हमरो एहन लोक केँ साफ-साफ सुनबामे आयब लागल अछि। ऊपरका खाड़ीक साहित्य प्रेमी केँ एहि धियापुताक उत्साह नीक लगा' लगलनि किएक त' हुनका सभ केँ एहि नवयुवकक बढ़ैत प्रभावसँ कोनो तरहक डर नहि छनि मुदा एहि इन्द्र लोकनिक कान ठाढ़ भेल। की करी, की नई करी से औनाय लगलाह।

एकर एकटा टटका उदाहरण अछिनाटकक तेज के अनुभव करैत अनलकांतजी आब की करताह त' चारि साल पहिने कथादेश (हिन्दीक स्थापित पत्रिका) के मार्च, 2004 अंक में छपल लेख के तहिए सँ मैथिलीमे अनुवाद करैत-करैत अपन अंतिकाक नवका अंक (जनवरी-मार्च, 08) मे छापि लेलाह। किछु अपना दिस सँ जोड़-तोड़ क' क'। ओना एहि लेख पर ताहि समयमें बहुतो रास वाद-विवाद भेल छल आ *भंगिमा* अपन एकटा अंक (अंक : 38, अगस्त, 2004) एहि लेखक प्रतिक्रियामे सेहो निकालने छल, पं. गोविन्द झाक एही लेखक भाषांतरणक संग, सेहो चारि साल पहिने नियमित पाठक स्वयं सोचि सकैत छथि नाटकक लेल एहि सम्पादकक सोच आ व्यग्रता केँ...। एहि लेख के छपबाक एकटा कारण इहो अछि मैथिलीक प्रति हरदम नकारात्मक सोच रखनिहार (ताहिमे नाटकक कथे कोन) अनलकांतजी के नाटक करनिहार वा कि ओहि दिशा दिस सोचनिहार व्यक्ति के हीन देखायब। हम स्वयं नाटकक व्यक्ति नहि छी, मुदा एहि बीच जे नीक काज सभ भ' रहल अछि तकरा नकारल त' नहिनेटा जा सकैत अछि। जँ श्री कुणाल निर्देशित **भंगिमा**क **पारिजात हरण** नाटकक कतेको प्रस्तुति होइत अछि, नव-नव निर्देशन मे पैसै बला संजीव मिश्र *धुर्तसमागम* करैत अछि, मनोज मनुज, स्वाति सिंह आदिक नव-नव प्रस्तुति होइत अछि, रविभूषण मुकुल द्वारा संगीत नाटक अकादेमीक महोत्सव मे **ओरिजिनल काम** क प्रस्तुति कयल जाइत अछि ओत' दिल्ली मे लगातार कुमार शैलेन्द्र, प्रकाश झा, संजय चौधरी, पवन मिश्र एक सँ एक प्रस्तुति क'रहल छथि, जे लगातार हिन्दीक रंगसमीक्षकक ध्यान आकर्षित केलक अछि तखन एहि मैथिली

संपादकगण केँ मैथिली नाटक पर एहन लेख छपबाक की प्रयोजन?

हँ! त' हम जे कहैत रही अन्तिम पारा मे जोड़-तोड़क बात तँ श्रीमान अनुवादक केँ अपन शहर दिल्ली (जे कि आब ओ बना चुकलाह) में काज करनिहार हुनकर अनुज सभ पर दृष्टि नहि पहुँचलनि आ अपन गिद्ध दृष्टि सँ सहरसा टा देखा गेलनि। जे बाबू (उत्पल जी) पिछला एक साल सँ अपन गामो नहि अयलाह अछि आ मैथिली मे नाटक करबाक कथे कोन। एहन जीव केँ दूर दृष्टि दोष हेबाक कारण एकटा चश्माक जरूरति अति आवश्यक छनि। एहि सभ सँ ई त' पक्का जे दिल्लीक रंगमंचीय हलचल आ दिल्लीमे मैथिल जनमे भ' रहल एहि रंगकर्मी सभहक लोकप्रियता अहि संपादक रूपी इन्द्र सभहक देह में धुकधुक्की जरूर ढुका देलकनि अछि। ●



*प्रशिक्षण संस्थान*

# राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय : चयन प्रक्रिया

**मैलोरंग डेस्क**

राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नई दिल्ली एक मात्र संस्थान अछि जे पूर्णरूपेण भारत सरकार द्वारा रंगमंचक पढ़ाइक लेल गठित भेल अछि। ई एकटा स्वायत्त संस्था अछि जाहि मे नामांकन प्राप्त सभ छात्र-छात्राके पढ़ाइ खर्च मुफ्त संगहि 3000 रूपया प्रति मास पढ़बाक लेल विद्यालय सँ छात्रवृत्ति रूपमे प्रदान कयल जाइत छनि। ई संस्थान राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय (रानावि) वा नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा (एन. एस. डी.) नाम सँ विश्वविख्यात रंग संस्थान अछि। विद्यालय तीन सालक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम प्रदान करैत अछि। ई मानल जाइत अछि बल्कि व्यावहारिकतामे ई कहल जा सकैत अछि जे एहि विद्यालय सँ प्रशिक्षण प्राप्त छात्र-छात्रा लोकनि भारते नहि विश्व रंगफलक पर अपन हस्ताक्षर रखने छथि। यैह कारण छैक जे आइ विश्वक प्रायः सभ देशक छात्र-छात्राक आकर्षण बनल अछि रानावि। आउ! नाट्यकलाक एहि उच्चतम रंगसंस्थानमे प्रवेशक प्रक्रिया संबंधमे किछु महत्त्वपूर्ण जानकारी ली।

राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय प्रति वर्ष मात्र 20 गोट विद्यार्थीके चयनित करैत अछि जाहि मे दू टा स्थान विदेशी छात्रक लेल सेहो आरक्षित अछि। उचित छात्र नहि भेला पर इहो स्थान भारतीय के द' देल जाइत छैक। एहि मे प्रवेश करबाक लेल आवेदन पत्र प्रायः मध्य मार्चमे निकलैत अछि। फार्मक दाम 150/- होइत छैक। आवेदन पत्र भरबाक लेल न्यूनतम योग्यता होइत अछिकोनो विषयमे स्नातक आ लगभग दसटा नाटकमे भागीदारी। हँ ई त' न्यूनतम अछि मूदा नामांकनक लेल अत्यधिक स्पर्धा होयत तेँ रंगमंचक गहनता भेनाइ आवश्यक। प्रवेशक लेल मूल

मैलोरंग

अंक 2
मई-अगस्त
आ
अंक 3
सितम्बर-दिसम्बर
2008

रूपसँ चारि स्तर होइत अछि। पहिल त' अहाँक आवेदन पत्रमे देल जानकारीक आधारपर चयन होयत। आवेदनमे जानकारीक आधारपर दोसर सत्रमे बजाओल जायत। एहि लेल सम्पूर्ण भारतमे दिल्ली, कोलकाता, गुवाहाटी, मुम्बई आ बेंगलौर निर्धारित स्थान अछि। दोसर सत्रमे छात्रके दीर्घउत्तरीय प्रश्न पूछल जाइत छनि। एहि प्रश्नपत्रमे दू खण्ड रहैत छैकप्रथम खण्डमे दूटा प्रश्न आ दोसर खण्डमे सेहो दूटा प्रश्न पूछल जाइत छैक। एहि दुनू खण्डसँ एकटा प्रश्नक उत्तर लिख' पड़ैत अछि। जाहिमे ई निर्धारित रहैत अछि जे एकटा प्रश्नक उत्तर हिन्दीमे आ दोसर प्रश्नक उत्तर अंग्रेजीमे देल जाय। प्रश्नक प्रारूप प्रायः एहन रहैछ जेनाकि अहाँ अपना क्षेत्रमे रंगमंचक विकास कोना करब? अपना क्षेत्रक लोक रंगमंच पर प्रकाश दिअ? अहाँक प्रिय नाटककार के छथि आकि अहाँक प्रिय पात्र कोन अछि, कारण लिखू? परीक्षाक ई सत्र 45 मिनटक होइत अछि। एकर परिणाम ओही दिन 30 मिनटक बाद द' देल जाइत अछि।

आब चयनित छात्रकेँ तेसर चरणइंटरव्यू कक्षमे बेरा-बेरी बजाओल जाइत छनि। एहिमे छात्रसँ बहुत तरह प्रश्न पूछल जाइत छनि। सभसँ पहिने त' अहाँ जाहि क्षेत्रक छी ओहि क्षेत्रक साहित्य संस्कृतिक सम्पूर्ण जानकारी पर प्रश्न जेना विद्यापति, नागार्जुन, फणीश्वरनाथ रेणु आदि सँ संबंधित प्रश्न, किरतनियाँ, जट-जटिन, सलहेस, नटुआ नाच आदि आदि सँ संबंधित प्रश्न। समकालीन मैथिली रंगमंचके महत्वपूर्ण हस्ताक्षर गोविन्द झा, महेन्द्र मलंगिया, कुणालजी आदि सँ संबंधित प्रश्न पूछल जाओत। एकर बाद मिथिलाक लोक परम्परामे नृत्य आ गीत दुनू के क' क' आ गाबिक' देखाब' पड़त। एकरा बाद अहाँ द्वारा भरल गेल आवेदन पत्रमे जानकारीसँ प्रश्न पूछल जायत। संगहि विद्यालय द्वारा किछु संवाद आ कविता पठाओल गेल रहत ताहि मे सँ एकटा संवादक अभिनय क' क', कविता पढ़िक' सुनाब' पड़त, संगहि लगभग 17 टा नाटकक नाममे कोनो तीनटा पढ़िक'; जे अहाँ आयल रहब ताहि सँ प्रश्न पूछल जायत। अहाँ जाहि हिसाबे सही उत्तर दैत जायब ओही अनुसार इन्टरव्यू आगू बढ़त।

बोर्डमे बैसल व्यक्ति जखन संतुष्ट भ' जयतथि तखन अहाँक चयन चारिम आ अंतिम चरणक लेल होयत। एहि ठाम मोन राखी जे जाहि प्रश्नक उत्तर नहि अबैत रहय से निधोख भ'क' मना क' दी। ई अहाँक पक्षमे होयत। बोर्डमे बैसल सभ व्यक्तिक व्यवहार सोहार्दपूर्ण रहैत छनि। रंगकर्मीक ई पहील शर्त अछि जे अहाँमे कोनो तरहक हिचकिचाहट नहि रहबाक चाही, अबैत अछि त' ठीक आ नहि अबैय त' नहि...एहि मे कनियो घबरेबाक नहि चाही।

सम्पूर्ण भारतक पाँचों सेटरसँ मिलाक' लगभग 80 टा छात्रके चयनित कयल जाइत छनि। आब अन्तिम चरण दिल्लीमे राष्ट्रीय नाट्य विद्यालयके परिसरमे आयोजित होइत अछि। एहिमे

भाग लेबाक लेल परीक्षार्थीके घरसँ दिल्ली अएबाक आ वापस जयबाक खर्च विद्यालय वहन करैत अछि। ई चरण लगभग पाँच दिनक होइत अछि। जाहिमे सभ छात्र/छात्राकें विद्यालयक छात्रावासमे राखल जाइत छैक। एहि पाँच दिनमे कतेको तरहक कार्यकलाप कराओल जाइत अछि। लगभग 20 टा छात्रक एकटा ग्रुप बनाओल जाइत अछि। अहि प्रकारे चारि टा ग्रुप बनैत अछि। भोर सँ साँझ धरि कार्यशाला चलैत रहैत अछि। छात्रक सभ गतिविधि पर चयनकर्ताक नजरि रहैत छनि। पाँच दिनक बाद सभ छात्रके अपना-अपना घर पठा देल जाइत छनि। अहिसभ मे सँ चयनित बीस छात्रकेँ रिजल्ट पोस्ट द्वारा पठा देल जाइत छनि। चयनित छात्रक नवका सत्र 15-20 जुलाई सँ शुरु भ' जाइत अछि। जे तीन साल तक चलैत अछि। एहि प्रकारे चयन प्रक्रिया सम्पादित होइत अछि। तें जरूरी अछि नीक तैयारीक। अपना सँ बेसी जानकारी रखनिहार सँ सिखबाक।

आर कोनो तरहक जानकारी/सहायताक लेल सम्पर्क क' सकैत छी।

राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, बहावलपुर हाउस, भगवानदास रोड, नई दिल्ली-1
फोन : 011-23389402

किछु विशेष पुछबाक लेल **मैलोरंग कार्यालय**मे पत्रचार क' सकैत छी।

•



*समीक्षा*

# तोरा सन एक तोहीं माधव सन छल सतरूपा

**कमलानंद विभूति**

सूचना एवं प्रसारण मन्त्रालय, भारत सरकारक अधीनस्थ कार्यरत गीत एवं नाटक प्रभाग भारतीय संस्कृति और परम्पराक प्रचार-प्रसारमे अग्रणी भूमिका रखैत अछि। विगत मास (8 मार्च, 2008 सँ 14 मार्च, 2008) वाट्सन स्कूल मधुबनीक परिसरमे एहि प्रभागक भव्य प्रस्तुति **सतरूपा** देखि मधुबनीवासी भौचक्क रहि गेल। पूरा सात दिन मधुबनीक सभ गतिविधि अहि कार्यक्रममे समाहित भ' गेल। चारि फीट उँचाई सँ ल' क' तीस फीट ऊँच तक अलग-अलग तरहक पाँचटा मंचपर एकहिटा नाटक देखि दर्शककेँ छगुन्ता लागि गेलन्हि। कखन कोन मंचपर रोशनीक भुभुक्का फटत तकर अनुमान दर्शककेँ नहि रहैत छलन्हि। एकसंगे दू सय सँ बेसी अभिनेताके अद्भुत वेश-विन्यासक संग देखि दर्शक दंग रहि गेलाह। नाटकक प्रचार भ' गेल। पहिल बेर नाटक देखि लोक दोसराकेँ देखबाक आग्रह कर' लागल। एहि तरहें प्रत्येक दोसर दिन दर्शकक संख्या दुगुना होमय लागल। अन्तिम दू-तीन दिन तऽ मैदानमे पयर रखबाक जगह नहि बचल।

ई कार्यक्रम छल प्रकाश एवं ध्वनि (लाइट एण्ड साउन्ड) पर आधारित **सतरूपाक** मंचन। गीत एवं नाटक प्रभागक सभ इकाईसँ महत्वपूर्ण कलाकारकेँ एहि लेल आमन्त्रित कैल गेलन्हि। मिथिलाक स्थानीय रंगकर्मीक चयन सेहो कयलगेल। लगभग एक सय स्थानीय कलाकार एहिसँ लाभान्वित भेला। ई कलाकार लोकनि एहि प्रस्तुतिसँ बहुत किछु सिखबो कयलन्हि, पाइयो कमौलन्हि आ संगहि अनुभव प्रमाण-पत्र सेहो प्राप्त कयलन्हि। कार्यक्रमक उद्घाटन माननीय मन्त्री शकील अहमद केलन्हि। हुनके सत्प्रयाससँ

बिहारमे सर्वप्रथम मधुबनीमे एहि तरहक अद्भुत कार्यक्रम संभव भेल। गीत एवं नाटक प्रभाग, नई दिल्लीमे प्रबन्धक पद पर कार्यरत मधुबनीवासी नित्यानन्द गोकुल विगत दू वर्षसँ एहि कार्यक्रमकेँ मधुबनीमे करेबाक हेतु अपसियांत छलाह। हुनका भावनाकेँ निदेशक एन. नवचन्द्र सिंह बुझलन्हि आ शकील साहेबक प्रयाससँ सूचनामन्त्रीकेँ एहि कार्यक्रम हेतु मनोलन्हि। दुर्भाग्य ई जे जिला प्रशासनक जतेक सहयोग एहि भव्य कार्यक्रम हेतु भेटबाक चाही से नहि भेटल। स्थानीय संस्था **जमघट** आ **लोकरंग**क भरपूर सहयोग भेटल। स्थानीय रंगकर्मी मदनानन्द झा, जटाधर पासवान, रविभूषण मुकुल आदिक सहयोग सराहनीय छल। सम्पूर्ण कार्यक्रम सहायक निदेशक रजनीश कुमार भगतक दक्ष नेतृत्वमे सम्पन्न भेल।

**सतरूपा** नारी शक्तिक संधान करैत विलक्षण नाटक अछि। एहि नाटकमे आदि स्त्री सतरूपासँ ल' क' स्वतन्त्रता आन्दोनलमे सक्रिय भारतीय स्त्रीक संघर्ष-कथा अत्यन्त आकर्षक ढंगे प्रस्तुत कयल गेल। दर्शक स्त्रीक विविध रूप-रंगसँ परिचित भेल। रमणी आओर भोग्याक प्रतीक बनिगेल स्त्रीक एहन रूप देखि दर्शक सोचबा लेल बाध्य भेला। नाटकमे स्त्रीक मातृरूप, प्रशासकरूप, पराक्रमीरूप, विदुषीरूप, कवयित्री रूप नहि जानि कतेको रूपसँ साक्षात्कार कयलन्हि। नाटकमे सूत्रधारक अभिनय दर्शककेँ खूब पसिन्न पड़लन्हि। जाहि प्रदेशक दृश्य रहैत छल ओ पूरा प्रदेश वेश-भूषाक कारण जीवित भ' उठैक। एक संगे ततेक अभिनेता मंचस्थ भ' जाइत छलाह जेना लगैत छल जे एकटा पूरा टोला वा गाँव जमा भ' गेल हो। गाँधीक दाण्डी यात्रामे अंदोलनकारीक कतार खतमे नहि होइत छल। ई सभ देखि दर्शक मुग्ध भ' उठलाह। तोरा सन एक तोहीं माधव शैलीमे कहल जा सकैछ जे ई नाटक अपना आपमे एसगरे छल।

मधुबनी रंगकर्म हेतु जौं एहि नाटकक साकारात्मक भूमिका अछि त' नकारात्मको कम नहि। सकारात्मक ई जे मधुबनीक रंगकर्मी ई सिखलाह जे नाट्यकर्म तुरत-फुरतक कला-विद्या नहि अपितु अत्यन्त गम्भीर आओर श्रमसाध्य विद्या थिक। रंगकर्ममे छोट-सँ-छोट चीज पर कतेक ध्यान देबाक आवश्यकता, एहि मंचन सँऽ सीखल जा सकैछ। मेकअप, वेशभूषा, मंचसज्जा आदि सिखबामे एहि नाटकक सार्थक भूमिका अछि। दोसर दिस एकर भव्य प्रदर्शनमे लाखों टाकाक बजट छल। मधुबनीक रंगमंच बहुत अकिंचन अछि। चाहियो क' मधुबनीमे एहि भव्यताक संग कोनो स्थानीय संस्था नाटक प्रस्तुत नहि क' सकैछ। दर्शकक हेतु ई नाटक प्रतिमान बनि गेल। आब ओ दोसर नाटक जे देखत त' ओकर तुलना ओ **सतरूपा** स' करत। दोसर नाटक ओकरा छुछुन लागत।

छुछुन लगबाक दोसरो कारण अछि। **सतरूपा** ठीक अर्थमे नाटक नहि छल। जाहि नाटकमे अभिनेता सम्वाद नहि बजला ओ नाटक की? मूक अभिनय

होइत अछि, मुदा ओहिमे भरपूर आंगिक अभिनय कर' पड़ैछ। **सतरूपा** मूको नाटक नहि छल। सम्पूर्ण सम्वाद आओर गीत-संगीत एवं नाट्य-इफेक्ट रिकार्डेड छल। रिकार्डेड सम्वाद पर अभिनेता लोकनि खाली मुँह पटपटौबैत छलाह। नाटकक सबसँ महत्त्वपूर्ण तत्व होइछ सम्वाद-अदायगी। सम्वाद वजबाक शैली कोनो अभिनेताक गुणवत्ता सिद्ध करैछ। उम्दा वेशभूषा, झकास प्रकाश-व्यवस्था आओर बेहतरीन कलाकार द्वारा रिकार्डेड सम्वादक पृष्ठभूमिमे केहनो कलाकार बाजी मारि सकैत अछि। मधुबनीक स्थानीय संस्था जे भविष्यमे नाटक करत त' ओ रिकार्डेड नाटक नहि करत आ नहि करबाक चाही, मुदा दर्शकक अपेक्षा ओहि तरहक सम्वाद सुनबाक होयतन्हि, जे सम्भव नहि। अहू दुआरे सामान्य दर्शककेँ स्थानीय नाटक उदास और छुछुन लगतन्हि। एहि सब बातकेँ अछैत हमरा लोकनिकेँ ईबु झबाक चाही जे गीत एवं नाटक प्रभागकेँ ई एकटा शैली अछि। एहि शैलीसँ हमरा लोकनिकेँ नीक बात सीखक चाही आओर एहि नाटकसँ अन्य नाटकक तुलना नहि करक चाही।

*09431857789*

## विद्यापति मंचनक बहाने किछु वैचारिक बात

**कमलानंद विभूति**

विगत मास (24 एवं 25 मई, 2008) संगीत नाटक अकादेमी, नई दिल्ली एवम् संगीत शोध संस्थान, ध्रुपद केन्द्र, दरभंगाक संयुक्त तत्वावधानमे 'मिथिला की संगीत परम्परा' विषयक द्विदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठीक आयोजन सम्पन्न भेल। संगीत नाटक आकादेमी सदृश राष्ट्रीय संस्थान मिथिलांचल दिस ध्यान द' रहल अछि, ई महत्त्वपूर्ण। संगोष्ठीमे दसोटासँ बेसी आलेख पढ़ल गेल। कदाचित पहिल बेर मिथिलांचलमे संगीत पर बौद्धिक विमर्श सम्भव भेल। कार्यक्रमक अन्तिम दिन थिएटर यूनिट, दरभंगाक नाट्य प्रस्तुति विवेचनक मुख्य विषय अछि; सर्वश्री ईशनाथ झा रचित सुप्रसिद्ध मैथिली नाटक **अभिनव जयदेव विद्यापति** क मंचन रेखांकन योग्य संगहि विमर्श हेतु आमन्त्रित सेहो करैछ।

सर्वप्रथम प्रश्न ई उठैछ जे समकालीन पृष्ठभूमिमे नाट्य प्रस्तुतिक उद्देश्य की? परम्पराक पोषण, धार्मिक प्रचार वा सामाजिक परिवर्तन? एहिमे दू मत नहि जे उक्त नाटकक माध्यमसँ विद्यापतिक विलक्षण काव्य दृष्टि, मिथिलाक प्रति हुनक आथाह प्रेमभाव एवम् हुनक पराक्रमी व्याक्तित्वक परिज्ञान होइछ। एतबेटा नाटकमे देखायल जाइत त' चिन्ताक विषय नहि। मुदा नाटकमे उगना रूपधारी महादेवक सदेह उपस्थिति आजुक वैज्ञानिक युगमे धार्मिक

अंधविश्वासकेँ बेसी-सँ-बेसी पुख्ता करैछ, चिन्ताक मूल विषय ई। उगना रूपमे महादेवक साहचार्य विद्यातिक जीवनक मिथ रहल अछि। हुनक प्रगाढ़ भक्ति पदावली देखि-पढ़ि मिथिला सदृश धार्मिक स्थल पर एहि तरहक मिथक गढ़ि लेब आश्चर्य नहि। मिथिलाक अधिकांश रचनाकार धार्मिक चित्तक रहलाह अछि। सहजहिं हुनक रचनामे एहि तरहक मिथ समाविष्ट भ' गेल। आधुनिक भावबोधसँ सम्पन्न रंगकर्मीकेँ नाटकक चयनसँ पूर्व एहि दृष्टियें सचेत रहबाक आवश्यकता जे ओ समाजकें की देबय जा रहल अछि; मिथ वा यथार्य, वास्तविकताक ठोस धरातल वा कल्पना विलास?

साहित्यक सभ विद्यामे नाटक प्रतिरोधी संस्कृतिक मुखर वाहक रहल अछि। **इप्टाक** नाटक यथास्थितिवादक गढ़केँ तोड़बाक भगीरथी प्रयास कयलक अछि। मराठीमे **सखाराम बाइंडर** आइसँ बीसो-पच्चीस वर्ष पूर्व लिखल गेल। हिन्दीमे **अंधायुग** अहूसँ पहिले लिखल गेल जाहिमे कृष्णक घटाटोपकेँ आधुनिक नाट्यशिल्पक माध्यमसँ तार-तार कयल गेल। एहन तरहक परिवेशमे विद्यापतिक संग महादेवक साहचार्यक मिथकेँ पुष्ट करयबला नाटकक मंचन आत्ममंथनक हेतु आमन्त्रिक करैछ।

एहिमे कठिनाई ई नहि जे एहि तरहक नाटकसँ धार्मिक मतवाद बढ़ैछ। कठिनाई ई जे एहि तरहक नाटक विद्यापतिक काव्य प्रतिभाकेँ रिड्यूस क' दैछ। अप्रत्यक्ष सन्देश ई जाइछ जे विद्यापतिक कवितामे कविक प्रतिभा कम, महादेवक आशीर्वाद बेसी काज करैछ। कालिदास सम्पूर्ण विश्वक समादरणीय कवि रहलाह अछि। विश्वविख्यात कवि गेरे कालिदास लेल लिखलन्हि, "यदि तुम बसंत और ग्रीष्म के फूलों-फलों का तथा आत्माको प्रसन्न करनेवाले रसायन और स्वर्ग तथा भूलोकके ऐश्वर्य को एक साथ देखना चाहते हो तो **अभिज्ञान शांकुतलम**, का अध्ययन करो।" (आजकल, जून-2008, पृष्ठ-16) एहि तरहक व्यापक रचना-दृष्टि कालिदास कोन परिश्रमे अर्जित कयने होयताह, से कल्पनातीत अछि। मुदा मिथिलाक धार्मिक विश्वास कालिदासक एहि अथाह श्रमकेँ औंठा देखबैत हुनका घोर मूर्ख एहि दुआरे सिद्ध करबाक प्रयास कयलक जे एकर श्रेय माँ काली के देयल जाय। कालिदास मिथिलाक छलाह वा नहि, ई फराक शोधक विषय अछि, मुदा ई मिथ मिथिलामे खूब प्रचलित अछि। जे माँ कालीक आशीर्वादसँ कालिदास राताराती विद्वान भ' गेलाह।

मोहन राकेशकेँ अवश्य ई लोकोक्ति बूझल छल हेतन्हि, तकरा बादो ओ कालिदास पर लिखल अपन अद्भुत आ विलक्षण नाटक **आषाढ़ का एक दिन** मे एहि तरहक मतवादक छूइतो नहि लाग' देलथिन्ह। कालिदासक बहाने ओ व्यापक विषयकेँ केन्द्रमे रखलन्हि। कविता आ समृद्धिक बीचमे मौलाइत-मिझाइत आ सिसकैत प्रेमक विराट अभिव्यक्तिक नाम अछि-**अषाढ़ का एक दिन।** नाटकमे कालिदासक अकूत काव्य प्रतिभा आ समृद्धिक

चकाचौंधमे निष्ठुर प्रेमीकरूप एक संगे प्रकाशमे अबैत अछि। एहि कंट्रास्ट चरित्र निर्माणसँ, जकरा आचार्य रामचन्द्र शुक्ल 'विरुद्धों का सामंजस्य' कहलन्हि अछि, कालात्मक सौन्दर्य उत्पन्न कयल गेल अछि। नाटकमे कालिदासक द्वन्द्व, मालविकाक तनाव, विलोमक यथार्थ आदिसँ अद्‌भुत नाट्‌य दृष्टि विकसित होइछ।

विद्यापति नाटकमे एहि तरहक कोनो प्रयास दूर-दूर तक दृष्टिगोचर नहि होइछ। ई सम्भवो नहि। कारण जाहि 'देस' और 'कालक इ रचना थिक, एहि तरहक आधुनिकता बोधक कल्पना असम्भव। एहि ठाम सँ शुरू होइछ निर्देशकक उत्तरदायित्व जँ निर्देशककेँ एहि तरहक नाटकक मंचन आवश्यक तँ ओकरा स्क्रिप्टमे बिना मौलिक हेरफेर कयने रचनात्मक हस्तक्षेप आवश्यक। ई कार्य कठिन मुदा असम्भव नहि। नाटकमे मिथकबला प्रसंगकेँ 'टोन डाउन' करैत हुनक काव्य दृष्टिबला प्रसंगकेँ 'हाइलाइट' क' ई कार्य कैल जा सकैछ। विद्यापतिक कवितामे घोर शृंगार आ सघन भक्तिक द्वन्द्वकेँ प्रसंगवश रेखांकित कयल जा सकैत छल आदि-आदि। निर्देशककेँ ई अधिकार होइछ जे ओ देश, काल आओर परिस्थितिक अनुसारे स्क्रिप्ट केँ परिस्कृत, संसोधित वा सम्पादित कऽ सकैछ। सबसँ नीक ई होइत जे ईशनाथ झाक विद्यापति नाटकक आधार ल' एकटा नव, उत्साहवर्द्धक नाटक तैयार कयल जाइत। अस्तु।

ई त' भेल आलेखक बात। प्रस्तुतिमे सबसँ बेसी अखर' बला बात आवाजक विसंगति छल। नाटक गीत प्रधान छल। गीत आओर इफेक्ट रिकार्डेड छल। गीत आ इफैक्टक आवाज जतबे तीव्र छल सम्वादक आवाज ओतबे कम। निर्देशक माइकक आवश्यकता महसूस नहि कयलन्हि (हलाँकि मंच पर माइक सत्ते बहुत भौंडा लगैत रहैत अछि जकर परिणाम इ भेल जे दर्शक सम्वाद सुनबामे असमर्थ रहल, परिणामस्वरूप नाटकक रस लेबासँ ओ चूकि गेलाह। कलाकारकेँ एहना परिस्थितिमे 'लाउड' होयब आवश्यक छल। बिना माइक बला प्रेक्षागृह अलगे होइत अछि। इन्द्रभवन आब ओहि तरहक रंगमंच नहि रहल। नाटकक गति सेहो अपेक्षाकृत कम छल।

नाटकक आकर्षण छल। निर्देशकक किछु नब प्रयोग आ परिकल्पना। महारानी द्वारा विद्यापतिकेँ सतेबाक प्रतीकात्मक समायोजन प्रशंसनीय छल। मंचक विभाजन विशेषक दू तीन तरहक लेयर (ऊँच-नीच) नाटकमे आकर्षण भरैत छल। बहुत रास कलाकारकेँ एक संगे तालमेल राखब रेखांकन योग्य छल। प्रथम दृश्यकेँ सजब' मे निर्देशक रंग-दृष्टिक प्रशंसा आवश्यक। अप्रशिक्षित आ नब कलाकर द्वारा एहि तरहक नाटक मंचन स्वयंमे महत्त्वपूर्ण अछि। कलाकार एवं निर्देशक **सागर कुमार सिंहक** परिश्रम नाटकमे साफ झलकैत छल। उगना आ बादशाहक भूमिकामे सागर कुमार सिंहमे अभिनयक बहुत रास छवि छटाक दर्शन भेल। लखिमाक भूमिकामे मेघा शर्माक शालीनता

सौन्दर्य और हावभाव सोलहो अपना रानी प्रभृत छल। सुधीरा आ नर्तकीक भूमिकामे चन्दना सेहो दर्शक पर नीक प्रभाव छोड़लन्हि। विद्यापतिक मुख्य भूमिकामे श्यामक गेटअप त' पूरा विद्यापति बला छल मुदा हुनका अभिनयमे मेहनतिक आवश्यकता छन्हि। शिवसिंहक भूमिकामे विश्वजीक प्रयास सराहनीय कहल जयबाक चाही। द्वारपालक भूमिकामे अमरजीत, बजीरक भूमिकामे राजेश 'टिंकू', रामाक भूमिकामे विवेक, रमलाक भूमिकामे मनोज, पिपासाक भूमिकामे सन्तोष, सिपहसलारक भूमिकामे मनमोहन, सैनिकक भूमिकामे इख्तियार कुल मिला क' सामान्य रहला। नर्तक सुनील रामकेँ लोकनृत्यक किछु स्टेप सीखक चाही। श्याम/अमित आ विश्वजीतक मंच व्यवस्था नीक छल। वैद्यनाथ आ सागरक रूप सज्जा अपेक्षाकृत कमजोर छल। कारण, कखनौ शंकरजीक जटा खसैत छलन्हि तऽ कखनौ विद्यापतिक मोंछ। सागर/अजीत संग जोहौलक वस्त्र विन्यास पर खूब मेहनत कयल गेल छल। वस्त्र-विन्यास प्रभावोत्पादक छल। ब्रज बिहारी मिश्राजीक स्वरक जतेक प्रशंसा कयल जाय कम। नाटकक संगीत पक्ष। मजबूत छल जँ ई संगीत पक्ष मंच परसँ होइत त' चारि चाँद लागि जाइत। कुल मिलाक' थिएटर यूनिट धन्यवादक पात्र। एहि दुआरे अछि जे दरभंगा मे नाट्यगतिविधिक चिराग वैहटा जरौने छथि। ●

# तीन संख्यामे ओझरायल महोत्सव

**प्रकाश झा**

मधुबनीक नाट्य संस्था **प्रतीक** वृहद स्तर पर नाट्योत्सवक आयोजन केलक। **प्रतीक** भले नव गठित संस्था अछि मुदा एकर संस्थापक, संचालकगण अत्यधिक अनुभवी छथि। वर्ष 2008क ई नाट्योत्सव जून मासक 27-29 तारिख तक मनाओल गेल। नगर भवन, मधुबनीक विशाल प्रेक्षागृहमे आयोजित प्रतीक नाट्योत्सव मराठी भाषाक सुप्रसिद्ध नाटककार **स्व. विजय तेंडुलकर** के समर्पित छल। एहि महोत्सवमे छह गोट नाट्य प्रस्तुति आयोजित भेल। एहि महत्वपूर्ण आयोजनमे तीन संख्याक रहस्यमयी प्रयोग छल। जेना :

मधुबनीमे तीन सालक बाद एहन महोत्सव आयोजित भेल।

महोत्सव तीन दिनक विस्तार लेने छल।

आयोजनमे तीनटा नाटकक निर्देशक रविभूषण मुकुल छलाह। **(अंधेर नगरी, गाम नई सुतैए** आ **उदास मत हो चिन्नी)**।

महोत्सवमे मंचित नाटकमे तीनटा नाटकक लेखक महेन्द्र मलंगिया

छलथि (**गाम नई सुतैए, हाय रे हमर घरवली** आ **काठक लोक**)।

नाटकक संख्यामे तीनटा मैथिली भाषाक नाटक छल त' तीनटा हिन्दीक।

महोत्सवमे भाग लोनिहार संस्थाक संख्या सेहो तीनेटा छल (**प्रतीक**, **नटकिया** आ **मैलोरंग**)

एहि प्रकारें जँ सम्पूर्ण महोत्सवक गणना कलय जाय त' आरो तथ्य सभ सामने आयत। आयोजक संस्थाक नाम जत' तीन अक्षरक मेल सँ (**प्रतीक**) अछि ओतहि छापल गेल स्मारिकामे सेहो तीने गोटेक शुभकामना संदेश छपल अछि। (नित्यानंद गोकुल, एन. नवचन्द्र सिंह आ रश्मि वाजपेयी)। 24 पेजक स्मारिकामे मात्र तीनेटा पेज नाटकक ब्रोश्यरक लेल उपयोग कयल गेलैक। आ इहो जे पाँचटा आलेखमे मात्र तीनेटा आलेख समकालीन नाट्यकलासँ जुड़ल व्यक्तिक (प्रभात कुमार सिंहा, अनीश अंकुर आ कमलानंद विभूति) छापल गेल अछि। स्मारिकामे कविताक स्थान सेहो अछि जाहि मे तीनेटा कविक अभिव्यक्ति छनि। (टीना शेखर, नवीन कुमार आ शशि शेखर)। जहिमे शशि शेखरक कविता **बड़े कवियों की बड़प्पन** महत्वपूर्ण अछि। तीन व्यक्तिक सम्पादक मंडलमे (शशि शेखर, रविभूषण मुकुल आ टीना शेखर) द्वारा संपादित एहि स्मारिकामे कतहु नाटककार आ निर्देशकक परिचय छापब आवश्यक नहि बुझना गेल अछि। स्मारिकाक मादे जँ कनि आर शोध करी त' एहिमे छपल **प्रतीक** परिवारक सदस्यमे तीनेटा झा जी विराजमान छथि (शैलेश, प्रशांत आ पुष्पम्) त' तीनेटा स्थान रिक्त राखल गेल अछि आमंत्रित चित्रक लेल। अस्तु...

आब महोत्सवमे मंचित नाटक दिस चली। ई अति आश्चर्यजनक छल जे **प्रतीक** अपन तीनटा नाटकक मंचन केलक। ई काज कोनो नीक रंगमंडले क' सकैत अछि। जे लगातार तीन नाटकक मंचन तीन दिनमे क' लै। मैथिलीमे पहिने कहियो कोनो संस्था एहन काज केने हो मुदा विगत दस सालमे ई कोनो संस्था नहि क' सकल अछि। एहि सँ आयोजक संस्थाक सामर्थ आ रंगकर्मक प्रति प्रतिबद्धता झलकैत अछि। भरल पुरल **प्रतीक** परिवारक नाविक मुकुल निश्चित रूपे बधाइक पात्र छथि।

नाटकक आयोजन स्वनामधन्य मैथिली रंगसंस्था सभके करबाक सोचत' अखन तक नहिए भेलैन अछि। हँ! आयोजनमे आमंत्रित होयबाक लेल अपन सभ जोड़ तोड़मे पसीना बहबैत रहैत छथि। खैर :

महोत्सवमे **हाय रे हम्मर घरवाली** (निर्देशक : अनिल कुमार झा) लोकके बेसी आकर्षित केलक। ई प्रस्तुति मैथिलीक श्रेष्ठ संस्था **मिनाप**, **जनकपुरक** छल।

सुपरिचित राष्ट्रीय स्तर पर जननिहार युवा निर्देशक संतोष राणाक प्रस्तुति छल **उत्तर प्रियदर्शी। नटकिया**, बेगुसरायक ई प्रस्तुति प्रथम सप्तकक कवि अज्ञेयजी रचना पर आधारित छल। कथ्यक रूपमे अति गंभीरताक कारण

दर्शकके नाटक नहि पचल मुदा निर्देशक द्वारा मंच पर तैयार कलय गेल कार्य व्यापार, मंच सज्जा आ वेशभूषाक संग कतेको स्तर पर कलाकारक उपस्थित लोकके भौंच्चक केने छल। मंचपर स्टेपिंगमे परफेक्सन रखबामे माहिर संतोष दर्शक दीर्धामे बैसल प्रबूद्ध दर्शकक बीच अपन नीक उपस्थिति दर्ज करेलक। प्रवीण कुमार गुंजनक प्रकाश परिकल्पना सँ मंचपर बनैत-बिगड़ैत बिम्ब खूब आकर्षित केलक।

एकर बाद बारी आयल **काठक लोक** नाटकक। **काठक लोक** प्रस्तुति ल' क' पहुँचल छल दिल्लीक संस्था **मैलोरंग**। विगत पाँच सालमे **मैलोरंग** अति चर्चित संस्थाक रूपमे उभरल अछि। दर्शक आ प्रेक्षक प्रस्तुतिमे खूब नीक जेका इन्भौल्व छलाह। नाटक ततेक संगठित आ कलाकारक शक्ति सँ भरल छल जे लोक एकटक भ' मंचपर घटित होइत बिम्बमे हेरायल छलाइ। नाटकक लेल अपार झीड़ जुटल छल। तकर कतेको कारण जे दिल्लीसँ मैथिली नाटकक टीम के आयब, **काठक लोक** नाटक के देखब आदि छल। नाटकक निर्देशक हम स्वयं (प्रकाश झा) छलहुँ। तेँ बेसी नहि।

रविभूषण तीन नाटकक निर्देशक छल। जाहिमे **अंधेर नगरी, गाम नई सुतैए** दुनू नीक चर्चामे छल। **उदास मत हो चिन्नी** हब स्वयं बैसिक' देखलहुँ। अश्चर्यजनक नाट्य संरचनाक उपयोग कयल गेल छल। प्रवीण कुमार गुंजन लिखित एहि गीत नाटकमे गीतक विभिन्न आकर्षक धुनके समाहित कयल गेल छल मुदा ओहि गीतक लय-ताल पर कलाकारक कोरियोगाफी आ नाटकक प्रस्तुतिकरण निश्चित रविभूषणक रंगदृष्टिक परिचायक छल। रविभूषण कतेको ठामसँ रंगविधामे प्रशिक्षण प्राप्त केलक अछि। सबस' बेसी महत्वपूर्ण अछि रंग प्रशिक्षण के बाद अपना क्षेत्रमे कमे रंगकर्मी लौटैत छथि। जाहिमे रविभूषण एकटा अछि। संगहि एतेक पैघ संस्थाके चलेनाइ सेहो अत्यंत महत्वपूर्ण अछि। रविभूषण एतेक कम उम्रमे एतेक कार्य केलक अछि से दर्ज होमाक चाही।

एतेक पैघ आयोजनमे बहुत रास कमी सेहो देखल गेल। जेना ध्वनि व्यवस्थाक। एकर सुधार मधुबनी एहन छोट जगहमे कयलो कोना जाय? संगहि प्रकाश व्यवस्थाक सेहो। ओना आयोजक अपना भरि उत्कृष्ट साधन मुहैया करेबाक कोनो कसरि नहि छोड़ने छल।

दोसर सबस' पैघ दुर्गुन जे कला क्षेत्रमे अपन स्थान बनेने अछि ताहि सँ **प्रतीक**क सदस्यगण आ आयोजक सेहो अछूत नहि रइल छथि जकर परिणाम भेल जे सभ किछु के अछैतो नाटकक बादक स्थितिक लेल कियो जिम्मेदार नहि। एहि सँ बचनाइ आवश्यक।

पैघ आयोजनके लेल पैघ ग्राउण्ड प्लान होमाक चाही। एहि दिस रविभूषण के मेहनत करबाक चाही। आशा अछि एहि तीन संख्याक फेरी अगिला आयोजन के नहि लगैक, जे फेर तीन साल पर हुए। एहि लेल मधुबनीक सभ संस्थाके मिलिक' प्रयास करक चाही। ●

# सार्वभौमिक अछि काठक लोक

अतुल कुमार ठाकुर

साहित्यक एकटा विधाके रूपमे नाटक विस्तृत आयाम लेने अपन विशिष्टताक उपस्थिति मिथिलाक समाजिक जीवनमे करैत रहल अछि आ एकर परिणति लोकाचार स' सुनि क' लैत अछि। ऐतिहासिकताक संदर्भमे मैथिली नाटकक गप्प राखल जाय त' एकर आरंभ आ विकासक समय करीब-करीब मैथिली उपन्यास आ कविताक संग भेल अछि आ रचनात्मक स्तरक आरोह आ अवरोहक कालक्रममे प्रायः सेहो समानता देखल जा सकैत अछि।

मिथिलाके नाट्याचारक समृद्ध परंपराके संदर्भमे विधापति रचित **मणिमंजरी**के कालक्रम आ एकर बादक रचनासभ जे कि मध्यकालीन मिथिलाके राजनीतिक अस्थिरताक समयमे भेलाक बादो अपन गरिमाक निर्वाह करैत एकटा स्वस्थ दिशा निर्देशित करैत रहल।

मिथिलामे मध्यकालसँ आधुनिक कालके संक्रमण कालमे (Transition Phase) मैथिली नाटकक विधामे क्रमशः विकास होइत रहल अछि जकर प्रभावस' मैथिली लोकनाट्य यथा जट-जटीन, डोमकछ, शीत-बसंत, मैना गोविना आदि सँ समस्त भूभागके चेतनाके स्पंदित आ सांस्कृतिक जीवनसँ समायोजित करैत रहल अछि। एहि प्रकारे मिथिलाके नाटकक विकास व्यक्तिगत आ सामूहिक अनुभूति (Individual and Collective Consciencesness) दुनू के माध्यमसँ होइत आयल अछि जे एकर प्रभावके आशापूर्ण रूप प्रदान करैत अछि।

वर्तमान समयक मैथिली नाटक लेखनमे महेन्द्र मगंलिया एकटा विशिष्ट उपस्थिति दर्ज करबैत छथि आ अपन समृद्ध रचनात्मकताक संग मैथिलीमे एकटा सकारात्मक नाटयकर्मके दिशा निर्देशित क' रहल छथि। एकरे परिणाम अछि जे संपूर्ण मिथिलांचल (नेपाल मधेस क्षेत्र सहित) वर्तमानमे पारंपरिक नाट्य कर्मके दिश पुनः अग्रसितभ' रहल अछि आ सुविधाक अभावसँ लड़ैत आई ई स्थितिमे पहुँच गेल अछि जे अपन सीमास' बढ़ि भारतक सांस्कृतिक क्रियाकलापके केंद्र सभमे अपन प्रभाव पूर्ण उपस्थिति दर्जक' रहल अछि। एहि संदर्भमे सितंबर 5-6, 2008 क' राजधानी दिल्ली, श्रीराम सेंटर सभागारमे मैथिली-भोजपुरी अकादमी द्वारा पहिल आयोजित समारोहके क्रममे चर्चित युवा निर्देशक प्रकाश झा के निर्देशनमे **काठक लोक** के प्रस्तुति एकटा अविस्मरणीय प्रयास छल जे कि सभागारमे बैसल उल्लेखनीय संख्यामे आयल मैथिली भाषा-भाषीके मर्मके उद्वेलित करबामे सफल सिद्ध भेल। संगहि प्रस्तुतिके मौलिकता आ वैविध्य नाटक परिसरमे कृत्रिमताक कोनो व्यवधान स' अछूत रहल आ रूपमे मैथिली जनमानसके अपन सांस्कृतिक प्रस्तुतिकरणके प्रति

एकाग्रचित बनौलक। निर्देशक के रूप मे प्रकाश झा आ **मैथिली लोक रंग (मैलोरंग)** के द्वारा **काठक लोकक** ई तेसर प्रस्तुति छल। ओना आकड़ाके दृष्टिकोण सँ *काठाक लोक* संभवतः मैथिलीक सबस' बेसी प्रस्तुत होमय बना नाटक मानल जा सकैत अछि आ संभवतः मिथिलाके शायदे कोनो गाम एकर प्रस्तुतिकरणसँ वंचित होयत।

अभिनयके स्तरपर नाटकक प्रस्तुतिकरण जबरदस्त सफल छल आ **मैथिली लोक रंग (मैलोरंग)** के समस्त कलाकार एकटा Unit के रूपमे नाटकके कसाव अंत तक कायम रखने छल, जकर प्रत्यक्ष प्रमाण छल दर्शकगण के एकाग्रचित उपस्थिति आ समय-समय पर देल गेल प्रत्युतर (Feedback) जे कि नाटकक गरिमाके सवर्श अनुकूल छल।

प्रकाश परिकल्पनामे राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय सँ प्रशिक्षित उत्पल झाके सहयोग नाटकके प्रस्तुतिकरण के Sophiotication के स्तर तक अग्रसित केलक संगहि संगीत आ समस्त तकनीकि पक्ष के ई Co-ordination मैथिली नाटकमे एकटा नव सुत्रपात अछि जकर की भविष्यमे होम' बला नाटक सबमे सेहो ध्यान राखल जायत से आशा कयल जा सकैत अछि।

नाटकके रूपमे **काठक लोक** समाजके विभिन्न वर्गक लोकक अपन मानसिक अंतरद्वन्द के सामने करैत अछि आ बीच-बीचमे मनोरंजक संवादसँ दर्शकके भरपुर मनोरंजन सेहो करैत अछि मुदा सहसा एकर Climax जे कि अंततः सामंती व्यवहार के कपटीपन के जगजाहिर करैत अछि आ समस्त ग्रामीण समुदायके एकटा सूत्रमे बन्हैत अछि। घटनाक्रमक पृष्ठभूमि अवश्य मिथिलाके अछि परंच ई समस्त भारतीय परिवेशमे उदघटित होइत अछि आ **काठक लोक** के जँ Universal (सार्वभैमिक) मानल जाय त' कोनो अतिश्योक्ति नई हैत।

आन भारतीय भाषाके तुलनामे मैथिलीमे पाठक आ समीक्षक दुनू के अभाव अछि जे कतहु स' रचनात्मकता नाश करैत अछि आ कतेको सर्वकालिक रचनाकारके रचना एहि प्रकारे उपेक्षित रहि जाइत अछि। पठन पाठन आ समीक्षा आवश्यक अछि जे कोनो भाषाक विकासमे आ जेना कि Jaques Darida (जौक दरिया) कहने छथि जे कोनो Text के Reading आ Rereading हर बेर एकटा नया अर्थ संप्रेषित करैत अछि आ वृहत्तर सत्यसँ साकार करबैत अछि जेकर अनुभूति हरबेर मौलिक होइत अछि। विजय तेंडूलकर, मोहन राकेश, गिरिश करनाड, रतन थियन आ अन्य नाटककार के महानता निश्चित अपेन अपन उत्कृष्ट योगदानसँ जुड़ल अछि लेकिन एहि मे एकटा प्रखर आ संवेदनशील समीक्षीय परंपराके सेहो पैघ योगदान अछि जे रचनाके समय-समय पर संश्लेषित करैत रहैत अछि।

विदेशी नाटककार सभ सेहो अपन स्तर पर Crisis के सफलतापूर्वक सामना कयने अछि आ सर्वविदित अछि जे महान नाटककार यथा शेक्सपीयर, बर्नाड शो, सैमुअन बैकेट, हेनरी मिलटा आ आओर

बहुत रास नाटककार सब जे अपन शुरुआती समयमे जइ रचनाके लेल आलोचना सहलैथ बादक समयमे ओहि रचनास' हुनकर सबके संस्थापना महान लेखकके रूपमे मानल गेलनी। कोनो साहित्यक क्रिया-कलाप पूर्ण-रुपेन अपने समाजक उपज होइत छइ आ कि ओकरे चेतना सँ फलिभूत होइत छैक, अइ आधार पर अपन भाषा आ लेखक दुनू के गरिमाके अपन स्वयं जिम्मेदारी के रूपमे मैथिली भाषा-भाषी लोक निर्वाहण करतासे आशा करैत छी।

**अतुल कुमार ठाकुर** C/o श्री अरुण कुमार झा C-2/0, शालीमार गार्डेन, सहिबाबाद, गाजियाबाद-यू.पी.-201005

9873160118

Email atul_mdb@rediffmail.com



*रिपोर्ट*

# बरहामे गोरखधंधा

**मुकेश झा**

मैथिली लोक कथा पर आधारित काश्यप कमल लिखित मैथिली नाटक **गोरखधन्धा** अपन संवाद आ प्रस्तुतिक लेल चर्चित अछि। मैथिली नाट्यलेखन क्षेत्रमे ई नाटक लोक शैलीमे लिखल गेल अछि। पछिला 17 अक्टूबर, 2007 क' मधुबनीक बरहा गाममे एक बेर पुनः एहि नाटकक सफल मंचन कयल गेल। बाँस बाल्लाक मंच पर एहि प्रस्तुतिके लगभग चाइर हजार विशाल दर्शक समूहक बीच कयल गेल। ई एहि नाटकक पाँचम प्रस्तुति छल, एहि स' पूर्व अन्तरराष्ट्रीय मैथिली नाट्य समारोह, जनकपुर (नेपाल), राष्ट्रीय मैथिली नाट्य प्रतियोगिता, कोलकाता आ विद्यापति स्मृति पर्व समारोह, मधुबनीमे भय चुकल अछि।

प्रयोगात्मक शैलीमे प्रस्तुत ई नाटक चोटगर संवाद आर चारि (Movement) के प्रयोग समाहित केने अछि। मिथिलाके प्रमुख लोकगीत सलहेस, आल्हा, लोरी, सोहर, समदाउन, जोगिरा (होली) के प्रयोग एक सूत्रमे बान्हि कय निर्देशक **अभिषेक नारायण** एकरा दर्शकके समक्ष प्रस्तुत कयलैन्हि। निर्देशक प्रतिकात्मक प्रयोग जेना, चौबटिया, इनार, चाउरक ढ़ेरी, घोड़ा, बगिया, गिरमोहार, आदिक प्रयोग सुंदर आ सहजता स' केलैन्ह।

कथासार-ई पेहानी मिथिलाक राजनगरक राज्यके भट्टसिमरि गामक अछि। जत' एकटा दरिद्र किसान रहैत छलाह। स्वभावस' कोरियाठ आर बुद्धिस' कुशाग्र अछि मण्डुक। जकरा घरमे चाउरक बगिया बनब सेहनताके वस्तु छैक। पत्नीक समुचित आवश्यकता पूर्ति त' दूर घरक न्यूनतम आवश्यकता पूरा नहि कय सकैत अछि। एतेक कटु सम्बन्ध रहलाक बाबजूद पत्नि ओना त' कखनो भावनामे वहिक' अपन आक्रोश व्यक्त कय दैत अछि परन्च पुनः अपनाके मैथिल नारीक स्वरूपमे स्थापितक' लेबाक

प्रयास करैत अछि। एहिना दिन बितैत अछि। मण्डुकक भाग्य संग दैत अछि। अपन धूर्तताके सहारे ओहि राज्यके कुलगुरु आ क्रमशः राजगुरु मनोनित कयल जायत अछि।

मंच पर एहि पात्रके जीवंत कयलैन्ह मण्डुकक भूमिकामे मुकेश, पत्नीक भूमिकामे सुप्रीता झा, सूत्रधारके रूपमे अभिषेक आ संतोष के दर्शक बड़ पसिन्न कैलकैन्ह। राजा के अपन भूमिका के माध्यम सऽ सजीव केलैन्ह पी. चन्द्रशेखर, रानी के भूमिकामे सरस्वती आ भावना खूब फबलैथ। सैनिकके किरदारमे कुणाल ठाकुर आ लाल पासवान खूब वाहवाही लूटलाह। **दिव्य शक्ति, बरहा** द्वारा एहि आयोजन पर पूर्व संसाद भोगेन्द्र झा कलाकार सबके पाग आ दोपटा सऽ सम्मानित कयलैन्हि। क्लबक अध्यक्ष सतीश चन्द्र झा कहलखिन जे प्रति वर्ष क्लबक एहि तरहक नाटकक आयोजन आवश्य करत।

*09910671203* ●

# बाल मेलाक आयोजन

**यदुवीर भारती**

**22 फरवरी, 2008** सर्व शिक्षा अभियानक तहत मधुबनी जिलाक सब प्रखण्ड अपन मुख्यालयमे प्रखण्डक पाठशालाक सब चटिया के जमा कऽ कऽ **बाल मेलाक** आयोजन केलक।

ताहि क्रममे बाबूबरही प्रखण्ड अपन अलग छाप छोड़लक। जगदीश नन्दन उच्च विद्यालयक विशाल मैदान, प्रखण्डक सब पाठशालाक चटिया सबसँ खचाखच भरल रहै। दीप प्रज्वलित करवाक लेल बाबूबरही विधानसभाक वर्तमान विधायक कपिलदेव कामत आ मैथिलीक चर्चित फ़िल्म **सस्ता जिनगी महग सेनूरक** निर्देशक मुरलीधर साँवरिया अएलाह आ आयोजनक शुभारंभ कयलन्हि।

मंचक शुरुआत स्वागत गीत (कोना करू सम्मान अतिथिगण) सँ भेल, जाहिमे कुमारी राखी आ कुमारी रूपा अपन मधुर स्वरसँ सबके मंत्रमुग्ध केलक।

किछु प्रतिभागी फिल्मी धुन पर नृत्य करबाक प्रयास कयलन्हि मुदा ओहि धुनक सामूहिक रूपसँ बहिष्कार कएल गेल जाहि सँ हमरा वास्तबमे बड़ खुशी भेल जे एखनो हमर मिथिलावासी अपन माइट-पाइन सँ जुड़ल छथि।

करू सर्व शिक्षा अभियानक गीत पर नृत्य भेल जाहिमे राजकीय मध्य विद्यालयक एकटा वरिष्ठ शिक्षक मिथिलेश कुमार पाण्डेय द्वारा निर्देशित सर्व शिक्षा अभियानक गीत पर कयल गेल नृत्य सभकेँ आकर्षित केलकनि। एहि बीच **कन्या मध्य विद्यालयक** चटिया सबहक बारी आयल आ ओ मिथिलाक माटि सँ **जुड़ल जट-जटिन** एवं **सलहेश** नृत्य

प्रस्तुत कएलक जे पूरा मेलामे चर्चाक विषय बनि गेल। सभ दर्शक संग मुरलीधर साँवरिया आ स्थानीय विधायक कपिलदेव कामत सेहो अपन कुर्सी छोड़ि ठाढ़ भऽ कऽ बचिया सभ केँ उत्साहबर्द्धन हेतु थोपड़ी बाजाबऽ लगलाह। दर्शक सँ ईनामक अम्बार लागि गेल। एहि नृत्यमे भाग लेबऽ बाली बचिया सभहक नाम अछि चिंकी, कंचन, लवली, बबीता, काजल, सोनी आ एक मात्र बालक जे जट बनल छल हुनक नाम छलनि कुमान सोनू। ऐहि नृत्यक निर्देशक **यदुवीर भारती** के मुरलीधर जी अपना दिस सँ विशेष इनाम देलथिन।

एहि बाल मेला मे राजकीय मध्य विद्यालय, भूपट्टी आ कन्या मध्य विद्यालयक बच्चा बुच्ची सभ सबसँ बेसी इनाम जीत कऽ अपन विद्यालय आ अपन गुरुजी केँ मान आ सम्मान बढ़ेलक।

एहि मेलाक आयोजक प्रखण्ड बी. ई.ओ. नागेश्वर चौधरी आ हुनक सहयोग कर्त्ता मध्य विद्यालय, भूपट्टी (बालक) के प्र.प्र. अध्यापक उपेन्द्र झा छलाह, जे अपन दूरदर्शिता के परिचय दऽ कऽ एहि कार्यक्रम के सफल बनौलन्हि। ●

---

09955425485

# दलित शौर्यगाथा सलहेसक मंचन

**कमलानंद विभूति**

विगत माह (29 मार्च, 2008) रामपट्टी, मधुबनीमे संगीत नाटक अकादेमी, नई दिल्लीक सहयोगसँ सांस्कृतिक संस्था **जमघट** द्वारा लोक नाट्य **राजा सलहेसक** भव्य मंचन भेल। कार्यक्रमक उद्घाटन सांसद एवं पूर्व मन्त्री मँगनीलाल मण्डलकेँ कर कमलसँ सम्पादित भेल।

मँगनीलाल मण्डल अपन उद्घाटन भाषणमे लोकगाथा सलहेसके दलित शौर्य और पराक्रमक लोकगाथा प्रमाणित कयलन्हि। हुनक अनुसारेँ पाश्चात्य संस्कृति सभक आक्रमणसँ अपन सभक ऐतिहासिक विरासत आओर पूर्वज लोकनिक शौर्यगाथा केँ बचायब आवश्यक। आगा ओ स्पष्ट रूपे कहलन्हि जे राजा सलहेस, लोरिक, दीनाभद्री, सामा-चकेबा आदि प्राचीन समयमे सामाजिक परिवर्तनक पुरोधा छला। उक्त शौर्यगाथाक प्रासंगिकता यद्यपि कम नहि भेल अछि तथापि पाश्चात्य संस्कृतिक चकाचौंधमे आजुक नवयुवक एहि तरहक गाथाके पिछड़ापनक सूचक मानैत छथि। सलहेस दलित परिवारमे जन्म लैतहुँ महिसौथाक राजा बनि समाजमे एकटा पैघ आदर्श स्थापित कयलन्हि। राजा सलहेस प्रकृति प्रेमी त' छलाहे संगहि बहुपति आ बहुपत्नी विवाहक विरोधी सेहो छलाह।

सलहेसक मंचनमे रामपट्टीक दुर्गा स्थान प्रांगण दर्शकसँ खचाखच भरल

छल। सलहेसक भूमिकामे सरवन कुमार शास्त्री आ सूत्रधारक भूमिकामे प्रवीण कुमार झा मंच पर खूब जमला। चूहरमलक खलनायकी रामचन्द्र पासवानक अभिनयमे नीक जकाँ उभरल। मोतीरामक भूमिकामे अशोक पासवान, बुद्धेश्वरक भूमिकामे रामकृपाल यादव एवम कुल्हेसरक भूमिकामे मिथिलेश कुमार मण्डल जबर्दस्त अभिनय क्षमताक परिचय देलन्हि। पुरुषकेँ स्त्रीपात्रक भूमिकामे देखबाक अभ्यस्त दर्शक जखन कुमारी प्रीति प्रियाकेँ कुसमाक भूमिका करैत दखलन्हि त' सहजहिँ हुनका अपना आँखि पर विश्वास नहि भेलन्हि। विश्वासोपरान्त प्रीति प्रियाक अभिनय देखि दर्शक गदगद भऽ उठला।

कविशेखर लाल दास (सुगा हिरामन), रामसोगारथ पासवान (मन्त्री), नवल किशोर एवम् पवन ठाकुर (सिपाही), सरस्वती पण्डित (चन्द्रावती), ब्रह्मदेव राय (दुर्गा), तथा खुशबू (स्त्री) प्रभृत रंगकर्मी अपन अभिनयसँ वाहवाही लुटलन्हि। अन्य पात्रक भूमिकामे बबलू श्रीवास्तव, अरविन्द तिवारी एवं सुनील मणि सामान्य रहला।

लोकगाथाक विशेष आकर्षण होइछ ओकर गीत एवं संगीत पक्ष। राजनीति रंजन आ प्रीतिक सधल आंगुर हारमोनियम वादनमे नवरंग भरलक। ढोलक पर दीपक ठाकुरक थाप आ नगाड़ा पर राम अशीष रामक चोटसँ आर सौन्दर्य उत्पन्न भेल। रमेश रामक मंजीराक धुन आओर जटाधर पासवानक बाँसुरीक फूक दर्शकक हृदय बेधवा हेतु पर्याप्त छल। युगल रामक क्लारनेट प्राचीन संगीतमे आधुनिक संगीतक आनन्द प्रदान कयलक। नाट्यकला परिषद, रामपट्टी-महिनाथपुरक अन्तर्गत पुरान राजसी पर्दा राजा सलहेसक वातावरण तैयार करबामे सहायक भेल। सुरेश कुमार सूरजक रूप सज्जा त' ठीक छल मुदा गौतम कुमारक ध्वनि एवं प्रकाश व्यवस्था काम चलाउ छल।

निर्देशक जटाधर पासवान एहि मंचनमे कल्पनाशीलताक परिचय दैत स्क्रिप्ट केँ समकालीन बनेबाक चेष्टा कयलन्हि। जमघट संस्थाक संचालक मदनानन्द झा संगीत नाटक आकादेमी, नई दिल्लीक सहयोगकेँ भूरि-भूरि प्रशंसा कयलन्हि आओर घोषणा कयलन्हि जे **जमघट** मिथिलाक संस्कृतिक प्रचार-प्रसार हेतु कृत-संकल्प अछि। ●

09431857789

## मैथिलीए सँ शुरू होइत अछि हिन्दीक इतिहास : नामवर सिंह

**मैलोरंग डेस्क**

उपुर्यक्त कथन छलनि हिन्दीक वरिष्ठ आलोचक नामवर सिंह जीक। अवसर छल अभिनन्दन समारोहक। ई अभिनंदन समारोह आयोजित कयल गेल छल

आचार्य काकासाहेब कालेलकर स्मारक निधि, नई दिल्लीक द्वारा। ई अभिनंदन मैथिली-भोजपुरी अकादेमी, दिल्ली सरकारक शुभारम्भ आ अहि अकादेमीक प्रथम उपाध्यक्ष रूपमे **अनिल मिश्र**क नियुक्ति लेल आयोजित छल। एहि महत्वपूर्ण आयोजनक समायोजन विमल प्रसाद जीक सान्निध्यमे सम्पन्न भेल।

8 मई, 2008क साँझमे 5.30 बजे डॉ. राजेन्द्र प्रसाद भवनक सभागार, नई दिल्ली02 मे एहि अभिनंदन समारोहके अध्यक्षतानामवर सिंह कयने छलथि संगहि मुख्यातिथि शीला दीक्षित, मुख्यमन्त्री, दिल्ली सरकार रहथि। आयोजनक मुख्यवक्ता पत्रकार आलोक मेहता, विशिष्ट अतिथि रहथि दिल्ली सरकारक उद्योग मन्त्री मंगतराम सिंघन आ पूर्व विदेश राज्यमंत्री दिग्विजय सिंह। रमेश भारद्वाज (महासचिव, आचार्य काकासाहेब स्मारक निधि) अभिनंदन समारोहक संचालन क' रहल छलथि।

वरिष्ठ आलोचक नामवर सिंह अपन भाषणमे कतेको महत्वपूर्ण तथ्य उजागर केलथि। जेना 'हिन्दीक इतिहास मैथिलीए भाषासँ शुरु होइत अछि। मुदा, मैथिली साहित्य त' विद्यापतियो सँ पहिने शुरू भ' चुकल छल।'' अकादेमीक गठन पर नामवर जी कहलनि जे ई अपना आपमे एकटा अनूठा अकादेमी बनल अछि किएक त' ई मैथिली आ भोजपुरी दुनू बहीनक अकादेमी छी। ओ दिल्ली सरकारके इहो सुझाव देलनि जे स्थानीय आई. टी. ओ. क लगपासमे एकटा एहन परिसर बनाओल जाय जाहिमे दिल्ली सरकारक सभ अकादेमी रहै। ईहो उम्मीद केलनि जे ई अकादेमी सांस्कृतिक संगठनक रूपमे कार्यकरत। दिल्लीक मुख्यमंत्री संगहि मैथिली भोजपुरी अकादेमीक अध्यक्ष शीला दीक्षित आ एहि अकादेमीक उपाध्यक्ष अनिल मिश्र दर्शक एवं सर्वसाधारण के कहलनि जे, ''ई अकादेमी अहाँ सभहक आशा'क अनुरूप कार्य करत। दिल्लीके बूझू त' ई एकटा छोटका भारत अछि। चाहे कोनो भाषा देशक कोनो कोणमे बाजल जाइत हो ओ सभ भाषाक इस्तेमाल दिल्लीमे जरूरे होइत अछि।''

अनिल मिश्रक कहब रहनि जे ''ज' अहाँ भारतके चिन्ह'-जान' चाहैत छी त' ओकर माध्यम भारतीय भाषा टा भ' सकैत अछि।''

पत्रकार आलोक मेहताक विचार रहनि जे पूर्वी दिल्लीमे मैथिली भोजपुरीक एकटा बड़का सांस्कृतिक केन्द्र बनाओल जाय। विमल प्रसाद बजलाह जे हिन्दी सँ ककरो विरोध नहि अछि। सभ गोटेके मिलिजूलि क' काज करबाक चाही। आयोजक संस्थाक अध्यक्ष अशोक पाण्डेयकें ई आग्रह रहनि जे अकादेमीमे साहित्यक राजनीतिके नहि आब' देल जाय। ओ हिन्दी भाषाकेँ मजबूत बनयबामे दोसर भाषा आ बोली सभहक योगदान पर अपन विचार रखलनि। एहि प्रकारे ई अभिनंदन सभारोह समपन्न भेल। ●

# बाल पुस्तक लोकार्पण

**महाकाल**

18 मई 2008क मधुबनीक। **मैलोरंग** (मैथिली लोक रंग, मधुबनी आ दिल्ली) द्वारा प्रकाशित **ऋषि वशिष्ठ** द्वारा लीखल मैथिली बाल पोथी **जे हारय से नाक कटाबय** केँ लोकार्पण कयल गेल। ई कार्यक्रम त' मात्र एकटा औपचारिकतावश राखल गेल छल मुदा मधुबनीके साहित्यकार आओर साहित्यप्रेमी लोकनि अप्रत्याशित रूपस' सफल बनौलनि आ औपचारिकताके सम्पूर्ण कार्यक्रमक रूप देलखिन।

कार्यक्रमक अध्यक्षता महेन्द्र मलंगिया केलनि। कार्यक्रमके संचालन करैत प्रकाश वरिष्ठतम वामदेव जी के आग्रह कयलखिन मैथिली लोकरंग द्वारा प्रकाशित पोथी **जे हारय से नाक कहाबय**केँ लोकार्पण करबाक हेतु। जै मे बामदेव जी के सहायता महेन्द्र मलंगिया, तारानंद वियोगी, ऋषि वशिष्ठ, नित्यानंद 'गोकुल' आ काश्यप कमल केलखिन। एकर बाद मैथिलीके साहित्यकार तारानंद वियोगीजी (अहि पोथिक भूमिका वियोगीए जी लिखने छथि।) कहलनि जे "एखन विश्वमे लगभग 6000 भाषा अछि जाहिमे स' प्रत्येक सप्ताह एकटा भाषा विलुप्त भ' रहल अछि। भाषाविज्ञानी सबहक मतकेँ मानी त' अगिला पचास वर्ष में मैथिलीयो विलुप्त भ' जायत। कएक बेर दिलेर लोक एहन-एहन भविष्यवाणी के अपन साहस आ कार्य कौशल स' बदलि दैत छथि। कोनो ठोस आधार के विरोध, व्यवस्थास' संघर्ष वा असंभव केँ पाबैक प्रयास मात्र दुइए प्रकारक लोक करैत अछि पागल वा रणनीतिक समृद्ध लोक। ई प्रकाशनक प्रयास प्रायः पागलपन नहि रणनिति के हिस्सा अछि।" वियोगीजी अपन विक्षुब्धता के प्रकट करैत कहलनि "मिथिला कोका कोला के वा अइ प्रकारक अन्य शीतल पेय हेतु एकटा नीक बाजार अछि मुदा एतुका लोक के अपन भाषाक प्रति कोनो प्रकारक दरेग नइ अछि। आई मैथिलीके अष्टम अनुसूचिमे स्थान भेटबो कयल तमहत्वक समय निकललाक बाद। कोन एहन क्षेत्र अछि जत' मैथिल नइ अछि आ जाहि क्षेत्रक ज्ञान मैथिलके नइ? मैथिली साहित्य के व्यापक परिपेक्ष्य छै। मुदा, आब देखमे आबि रहल अछि लोकके ममता जागि रहल छै आ सबस' पहिने त' साहित्यिक लोककेँ जाग' पड़तैन। अइमे मैथिलीमे बाल साहित्य प्रथम कदम छी अइ स' लोक जागत। ऋषि वशिष्ठ आ प्रकाशक एहि प्रथम डेग के हम स्वागत आ सराहना करैत छी। लेखक के पहिल पुस्तक आ ओकर लोकार्पण अविस्मरणीय होइत छैक शुभकामना अछि।"

एकर बाद वामदेवजी ऋषि के तीन प्रकारबह्मर्षि राजर्षि या देवर्षि कें भेदबला कहलनि। आ पोथिक लेखक ऋषि वशिष्ठस' ई आग्रह केलनि जे ओ ब्रहर्षि बनथि। वामदेव जी पुस्तकक प्रशंसा करैत कहलखिन जे एकर भाषा सरल आ ग्रामीण भाषाक प्रयोग अछि जे बच्चा सभक लेल उत्तम हैत। अपना विषयमे कहैत वामदेवजी कहलनि जे हम हिन्दी आनर्स छी आओर आई धरि हम हिन्दीमे रचना करैत रहलहुँ मुदा आइ स' अपन हिन्दी रचनाके मैथिलीमे अनुवाद करब, हमरा ई प्रेरणा भेटल। मैथिलीके भला अगर कियो क' सकैत अछि त' ओ साहित्यकारे सब क' सकैत छथि।

मंच संचालन करैत प्रकाश कहलनि जे बाल साहित्य आ रंगमंच मैलोरंग प्रकाशनके प्राथमिकता अछि। एकर बाद नित्यानंद 'गोकुल' जी कहलनि जे हम मैलोरंग परिवारके प्रयास स' प्रभावित छी। चुँकि मैथिल मैथिली के दुश्मन अछि मुदा ई पुस्तक एकटा बहुत पैध तमाचा अछि एहन लोकक गाल पर ई उपलब्धि अछि साहित्यक क्षेत्रमे। ओ अई बात पर बेसी जोर देलनि जे मैथिलीमे प्रवाह नहि अछि। एकरा सब मिल क' बढ़ाबी।

एकर बाद पत्रकार प्रभातजी वशिष्ट के विषयमे कहलनि जे ओ हुनका आइ धरि एकटा कलाकारक रूपमे जनैत छलथि मुदा आइ बुझलनि जे ई लेखको छथि। एकर बाद विश्वबंधु जी अपन शुभकामना वशिष्ट जी के देलखिन फेर महेन्द्र मलंगिया जी के अध्यक्षीय भाषण भेल जाहिमे मलंगिया जी कहलखिन जे नेना भुटका द्वारा लिखल भेल बाल साहित्य-मिथिला मिहिरक ई मान्यता छल। अहि मान्यताक खण्डन ज' ओहि समय मे भेल रहितै जे बच्चाक लेल लिखल गेल साहित्य बाल साहित्य अछि, त' आइ बाल साहित्यक भंडार रहितै। गाड़ी गुरकाबैक लेल दुनू चक्काक काज पड़ै छै ओ एक चक्का पर नै चलै छै। हमरा सबके समग्र बन पड़त। यदि साहित्य समाजक दर्पण होइ छै त' समाज दसे गोटेक नहि होइत अछि। मलंगिया जी कहलनि जे गोविन्द झा कहै छथिन अखर खौकू महेन्द्र मलंगिया; की लोक भाषामे लिखनाई साहित्यक समग्रता नहि बढ़बै छै? की लोकके अपन बोलचालक भाषा पढ़बाक अधिकार नै छै? ई प्रश्न ठाढ़ करैत मलंगिया जी कहलनि जे लोकके लोक भाषा चाही। ओ अप्पन चीज तकै छै। शास्त्रीय लेखनेटा साहित्य नहि अछि आ ई लोक धर्म वशिष्ट अपन पोथीमे निभौलनिए। ई पोथी लोकके नीक लागत।

मलंगिया जी के अध्यक्षीय भाषणक बाद **मैथिली लोकरंग** के उपाध्यक्ष काश्यप कमल सबके आभार व्यक्त केलाइ। ●

## नाटककार विजय तेंडुलकर नहि रहलाह

**मुकेश झा**

मराठीये नइ बल्कि भारतीय रंगमंचक प्रसिद्ध नाटककार विजय तेंडुलकर नहि रहलाह। विगत 19 मई, 2008 कऽ पुणे के एकटा अस्पतालमे अस्सी बरखक अवस्थामे हुनक निधन भेलैन्ह। 6 जनवरी, 1928क महाराष्ट्रक कोल्हापुरमे जनमल विजय तेंडुलकर मराठी रंगमंचके नव दिशा देलखिन, ओत्तहि कयकटा मराठी आ हिन्दी फिल्मक पटकथा लिखलैन्ह आर ओ पुरस्कृत भेल। **शांतता कोर्ट चालू आहे, घासीराम कोतवाल, गिद्ध, सखाराम वाइण्डर** आर **बेवी** जेहन प्रख्यात नाटकक लेखक तेन्डुलकर करीब पच्चीस टा नाटक, तीस गोट एकांकी, कयकटा बाल नाटक, कहानी निबन्ध सहित दू गोट उपन्यास लिखलैन्ह । मोहन राकेशक नाटक **आधे अधूरे** आ गिरीश कारनाडक नाटक **तुगलक** के मराठीमे अनुवाद कयलैन्ह।

नेनपन स' रंगकर्ममे लागल तेंडुलकर कय गोट सम्मान स' सम्मानित छथि जाहि मे, संगीत नाटक अकादेमी सम्मान, कालीदास सम्मान आर 1984मे पद्मभूषण स' अलंकृत कायल गेलैथ। सत्तरक दशकमे हिनक किछु नाटकक विरोध भेलैन्ह, जाहिमे **सखाराम बाइन्डर** आ **गिद्द** प्रमुख छल। असलमे वर्जित विषयके उठेनाइ भाषाई बेवाकी के अलावा घून खायल नैतिकता घरेलू समाजिक विवादमे फँसल। गिद्ध नाटकमे यौन हिंसा आर सम्प्रदायिक हिंसा पर तेज चोट के कारण एकर प्रदर्शन नमहर अवधि तक नय भय सकल।

भारतक लगभग सब प्रमुख भाषामे हिनक नाटकक अनुवाद आर मंचन भय चुकल अछि। मैथिली रंगमंचक विडम्बना अछि हिनक नाटकक प्रदर्शनके एखन धरि नइ भय सकल अछि। हिनक स्मृतिमे कयगोट नाट्य उत्सव समर्पित कायल गेल, जाहिमे राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय रंगमंडलक ग्रीष्म कालीन नाट्य उत्सव आ मधुबनीक प्रतीक नाट्य उत्सव प्रमुख छल। रंगमंचमे हिनक योगदान के लेल हरदम मोन पाड़ल जेतैन्ह। ●

## रंगकर्मी प्रमीला झा नाट्यवृत्ति, 2008

**मैलोरंग डेस्क**

दिनांक 03 जून, 2008क' **मैलोरंग** कार्यालय द्वारा **रंगकर्मी प्रमीला झा नाट्यवृत्ति**, 2008क घोषणा कयल गेल। ई नाट्य वृत्ति तीन टा महिला रंगकर्मी के

प्रदान कयल जाइत छनि। स्व. प्रमीला झा मैथिली बाल रंगमंचक प्रथम निर्देशिका छलीह। हुनके स्मृतिमे **प्रमीला झा मेमोरिल ट्रस्ट, घोंघौर** द्वारा एहि नाट्य वृत्तिक स्थापना कयल गेल अछि एहि वृत्तिक संचालन मैथिली रंगकर्मक अग्रणी संस्था **मैलोरंग, दिल्ली** द्वारा होइत अछि।

ई नाट्यवृत्ति ओहन महिला कलाकारके प्रदान कयल जाइत छनि जे लगातार मैथिल रंगकर्ममे अपन योगदान दैत रहल होथि। एहि नाट्य वृत्तिक स्थापना वर्ष 2006 मे भेल। पहिल बेर एहि सम्मानके प्राप्त करै वाली मैथिलीक चार्चित अभिनेत्री **ज्योति वत्स** (दिल्ली) भेलीह। वर्ष 2007 मे **मैलोरंग** द्वारा एकटा आवेदनक प्रारूप प्रकाशित कयल गेल छल। ओहि आधार पर चारि गोट मैथिली महिला रंगकर्मी केँ चयनित कयल गेलनि जाहिमे प्रथम **रंजू झा** (जनकपुर), द्वितीय **स्वाति सिंह** (पटना), तृतीय **प्रियंका कुमारी** (पटना) आ स्वांत्वनाक लेल **बंदना डे** (सहरसा) छलीह। रंगकर्मी प्रमीला झा नाट्यवृत्ति एक वर्ष तक प्रदान कयल जाइत अछि। जाहि मे प्रथम के 500/-, द्वितीय के 300/- आ तृतीय के 200/- प्रति मासक संग प्रमाण पत्र आ स्मृति चिन्ह देल जाइत छनि।

एहि नाट्य वृत्तिके ग्रहण केनिहारि सभ रंगकर्मी लगातार मैथिली रंगमंचक लेल प्रतिबद्ध छथि।

वर्ष 2008क लेल समूचा मिथिलांचल (भारत+नेपाल) मे चालीस गणमान्य रंगकर्मी/संस्कृतिककर्मी केँ नामक अनुशंसाक लेल पत्र पठाओल गेल छलनि। हुनके सभहक अनुशंसाक आधार पर '08क लेल चयन कयल गेल अछि। एहि नाट्य वृत्तिक लेल प्रथम **मधुमिता श्रीवास्तव** (मधुबनी), द्वितीय **वंदना झा** (कोलकाता) आ तृतीय **नेहा वर्मा** (दिल्ली) चयनित भेलीह छथि। हिनका तीनू गोटेकेँ *मैलोरंग* परिवार दिस सँ बधाइ। वर्ष 2008क' नाट्यवृत्ति दिल्ली मे **मैलोरंग** द्वारा आयोजित **मैथिली लोक रंग महोत्सव, 2008**क उद्घाटन समारोहमे प्रदान कयल जेतनि। ●

## मैथिली काव्य साँझक आयोजन

**मैलोरंग डेस्क**

27 जून, 2008 कय साहित्य अकादेमी दिल्ली, के सभागारमे नवगठित मैथिली परामर्श समिति (साहित्य अकादेमी) द्वारा मैथिली काव्य साँझक आयोजन कयल गेल। एहिमे कार्यक्रमक संचालन अमरनाथ झा केलैन्ह आ अध्यक्षताक भार विद्यानाथ झा 'विदित' के देल गेलैन्ह। मैथिली कविताक आरंभ आठम शताब्दी सऽ होयत अछि कहब छलैन्ह संचालक कवि अमरनाथ झाके।

एहि काव्य संध्यामे प्रतिभागी कवि छलाह, मंत्रेश्वर झा, विद्यानाथ झा विदित कामिनी कमायनी, विलट पासवान विहंगम, मेजर सुलेमान, धीरेन्द्र नाथ मिश्र, देव शंकर नवीन, अविनाश, पंकज पराशर, रमण कुमार सिंह, संजीव तमन्ना, अमरनाथ झा, ताराकान्त झा, वीणा ठाकुर, रवीन्द्र कुमार चौधरी, डॉ. अरुण चौधरी आर सुनीता झा हिनका सवहक काव्य रसस' समूचा सभागार सरावोर भेल। दिल्ली सन पेध शहरमे एहि तरहक आयोजनस मैथिली भाषाके विकास एवं समृद्ध कायल जा सकैत अछि। संजीव तमन्ना के कविता पोस्टकार्ड, रमण कुमार सिंहक कविता ओल्ड होममे वृद्ध, अविनाश जी संग देवशंकर नवीनक कविताक बड़ प्रसंशा कायल गेल। ●

## मैथिली उत्सव

**मैलोरंग डेस्क**

दिनांक : 29 जून, 2008 क **स्मृति चेरिटेबल ट्रस्ट, दिल्ली** द्वारा **मैथिली उत्सवक** आयोजन कयल गेल छल। ई आयोजन मुख्य रूपसँ मैथिली फिल्म **सिंदूरदान**क प्रीमियर शो छल।

राष्ट्रीय बाल भवनमे आयोजित एहि आयोजनक मुख्य अतिथि रहथि श्रीमती शीला दीक्षित (मुख्यमंत्री सह अध्यक्ष मैथिली-भोजपुरी अकादेमी, दिल्ली) आ अति विशिष्ट अतिथि छलथि प्रो. अनिल मिश्र (उपाध्यक्ष, मैथिली-भोजपुरी अकादमी, दिल्ली)।

श्री सुन्दरम मणि, श्रवण साज, राखी आ कल्पना मिश्र द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम सेहो प्रस्तुत कयल गेल। एहि सम्पूर्ण आयोजनक मुख्य सहयोगी संस्था मिथिला विहार डॉट कॉम (mithilavihar.com) छल। ●



*चिट्ठीक अंश*

# तीन भाषाक संगम

**विभा रानी**

प्रिय प्रकाश,

नीक **लागल लाइफ इज नॉट अ ड्रीम** के समीक्षा देखि। तीन भाषाक संगम देखि-अंग्रेजीक नाटक; हिन्दीमे रिपोर्टिंग आ मैथिलीमे प्रकाशन। बूझल होयत जे ई नाटक पछिला वर्ष सितम्बर, 2007 मे फिनलैंडमे ओपन भेल छल। तहन संवाद स्थापित करबाक लेल एकरा अंग्रेजीमे तैयार कएल गेल। हिन्दी बूझ' बला कें? मात्र-दू-तीन सौ भारतीयबाकी फिनिशि, स्वीडिश जनसंख्या। फिनलेंड लेल ई नाटकक निर्देशन हर्ष प्रसाद केलन्हि।

फिनलैंडस' घुरलाक बाद मुम्बई मे एकर तीन शो अंग्रेजीमे भेल। गैर-सााहित्यिक आ थिएटर प्रेमी द्वारा ई खूब सराहल गेल। मुक्ताकाश रंगमंच आ तकरा बाद प्रोसीनियम रूपमे मंचित ई नाटक स्त्री प्रधान रहितहु समान रूपस' स्त्री-पुरुष दर्शकगणके नीक लागलन्हि।

भाषाक विस्तार, आपकताक अलग-अलग कारण, स्थिति, परिस्थिति छै, जे समय-देश-कालक मोताबिक बदलइत रहैत छै। भाषाक विस्तारकक ई गप्प भेल आ आग्रह सेहो, जे ई नाटक अपन अंग्रेजीए टाइटल सहित हिन्दीमे तैयार कएल गेल। 26 मईक' हिन्दी रूपक प्रथम मंचन मुम्बई पवई इलाकाक 'पवई मंच' द्वारा भेल। आ तकरोस' नीक रहल नाटक केर मंचनक बाद एकरा पर भेल चर्चा सत्र ई चर्चा जीवंत, नाटको स' बेसी आकर्षक, कियैक त' अहिमे लोकक अपन-अनुभव, अपन भाव, अपन विचारक अभिव्यक्ति छल-नाटकमे हुनक जीवनक प्रतिध्वनि छल, चर्चा मे हुनकर अपन ध्वनि। हमरा मतमे त' सब नाटक केर बाद एक गोट एहन चर्चा-सत्र अबस्स हेबाक चाही। अहि सँ नाटक आ नाटककार केँ एक गोट नव क्षितिज भेटै छै, एक गोट त्वरित प्रतिसाद सेहो भेटै छै...।

हिन्दीमे ई नाटक छत्तीसगढ़ सरकार आ दक्षिण-मध्य सांस्कृतिक क्षेत्रक संयुक्त तत्वावधानमे रायपुरमे आयोजित पाँच दिवसीय नाट्य महोत्सवके अन्तिम दिन 29 अप्रैल, 08 क' मंचित भेल। सांस्कृतिक विभाग द्वारा नव-निर्मित मुक्ताकाशी रंगमंचक उद्घाटन इएह रंग-महोत्सव स' भेल। लगभग सात-आठ सौ बैसबाक क्षमता बला ई रंगमंच-29 अप्रैलक' ठकचल छल।

**लाइफ इज नॉट अ ड्रीम** के मंचनक बाद स्टेजक पाछाँ पुनः चर्चा, विचार-विमर्श भेलएक घण्टा स' ऊपर ...नव उम्रक युवक-युवती स' ल' क' प्रेस आ थिएटर क' चुकल सिद्घहस्त लोकसभ। सभक एक विशिष्ट उद्गार "एकपात्रीय नाटक सेहो एतेक सशक्तता स' मंचित कएल जा सकै छै...एक घण्टा धरि एतेक पैघ स्टेज, एतेक पैघ दर्शक समुदायके संभारिक' राखनाइ बहुत पैघ चुनौतिक काज छै...।

चुनौती छै...ई चुनौती हमरा-डेग-डेग पर स्वीकार्य अछिईहेटा चुनौती हमरा लेखक बनाओल, ईहे-चुनौती हमरा हिन्दी आ मैथिली आ आब कखनो-कखनो अंग्रेजीयो मे लिख' लेल प्रेरित कएल, ईहे-चुनौती हमरा स' नाटक लिखाओल आ बीस वर्षक दीर्घ अन्तरालक बाद फेर हमरा अभिनयके क्षेत्रमे आनलक। ई चुनौती ताकति अछि अपन जिजीविया लेल, सदिखन भेटैते रहओ, ई कामना। ●



मै
लो
रं
ग

अंक 2
मई-अगस्त
आ
अंक 3
सितम्बर-दिसम्बर
2008



# मैथिली लोक रंग (मैलोरंग)क घोषणा पत्र

जेना कि अपने सभकेँ पहिनेसँ जनतब अछि जे राष्ट्रक राजधानी दिल्लीमे मिथिला संस्कृतिक प्रतिनिधित्व करैवला अहाँ सभहक संगठन **मैलोरंग,** बिहारमे होइत **बाढ़िक ताण्डव**के देखैत अपन पूर्व निर्धारित **मैथिली लोक रंग महोत्सव, 2008** (12-14 सितम्बर, 2008) के तत्काल स्थगित क' देलक। एहि राष्ट्रीय आपदामे डूबल बिहारक आधासँ बेसी मिथिलावासीक संवेदनाक लेल **मैलोरंग** अपन **मानसिक** आ **सामाजिक दायित्वक** संग अपन महोत्सव **मिथिलाक कोसी क्षेत्रमे घुरैत मुस्कान**क संग आयोजित करत। जकर सूचना अतिशीघ्र अहाँ सभकेँ देबाक प्रयास हम करब। निर्धारित आयोजन स्थगनसँ उत्पन्न व्यवधानक लेल **मैलोरंग** क्षमा प्रार्थी अछि।

**मैलोरंग**क अहाँ सन सभ **शुभचिंतक / सहयोगी / दर्शक / प्रेक्षक** सँ सादर निवेदन जे बिहारक एहि विषम परिस्थितिमे **मैलोरंग** संग जुड़ि हताहत परिवार के **मानसिक / आर्थिक/सामाजिक** सहयोग दी।

प्रभावित परिवारक क्षतिक आँकलन केनाई त' असंभव अछि आ ओकर भरपाई त' आशातीते मुदा एहन विषम परिस्थितिमे सम्पूर्ण देशवासी हुनका सभहक संग राहत-बचाबमे अपन जी-जान सँ लागल अछि। सम्पूर्ण दिल्ली सँ राहत सामग्री एकत्र क' ओकरा प्रभावित क्षेत्रमे पठयबा लेल उत्कृष्ट कार्य केनिहार **अंतरराष्ट्रीय मैथिली परिषद** तथा **यूथ ऑफ मिथिला**क संग लगातार **मैलोरंग**क सभ सदस्यगण लागल छथि।

ओना ई त' निश्चिते जे बाढ़ि फेर औतै आ ई एयबे टा करतै। तेँ हम मिथिलावासी एक-दोसरा पर आरोप प्रत्यारोप के छोड़ि सबसँ पहिने स्वयं अपना आपकेँ किएक

ने तैयर क' ली जे एहन विषम परिस्थितिमे कम-सँ-कम अपन आ अपन परिवारक संग जानमालक रक्षा त' क' सकी। एहि कारण हमरा समाजमे सभसँ बेसी जरूरी अछि बाढ़िमे जान बचेबाक जागृति भेनाय। एहि कारण **मैलोरंग** अपन योजना बनेलक अछि जे विशेषज्ञसँ सलाह ल' ओहन पुस्तिका प्रकाशित कयल जाय जाहिमे **बाढ़िमे बचबाक समाधान आ योजना** पर संकलित होइ। आ एहि पुस्तिकाक निशुल्क वितरण सम्पूर्ण मिथिलांचलमे कयल जाय। संगहि **मैलोरंग**क कलाकार द्वारा एकटा **कोसी** नामसँ गीतक ओडियो कैसट निकालल जायत जाहिमे कोसी **अंचलक मार्मिक गीतक संकलन** होयत।

बाढ़ि प्रभावित हमर सभहक सर-समाजक राहत **मैलोरंग** एही प्रकारे कर' चाहैत अछि। एहि लेल अहाँ सभहक मानसिक आ आर्थिक सहयोगक आपेक्षी अछि **मैलोरंग परिवार**।

विगत पाँच सालसँ **मैलोरंग** अहाँ सभहक संग मिथिलाक सभ दिल्लीवासीकेँ मैथिल संस्कृतिक आयोजनक भरपूर स्वाद दैत रहल अछि। पिछला तीन सालसँ **मैथिली लोक रंग महोत्सव** होइत रहल अछि जाहिमे उत्कृष्ट मैथिली नाटक आ गीत संगीतक आयोजन होइत छैक। **मैलोरंग**क आयोजनकेँ मात्र दिल्ली वासियेटा नहि बल्कि सम्पूर्ण मैथिली भाषी सराहलाह अछि। जाहि संजीवनीक कारण **मैलोरंग** आर बेसी शक्तिसँ काज करबामे जुटि जाइत अछि।

अहाँ सभसँ सादर आग्रह जे एहि योजनाक पूर्ति लेल **मैलोरंग**क सहयोग करी।

**मैलोरंग**क सहयोगक लेल अपने निम्नलिखित पता पर संपर्क क' सकैत छीः

मैथिली लोक रंग (मैलोरंग), एम.बी.-01 डी, मधुबन रोड, शकरपुर एक्स्टेंशन, दिल्ली-110092, फो. : 22446622
mailorang@gmail.com,
09811774106, 9213858720,
9911569965, 09835096116. ●

## मैथिली लोक रंग
**(मैलोरंग)**

(लोक कला, साहित्य एवं सांस्कृतिक संवर्धनक लेल प्रतिबद्ध)

**मैलोरंगक प्रमुख गतिविधि**

1. मैथिली लोककला आओर संस्कृतिक ग्लोबल चौमासा **मैलोरंगक** प्रकाशन
2. **मैथिली लोक रंग (मैलोरंग) प्रकाशन** सँ विशेष पोथीक प्रकाशन
3. प्रति वर्ष एकटा राष्ट्रीय स्तरक **सेमिनारक** आयोजन
4. प्रतिवर्ष **मैथिली लोक रंग महोत्सवक** आयोजन
5. दिल्ली आ मिथिलाक संग देशक विभिन्न भागमे **नाटकक** प्रस्तुति
6. प्रतिमास **चटसारक** आयोजन
7. मैथिली लोक कला (रंगमंच, चित्रकला, संगीत आदि) क **प्रलेखन**

•••

सादर आग्रह जे **मैलोरंग** परिवारक सदस्यता ग्रहणक' उपर्युक्त कार्यमे सहभागी बनी

| | | |
|---|---|---|
| 1. | **संरक्षक** सदस्य | = 25,000/- |
| 2. | **आजीवन** सदस्य | = 10,000/- |
| 3. | **एक वर्षक** सदस्यता | = 500/- |
| 4. | **तीन वर्षक** सदस्यता (**रंगकर्मी + कलाकार**) | = 00,500/- |

•••

सभ सदस्य केँ **मैलोरंगक** सभ तरहक प्रकाशन (पत्रिका, ब्रोश्यर, पुस्तक आदि) मुफ्त पठाओल जयतनि, सभ आयोजनक **आमंत्रण कार्ड** समय पर उपलब्ध कराओल जेतनि, संगहि संस्थाक अलावे आरो कोनो तरहक मैथिली गतिविधिक जानकारी फोन द्वारा देल जयतनि।

संरक्षक सदस्यक लेल आधा पृष्ठक निजी विज्ञापन सेहो सुरक्षित रहतनि।

राशि कृपया **मैथिली लोक रंग** के नाम **बैंक ड्राफ्ट/चैक** सँ कार्यालय केँ पता पर पठयबा सँ पहिने एक बेर फोन सँ सम्पर्क जरूर करी।

•